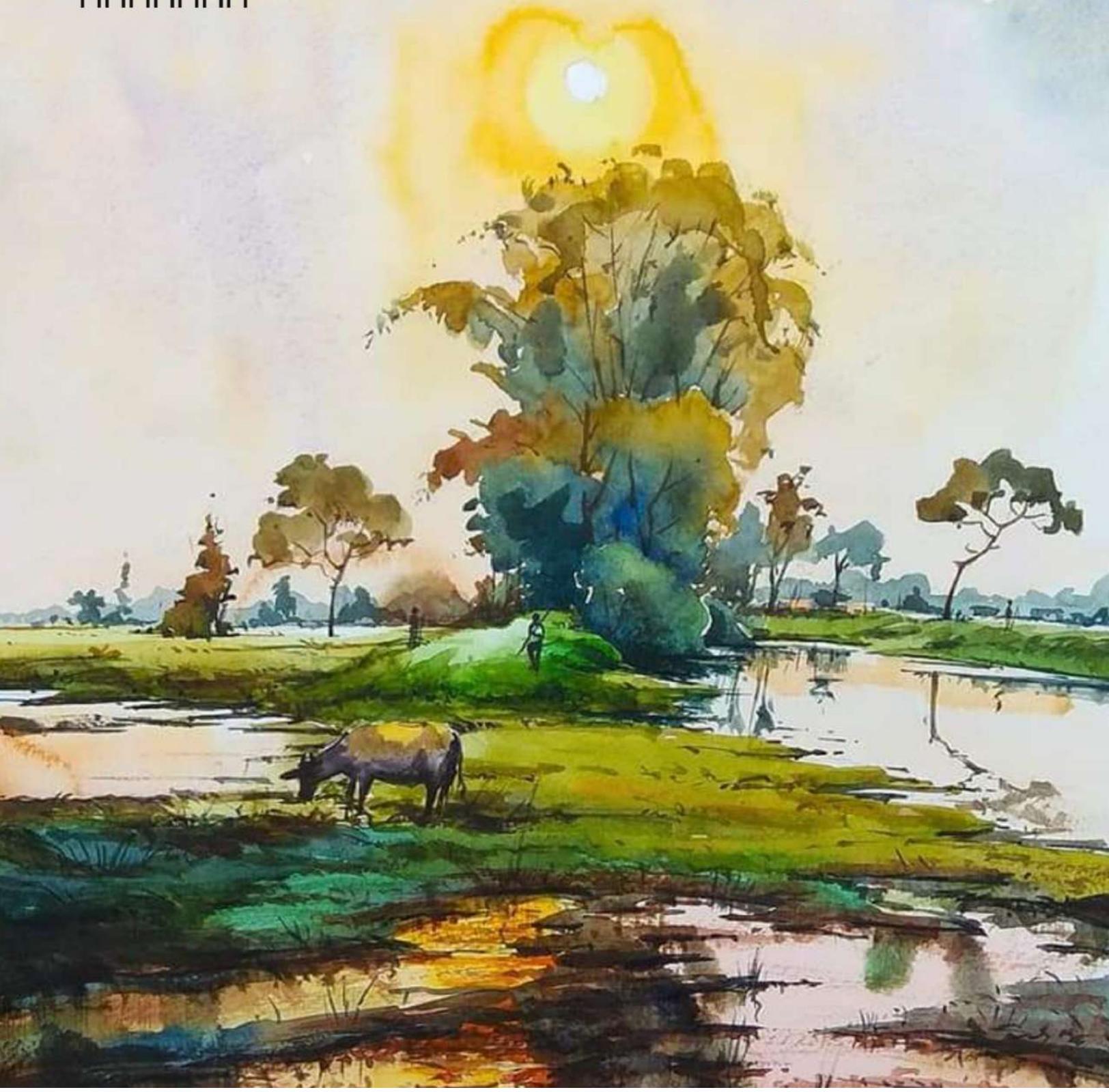


ISSN : 2582-1342



भोजपुरी साहित्य सरिता

मई 2021, वर्ष - 5, अंक - 2



विशेष आभार



अशोक श्रीवास्तव

(संरक्षक - भोजपुरी साहित्य सरिता)

डायरेक्टर	—	अशोक श्रीवास्तव एसोसिएट्स प्रा०लि०
अध्यक्ष	—	पूर्वांचल भोजपुरी महासभा
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	—	अखिल भारतीय कायस्थ महासभा
मुख्य सम्पादक	—	अशोक प्रहरी
प्रेरक	—	पूर्वांचल-बिहार राजनीतिक मंच
संस्थापक	—	आर०डी०मेमोरियल पब्लिक स्कूल
संरक्षक	—	सुभाष युवा मोर्चा
अध्यक्ष	—	विश्व भोजपुरी सम्मलेन (गा०इकाई)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	—	सुभाषवादी भारतीय समाजवादी पार्टी
संरक्षक	—	लेबर लॉ एडवाइजर एसोसिएसन उ० प्र०
संस्थापक	—	पूर्वांचल सेना
कारपोरेट कार्यालय	—	552-ए, मेन रोड धूकना, पार्वती धर्मशाला के पास, मेरठ रोड, गाजियाबाद मो०-9811102743

: आजीवन सदस्य :

- बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद)
जलज कुमार अनुपम (बेतिया)
अंकुश्री (राँची)
सुजीत तिवारी (गाजियाबाद)
कृष्ण कुमार (आरा)
डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सरिता सिंह जौनपुर
कनक किशोर (राँची)



विशेष आभार

अनामिका वर्मा

(संरक्षक, भोजपुरी साहित्य सरिता)

लोक गायिका
शंकलनकर्ता, कोहबर काव्य
शंचालिका, शुभ शक्ती

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा, अकोला

उपाध्यक्ष महाराष्ट्र प्रदेश, भाजपा (उत्तर भारतीय मोर्चा)

अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)

अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ सम्पादक

जे. पी. द्विवेदी (गाजियाबाद)

कार्यकारी सम्पादक

डॉ. सुमन सिंह (वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सुनील सिन्हा (गाजियाबाद),

डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)



सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद), कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी - एडिटिंग - कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छाया चित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: प्रतिनिधि :

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर), डॉ. हरेश्वर राय (सतना), अशोक कुमार तिवारी (बलिया), राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार), गुलरेज़ शहजाद (दक्षिण बिहार) डी के सिंह (पटना)

♦ कृत्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002

PH: 9999614657

Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com

Web: <http://www.bhojpurisahityasarita.com>

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन आउर फोरमन में करल जाई।

● संपादकीय

केशव मोहन पाण्डेय/5

धरोहर

अश्विनी कुमास 'आँसू' /6

● आलेख/ शोध-लेख/निबंध

भोजपुरी के आपन 'लिंग विधान'— डॉ. जयकान्त सिंह 'जय' / 11-12

पाँच कवर भीतर तब देवता पीतर— मार्कण्डेय शारदेय / 18-20

लंदन में जब पुआ पाकल— मनोज भावुक / 34-35

गोरखनाथ : धीरे धरिबा पाँव— प्रो. सदानंद शाही / 36-37

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' के कविता में राष्ट्रीयता— डॉ. सुनील कुमार पाठक / 42-44

● कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

कीमती भेंट— मोनिका राज / 14

बोल बचवा कुछों बोल— माला वर्मा / 14

सगुन— अशोक मिश्र / 15

कइसे बाँची माटी के महक— आदित्य नारायण / 15

टूलकिट — तरकेश्वर राय 'तारक' / 16

अतने कहे के बा— डॉ. बलभद्र / 21

नइकी माई— अंकुश्री / 28

लोक परलोक के संघतिया— डॉ. रजनी रंजन / 30-31

गाँव शहर हो गइल— जियाउल हक / 32

पइसा आ नीमक एक समान हऽ— डी. के. सिंह / 33

कठकरेज— केशव मोहन पाण्डेय / 38-41

● कविता/गीत/गजल

बेपानी पानी— चंद्रेश्वर / 10

लोरी— जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 13

● कविता/गीत/गजल

सत्ता के भूख— कुमार मंगलम रणवीर / 13

कइसन रोग कोरोना बा— आकाश महेशपुरी / 17

गीत— आनंद पाण्डेय / 17

गजल— सुभाष पाण्डेय / 21

नयका चइता— सुरेश कांतक / 22

गजल — मदन मोहन पाण्डेय / 22

दया करा माई— विकास मिश्र / 23

आवेला याद— दीपक तिवारी / 23

चइता — बिम्मी कुँवर / 27

गजल— गीता चौबे 'गूँज' / 27

जबसे आइल परधानी— राजू साहनी / 28

गजल— राजेश जैसवारा / 37

परधानी— योगेन्द्र शर्मा 'योगी' / 44

गजल— शिव कुमार पराग / 46

गीत— सत्य प्रकाश शुक्ल / 46

● पुस्तक समीक्षा/पुस्तक चर्चा

छिटकल 'सोन किरीनियाँ'— डॉ. ब्रज भूषण मिश्र / 7-8

चंद्रेश्वर के 'हमार गाँव' हमरो गाँव— कनक किशोर / 9-10

'मनवा के बात' के बहाने नारी विमर्श— जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 29-30

● अनूदित साहित्य/धारावाहिक

चाणक्य नीति— दिनेश पाण्डेय / 24

चोटी से आगे ले— अशोक लव / 25-26

● असि गंग के तीर

आपदा में अवसर— डॉ. सुमन सिंह / 45

● एह अंक के चित्रकार : अमित कुमार उपाध्याय / 27

खूब पढ़ीं आ तनी सा लिखीं

खाली भोजपुरिए ना, गुनी आ विद्वतजन बतावे लें कि कवनो साहित्य के सर्जना करे बदे लिखला से हजारगुना पढ़ल जरूरी ह। पढ़ला पर भाव के गिलास भरे लागेला। जब लबालब हो जाई त अपनहीं बहे लागी।

भोजपुरी में अइसन नइखे कि पहिले कम लिखात रहे। पहिलहूँ हर विधा आ विधि पर ढेर लिखाइल बा। आजुओ श्रेष्ठजन लिखते बा। ऊ लिखइलका आजुओ थाती बा आ काल्हो रही। समय के सीना पर सवार हमनी के आजु 21वीं सदी में आ गइल बानी जा। एह सदी के आपन महातम बा आ आपन कुफुत बाकिर आजुओ साहित्य लिखे के कवनो शॉर्ट कट नइखे। सोशल साइट्स पर कुछुओ लिख के ओह पर जुड़ल साथी, संघतिया भा केहू अपरिचितो से 'लाइक' भा 'अति सुन्दर' के टिप्पणी पावल अलग बात बा आ समृद्ध साहित्य के रचल अलग बात।

मानऽ तानी कि सबके भाषा, शब्द-भंडार, शिल्प-विधान, रस, छंद, अलंकार आदि के डेहरी भरल ना हो सकले बाकिर जब रउआ लगे साधारणो ढंग से बात करे के सामान्य व्याकरण के ज्ञान नइखे त 'वर्चुअल स्पेस' पर काहें लिपा-पोतीं करत बानी। हम अपना आ अपना के बाद वाली पीढ़ी के देखत बानी कि साहित्य त खूबे रचात बा, बाकिर सबसे पहिले त ई कि लोग अपने लिखलका दोबारा पढ़बो ना करेला आ सीधे सोशल मीडिया में उड़ेल देला, चाहे कवनो-ना-कवनो पत्र-पत्रिकन में डाल देला।

सरकार, दोसरा से पढ़वावे में त राउर अहंकार राउर गोड़ बान्ह लेत होई। ढेर ना त कम-से-कम आपन लिखलका एक बेर पढ़ के त भेजीं। रउआ अपनहीं बुझा जाई कि गद्य में एक साथे कतहूँ दू गो पूर्ण-विराम लागेला कि ना, कि कथा के आगे बढ़ावे बदे कहवाँ अनासो डॉट दिआइल बा, ऊहो अनगिनत। कि रचना में 'ईमोजी' के कवन गरज पड़ गइल। कि अपना नाँव के बाद रउआ पूर्ण-विराम काहें देत बानी। कि कहवाँ इकहरा आ कहवाँ दोहरा उद्धरण के चिन्हा लागी। ...ई छोट-छोट बात बा, बाकिर कुछ त अइसनो रचनाकार बाड़ें कि ऊ अपना हिंदी रचनवा के भोजपुरिया के भेज देलें। बिना पढ़लहीं। चेखूर से भरल साहित्य के खेत में उत्तम-से-उत्तम कोटि के बावग होई तबो बखार ना भर पाई।

एह बेरा विशेष क के अपना देश में कोरोना से हाहाकार मचल बा। हर घर-परिवार आहत आ प्रभावित बा। एहू में अइसनका मनई ढेर मिलत बाड़ें जे मानवता के काढ़ा बना के पी गइल बाड़े आ एह आपदा के एगो अवसर जस भुनावत बाड़े। साहित्य के नवका सृजनकर्ता लोग से निहोरा बा कि रउओ एह के एगो अवसर समझ के ढेर-से-ढेर आ बढ़िया-से-बढ़िया साहित्य पढ़ीं आ कम-से-कम, निमन-से-निमन गढ़ीं, विश्वास मानीं, कोइला में हीरा जस राउर साहित्य चमकी आ कीमती बनीं।

बाउर लागे त माफ क देब, ना त गाँठ बान्ह लेब सभे। सोशलो साइट्स पर ढेर कुल बढ़िया पढ़े लायक साहित्य बा। लॉकडाउन में किताब नइखीं किन सकत त नेट त चालू कइए सकत बानी। एही के साथे प्रणाम आ परमपिता से प्रार्थना कि रउआ सपरिवार निरोग रहीं।

जय भोजपुरी!



केशव मोहन पाण्डेय

साहित्य संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

खाय आदमी-आदमी अचरज के ई बात

खाय आदमी-आदमी अचरज के ई बात ।
माँस खवक्कड़ काग जे ऊहो काग ना खात ॥

ओछन का मुँह जे लगे, अपने जात नसाय ।
सनकी पुरवा संग लगे, बदरा गइल बिलाय ॥

कजरा बहि बदरा भइल, तैरत फिरे अकास ।
पिय के पता ना पाइ के, बरसे होइ निरास ॥

गइल जवानी ना मिले, घीव-मलीदा खाय ।
उतरल पानी ना चढ़े, लाख-करोड़ चुकाय ॥

पिय के आवन जानि के, मिटत हिया के पीर ।
दरस, परस लागे दवा, छूटे रोग गंभीर ॥

सुगना सगुन उचारि के, कागा भेज सनेस ।
सावन बरसे आग री, पिया बसे परदेस ॥

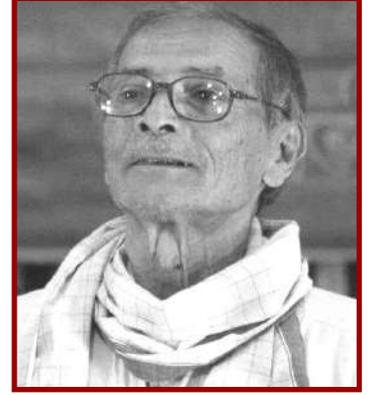
हरन-मरन में जग कहे, मन में राखऽ धीर ।
बाँझ भला का जानिहें, परसोता के पीर ॥

ताना मारे गोतिनी, कसे परोसिन बोल ।
एके गो तोहरे बिना, पिय हम फूटल ढोल ॥

अँसुअन शीत न होइहें, बिरहानल के ताप ।
मिलन-मरन दू राह से, छूटत ई संताप ॥

जीयत जान न छोड़िहें, बेरहमी यमराज ।
तबहूँ मनवाँ चेत ना, हरि गुन करे अकाज ॥

□□



कशिवनी कुमार 'क़ाँशु'

जन्म : 1 जनवरी 1944

मृत्यु : 29 मई 2020

जन्म-स्थान

सुगौली, बिहार



छिटकल 'सोन किरिनिया'

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

'सोन किरिनिया' नेपाल से हमरा लग पहुँचल बा, जेकर बढ़ावन हमरा लिखे के बा। ई कवि सुरेन्द्र प्रसाद गिरि के कृति ह। गिरि जी के 'सोन किरिनिया' सुनहरे भर नइखे, एकर रंग विविध वर्णी बा। नेपाल में आजकल भोजपुरी के गाछ खूब सींचल जा रहल बा। गिरियो जी भोजपुरी के गाछ सींचे वालन में शामिल बाड़न। पेशा से शिक्षक रहल गिरि जी के शिक्षा-दीक्षा स्नातक आ आयुर्वेद रत्न तक के बा। गिरि जी के हिन्दी आ भोजपुरी के रचना नेपाल आ भारत के पत्र पत्रिकन में लगातार छपत रहल बा आ सम्मान पुरस्कार मिलत रहल बा। 'सोन किरिनिया' गिरि जी के भोजपुरी के पहिला काव्य संग्रह ह, जवना में विविध भाव आ काव्य विधा के रचना संग्रहित बा, जवना के आमुख पाठकन के सोझा हम राखे जा रहल बानी।

गिरि जी आस्थावान बेकती बानी आ ई आस्था देवि देवता लोग के प्रति बा। सनातनी लोग माता सरस्वती के विद्या के अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूजेला। एह से संग्रह के पहिलकी कविता सरस्वती बंदना बा आ कवि माता से अपना आ सबका राक्षसी प्रवृत्ति के मारे के गोहार करत बाड़न –

देश ला मिटे के जुक्ति दीहीं
गुरु ईश पूजे के भक्ति दिहीं
मन के रावण मार सकी सब
ज्ञान प्रकाश के शक्ति दीहीं

नेपाल के भोजपुरिया इलाका आ भारत के भोजपुरिया इलाका के ना खाली भाषा में समानता बा, बलुक, प्रकृति, प्रवृत्ति, संस्कार आ संस्कृति ओ में समानता बा। खेती-किसानी, बनिय-बेवपार, रहन-सहन, तीज-तेवहार, पहिरन-ओढ़न के सडे भाव-विचार, आस्था के आयाम आ लोक विश्वास एके बाटे।

भोजपुरिया का आपन गाँव-गाँवई बड़ा नीक लागेला, ओकर मन खेती किसानी में रमेला। गिरि जी के अपना गाँव से सनेस के पाँति देखीं –

भोरवा में झाँकेली सोने की करिनिया
कि देशवा बटोरेला अँजोर
अनवा के टलिया बटोरे खरिहनवा
कि बान्हि के सनेहिया के डोर

प्रचलन बा कि बिअह के कनिया, नइहरे से अरिजन-परिजन के छोड़ के ससुरे में एकदमे नया लोग के बीचे आवे के विवश होली। सोभाविक बा कि नइहर के इआद आई। कवि ओइसन नवकी कनियन के दुख के भाव में बह जात बाड़ें, जइसे कि उहे बिअह के आइल होखस –

झर-झर झरत होइहें अमवा के पतिया
बिलखत होइहें रामा बालापन के सखिया
लोरवा से भिंजल होई भइया के चदरिया

मइया के धधकत कोख हो

लाली रे चुनरिया में अइली दुलहिनिया

निरखेला गँऊवा के लोग हो

लोग का का मतलब कि ओह कनिया के केकरा-केकरा से बिछोह भइल बा, ऊ सब त कनिया देखे में लागल बा।

आजकाल माइक्रो परिवार के प्रचलन बढ़त जा रहल बा। हम, हमार मेहरारू आ बाल बच्चा, बस। बापो-मतारी खातिर जगह नइखे। माता-पिता के प्रति जिम्मेवारी आ चिंता नवकी पीढ़ी में घटल बाटे। ई बात शहर, कस्बा में बेसी बढ़ रहल बा। गिरि जी बाप-मतारी के प्रति कृतज्ञ होखे पर जोर देत बाड़न –

माई के अँखिया के तारा राउर अरमान बाबूजी

हमार रउए से बा दुनिया में पहचान बाबूजी

नेपाल के भोजपुरिया के गौरव बढ़ावेवाला तत्व लगभग उहे बा जे हिंदुस्तान के लोग के। आपन देश, आपन गाँव, आपन समाज, आपन क्षेत्र पर ओकरा गुमान बा। नेपाल के भोजपुरिया का आपन मधेश बड़ा भावेला। कवि सुरेन्द्र गिरि ओही लोग में से एक बाड़न, जे मधेश आ देश के गौरव गान से नइखन चूकत –

जहाँ सुन्दर भेष भाषा संस्कृति रहन सब
बोले मधुर वाणी सगरो जहान हो मधेशिया
पुरुब में मेची नदी पछिम महाकाली बहे
बीचवा सीया जी के जन्म स्थान हो मधेशिया

× × ×

दुनिया में लागे नाहीं अइसन गजब मेलवा हो

गढ़ी माई के जहाँ गुणगान हो मधेशिया

इहाँ रघुवीर नारायणके बटोहिया में जइसे भारत देश के विशेषता उजागर भइल बा, ओइसहीं मधेश के भोजपुरी क्षेत्र के विशेषता के उजागर एह गीत के जरिये गिरि जी करत बानी।

भोजपुरिया का प्रकृति से प्रेम होला, काहे से कि ओकर खेती किसानी प्रकृति के अनुकूलता-प्रतिकूलता पर निर्भर करेला। प्रकृति से जुड़ाव ओकरा के सुख पहुँचावेला। भोजपुरी काव्य साहित्य में प्रकृति चित्रण खूबे लिखाइल बा। गिरि जी भला एह से कइसे बाँच सकत रहलन ह। बसंत, पावस, शरद वगैरह उनकरो लेखनी के खोंघ से नीके उतरल बा। कुछ नमूना के पाँति देखीं –

बसंत –

फगुनी बेयरिया जब चँवरा डोलावे
झुलली झुलनिया मसुरी के फरवा में
तिसिया हिलावे लगली नकिया के ठोपवा
झुमका झुमक उठेला सेमरा के फुलवा के

चइता—

सहकल बेयरिया से देहिया जरेला
काँट कटरिया हो सेजिया लगेला
पिंजड़वा में तड़पे सुगनवा हो राम

कजरी—

पुरवइआ बहत झिंकाझोर
घेरलस बादर चारुओर

शरद—

पोखर तलइआ में कँवला फुलाइल
गँदा चमेलिया पर भँवरा लोभाइल
मुसुकाइल हर सिंगार हो
बितल बरखा के दिनवा

समाज के हाल बेवहार के आ अझुरहट के कवि अनदेखी
ना कर पवले बाड़न। बिरहा धुन में, गाँव—गाँवई में रोजिगार के
जवन समस्या बा, जवना के चलते अरथ के ऊपराजन करे
खातिर विदेश जाए के मजबूरी होखत बा, ओकर बरनन देखीं —

काहे नाहीं देसवा में मिले रोजिगरवा
बलमा के भेजे परदेस
उमर बिताई पिया लइले पइसवा कि
मनवा में हरदम कलेस

भुलात मूल्यन आ विशेषतन के बरनन 'निरमल कहाँ बा
पानी' जइसन रचना में बा, त गाँव—गाँवई के देहातिअन, जे अब
शहराती हो गइल बा, से लवटे के विनति 'शहर से आ जा'
जइसन कविता में बा।

गिरि जी कुछ मुक्तको लिखले बाड़न, सामाजिक
विसंगतियन आ भेदभाव के खुलासा मुक्तको में मिल जात
बा। एगो नमूना देखीं —

भीतर भुँभुर के आग ऊपर मुसुकी देखाता
रसगर बसंत में कबहीं खुशकी देखाता
जुल्मी के बंगला पर खड़ा बिया कार
गरीब इंसान के मुँह पर सुसुकी देखाता

सामाजिक जीवन बदरूप हो गइल बा। संबंधन में एगो
दुराव आ गइल बा। टुच्चापन बढ़ गइल बा। साँच का आँच
मिलत बा, झूठ का मान सम्मान मिलत बा। मशीनी युग के प्रभाव
संबंधन में भावना के मेटका देले बा। एह सब बात के अभिव्यक्ति
कवि के मुक्तछंद के कवितन के जरिये भइल बा। एगो उदाहरण
देखीं कि कइसे यंत्रीकरण के युग में आदमी यंत्र हो गइल बा—

आदमी का ई फरक अब देखे के अब फुरसत कहाँ
कि कब टूटे लागल अपने सवदाबाजी
बँटा गइल सभे खेमा में
मृत्यु के बोध के सत्य से विमुख हो के
आदमी चले लागल बा रिमोट से

जइसे संवेदना से जुड़ल ऊ

प्रकृति के अनुपम जीव ना रहल
बन गइल होखे मशीनी यंत्र मानव

एह संग्रह में पाँच गो बाल कविता संकलित बा। कहे
के बात नइखे कि गिरि जी शिक्षक हईं आ उहाँ के बेसी
समय लइकन के बीच गुजरेला। लइकन के शिक्षा मनोरंजन
के उदेसे कविता लिखल सोभाविक बा। एगो नमूना अँखियान
करीं जवना में बादल बने आ बरसे के बारे में बतावल गइल
बा—

सुरुज बाबा बतवलन हँस के
हमरा गरमी से पानी तप के
बाफ से बादल बन जाला
ठंढी हवा से ठोकर खाला
बून—बून गिरे मस्तानी
झम झमाझम पानी पानी
बरखा रानी बरखा रानी

भोजपुरी में आजकाल गजल कहे के प्रचलन बढ़ल
बा, आ फरियो फुला रहल बा। बाकिर, फॉर्मेट गजल जइसन
रखला से गजल ना हो सके, गीतिका हो जाई, कविता हो
जाई। गजल सम्हारल कठिन बा। गजल के नाम तीसहन
रचना एह संग्रह में बा, दू तीन गो शेर बिछले बानी, देखीं—

करत नित करिया धंधा आदमी
उजर पोशाक मन गंदा आदमी

बंगला विशाल, सजावल कोठी
महल में बाकिर घर ना मिलल
पग—पग पर गोड़ फूटी पथल के दुनिया में
धीरज बाकिर एक दिन हथियार बन जाई

'सोन किरिनिया' के ई कुछ ट्रेलर रहल ह, जवन ई
बतावत बा कि पूरा सीनेमा कइसन लागी। हम सहज सरल
भाषा के प्रयोग करे खातिर गिरि जी के बधाई देत बानी।
नेपाल के कई भोजपुरी कवियन के काव्यभाषा तनि अलग
लागेला, भारत के भोजपुरी से। गिरि जी भारत से मिलता
जुलता भाषा के प्रयोग कइले बानी। बरजोरी अलंकारिक बनावे
के प्रयास ना बा, सहजे काव्य सिंगार के तत्व जे आइल बा से
आइल बा। हम एह काव्य संग्रह के स्वागत करत बानी आ
कवि के साधुवाद।

जय भोजपुरी !

□□

○ श्रीनिलयम्, आदर्शग्राम, रोड नं.—1
कोल्हुआ पैगम्बरपुर, मुजफ्फरपुर (बिहार)



चन्द्रेश्वर के 'हमार गाँव' हमारे गाँव

कनक किशोर

भोजपुरिया माटी उहो गंगा के किनार के पलल बढ़ल हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. चन्द्रेश्वर के भोजपुरी के कथेतर गद्य 'हमार गाँव' पढ़ के लागल कि रोजी-रोटी के तलाश में शौक भा मजबूरी में भले गाँव छूट जाला, देह से भले दूर चल जाला बाकिर मन में गाँव मुए ना, मन से ऊ गाँवे के रहेला। माटी से जुड़ल साहित्यकार चाहे भा ना चाहे ओकर साहित्य गाँव, माटी आ खेत के सौंध महक से सनाईल रहेला। एगो विशेष बात 'हमार गाँव' में चन्द्रेश्वर जी खाली गाँव-घर, टोला-परोसा, खेत-बधार, परब-त्योहार, लोक रंग-लोक संस्कृतिये के बात नइखीं कइले जहाँ मौका मिलल बा राजनीति, सियासत, जनवाद, वैश्वीकरण, बाजारवाद, मशीनीकरण, जातिवाद, राम मंदिर, भ्रूण हत्या, साम्प्रदायिकता, संपूर्णक्रांति, विकास बनाम विनाश, जल समस्या, वर्तमान स्थिति में सामाजिक मूल्य में आइल गिरावट के बात करत पावल जात बानी, जे एह किताब के इयाद कथा/संस्मरण के एगो नया रूप त प्रदान करते बा साथ ही पाठक के आज के आधुनिक परिवेश में पुरान गाँवई पहचान से अवगत करावत गाँवन में आइल गिरावट के ओर ध्यान आकृष्ट करे में सफल साबित हो रहल बा। कल्लुहाड़ चलेला त संउसे बधार सोन्ह-सोन्ह महकेला ओसही 'हमार गाँव' के पन्ना-पन्ना में गाँवई गंध बिखरल पड़ल बा साथही गाँवई संस्कृति, रीत-रिवाज के इयाद ताजा करा जाता। साँच पूछीं त आज ऊ गाँव खोजलो पर ना मिली जवन गाँव लेखक के जेहन में बा, 'हमार गाँव' में बा, जवन गाँव देश के आत्मा रहे, लेखको एह बात के स्वीकारे नइखन करत अनचिहार हो जा ताड़े अपने गाँव के गलियन में। नइखे भेंटात उहां के गाँव के भाई-गोतिया, सुख-दुख बतियावे वाली भऊजाई, नेह दुलार करे वाली आजी-नानी, लइकाई के संधतिया ना पतसहिया आम आज गाँवे गइला पर। गाँव के बदलल परिस्थिति में लेखक के तथाकथित विकास गाँव में लउकत बा बाकिर गाँव नइखे लउकत जे गाँव ऊ देखले रहन। एह किताब में कुल एकावन गो संस्मरण शामिल बा विषय वस्तु अलग-अलग बाकिर सुवास उहे आज से तीस-चालीस बरिस पहिले के भोजपुरिया संस्कृति के निटाह गंगा किनार हेठार के गाँव के। कवनो लोक भाषा के स्थल विशेष आंचलिक स्वरूप होला एही से कहल गइल बा एक कोस पर पानी बदले चार कोस पर बाणी। 'हमार गाँव' में चन्द्रेश्वर जी: टेंठ हेठार के भाषा के उपयोग कइले बानी आ स्वीकार कइले बानी कि एह किताब के लिखे में बरतनी के मामला में उच्चारण आ ध्वनियन के पकड़े के प्रयास कइले बानी, जेकर आधार बनल बा पुरनका भोजपुर के नीचे के आ दियर के गंगा किनार के इलाका। ई एह किताब के मिठास बढ़ा देता बाकिर कुछ शब्द पाठक खातिर बिल्कुल नया सामने आ जाता, लेखक ओकरो अर्थ बढ़ा ढंग से बतावत बढ़ जात बाड़न। सब से बड़ खूबी एह किताब के बा कि रोजमर्रा के छोट-मोट

घटनन के बड़ा रोचक ढंग से खाली प्रस्तुत नइखे कइल गइल बलुक ओकर सामयिक सामाजिक महत्व आ वर्तमान में हो रहल क्षय के ओर ध्यान आकृष्ट कइल गइल बा। लेखक जीयल बा गाँवई संस्कृति में, पठन पाठन के अधिकांश समय भोजपुरिया परिवेश में परंतु जनवाद, वामधारा, समता के आगोश में आपन साहित्य सृजन से जुड़ल रहल बा एह से ओकरो स्पष्ट प्रभाव जगह-जगह लउकता। अगर चार लाइन में किताब के बारे में कहे के रहित त नवही भोजपुरी कवि श्री बिमल कुमार के नीचे लिखल चार लाइन कहतीं-

चइत सावनी कोहबर फाग
गोतिया घोरे हिया में राग।
नाचे पाँव ना रोके रूके
बान्हे जब छागल भोजपुरी।

अब किताब में उद्धृत कुछ घटनन आ लेखक के परोसल संस्मरण में राजनीति, सियासत, सामंती प्रथा, जातिवाद आ साम्प्रदायिकता के चर्चा पर चर्चा कइल चाहब जे आलेख के समसामयिक के साथ गाँव के वर्तमान स्वरूप सामने रखे में सफल रहल बा।

रीत-रिवाज आ परब त्योहार गाँवई जीवन के जान होला। साँच कहल जाव त गाँव के रीत रिवाज एगो परिवार के ना संउसे गाँव के, हित नात के जोड़ के रखबे ना करे गाँव के गाँवई स्वरूप बिगड़े ना देवेला। लेखक किताब के शुरुआत समहुत से कइले बाड़े जे किसान के शुभ मुहूर्त में खेती-बारी शुभारंभ के विधान ह। पनढकउवा, काली पुजाई, बहुरा, तीज, जीउतिया, छठ, खिचड़ी, गाय डाढ़, गोधन, जलुआ, बियाह, बारात, बरनेत, गुरहथी के लेखक खाली बतवले नइखन की का ह, ओकर विधि-विधान के साथ महत्ता पर बड़ा सुक्ष्म विश्लेषण कइले बाड़न जे पाठक के रूचीगर लागी हमरा पूरा विसवास बा। आपन बिसनाथ बाबा के बहाने 'मरद भोजपुरिया' के लक्षण, गाँव में ओह घड़ी मरद मेहरारू के खान पान के तरीका आ आपसी रूसे फूले, मनावे के तरीका के ओर ध्यान आकृष्ट कइल चहले बाड़न। पतसहिया आम के पेड़ गाँव के आदमी के गाछ वृक्ष से लगाव बतावत बा, जेकरा गिरला के बाद ओह सीवान में लेखक जाइल छोड़ दे ताड़न काहे कि ओकरा ना रहला पर बाधार उदास लागत रहे। गाँव के आस्था से जुड़ल परब त्योहार के सामाजिक समरसता के ध्यान राखत ओकर कुछ गलत ताना बाना खातिर विरोध प्रकट जरूर लेखक कर रहल बा बाकिर ढकोसला नइखे कहत परंतु काँवर प्रथा के एगो नया धार्मिक फिनोमेना के संज्ञा दे रहल बा जे सचमुच दिखावा जादे बा।

गाँव के ताजिया के वर्णन गाँव के साम्प्रदायिक माहौल के स्थिति आँख के सामने रख देले बा जे बता रहल बा गाँव के आपन माहौल होला ओह में जात धरम के बचावत आपन पहचान बरकरार रखल जाला काहे कि रहे के त साथ ही बा। आज प्रेम

सद्भाव में आइल कमी देख लेखक कहे खातिर बाध्य हो गइल कि अबकी पता ना काहे गँउवा खँखर लागल। गाँव के पंच पढ़ के लागल कि गाँव में अब अलगू चौधरी ना रहलन ओकरे नतीजा बा घरे घर दूगो चार गो केस फऊदारी।

लेखक के गाँव एगो बड़ गाँव ह, जहवाँ आ ओकरा अड़ोस-पड़ोस के गाँव में सब जात के धरम के लोग रहत रहे। इलाका राजनीतिक रूप से सजग रहे। शिक्षा के गाँव में सुविधा भले कम रहे बाकिर पढ़े लिखे के माहौल रहे। असहूँ गाँव छोट हो खे भा बड़ ऊ अपना आपके राजधानी पटना से कम ना बुझे विकास के नाम पर ना राजनीतिक रूप में जहाँ गाँधी, पटेल, अम्बेडकर, जे पी, जिन्ना, फारुक, लेलिन, मार्क्स, इंद्रा के कहो समाजवाद, वैश्वीकरण, बाजारवाद, निजीकरण पर चौक चौराहे पर ना महुआ आ बर त सुबह शाम चर्चा चलेला। पढ़ल होखस भा ना डिप्टी, कलटर, वकील, बड़ा बाबू, प्रेसिडेंटवा गाँव में भेंटा जाला। ढेर पढ़लका जे गाँवे रहता भले कोई मत पूछो बाकिर अपना के सदन के अध्यक्ष मानेला जरूरत पड़ला पर साथी संघतिया के मार्शल के रूप में प्रयोग करेला। आशा पड़री में एह तरह के पात्र जगह जगह आपन उपस्थिति दर्ज कइले ही नइखन आपन रोल के बड़ी करीना से निर्वाह कइले बाड़न। मनसाइन खातिर ई जरूरीयो होला आखिर समय काटे के बा गाँवे में। चउल ना होई, बोली ना बोलाई, माला ना उठी, मनसहक बरात पर कवाछ ना फेंकी, बुढ़वा बाबा के कउचाई ना बोका आ भैंसा के लड़वाई ना, बाई जी के रात भर नाच ना देखी त समय कइसे कटी। इहे ऊ माटी ह जहवाँ बोली पर गोली चलेला। सब तरह के लोग चन्द्रेश्वर जी के गाँव के इयाद कथा में भरल पुरल बा। इहे गाँव होला, इहे गाँवई जीवन ह। आपसी तालमेल बा त उठा पटको, बधारी में लड़ाई बाकिर गाँव में सबहर भोज में एके पांत पर बइठ लुचुई तुरता इहो गाँव के इयाद कथा में लउकता।

बात बदल गइल, लहुलुहान बा आदमी, गाँव खँखर लागल मू गाँव के बदलत स्वरूप का ओर इशारा बाई हालात देख लेखक कहत बा आज इयादे में के गाँव ठीक लागत बा।

पनिया के पनिया, चिचुही ताल, बाढ़ में गाँव पढ़ के पता चलत बा कि पनरोह, अहरा, ताल-तलैया जवन जल संचयन खातिर रहे धीरे धीरे ओरा गइल। ओकरे प्रतिफल गाँव जे हाथ से चापानल गाड़ लेत रहे ऊ समरसेबुल पंप आ टंकी के पानी पर निर्भर बा। पत साल बाढ़ झेले वाला गाँव पानी खातिर पानी पानी हो रहल बा। पानी में बसल गाँव में पानी के त्रासदी देख लेखक के दिल रो देलस। गंगा किनार के माटी में जामल मनई के चेहरा पर एगो अलग पानी होत रहे जे भागम भाग के जिनगी छिनलस आ गाँव के बदलल स्वरूप पीये के पानी, ई त्रासदी झेल रहल बा गाँव आज के।

जाति प्रथा आ मेहरारू के दुर्दशा भोजपुरिया गाँवन में गहिरा पैठ शुरू से बनवले रहे, आज समय के साथे बदल। एव आइल बा बाकिर अइठन बरकरार बा। ई बड़ा बेवाकी से लेखक उकरेले बाड़न बिना तोप झांप के।

एह इयाद कथन के खुबसूरती बा कि कहानी रीत रिवाज, हास्य प्रसंग, परब त्योहार से भले शुरू होखो लेखक बिना गेयर बदलले टर्न कर जा ताड़े कभी वैश्वीकरण बाजारवाद, त कबो राजनीति के वर्तमान गिरावट, कबो जे पी के संपूर्ण क्रांति, कबो सुशासन आ जुमला सुना स्वप्नदर्शी बनावे पर, उहो जोर के झटका धीरे से देत।

‘हमार गाँव’ हमरे ना रउवो गाँव ह, ई पढ़ब तब बुझाई। हमरा इहे बुझाईल ह। रउवो पढ़ी। □□

रश्मि प्रकाशन लखनऊ से प्रकाशित 169 पृष्ठ के ई किताब के मूल्य 200रु मात्र बा। भोजपुरी साहित्य के अनमोल धरोहर बा ई ‘हमार गाँव’।

○ राँची (झारखंड)

बेपानी पानी



चंद्रेश्वर

ई पानी बेपानी बा
एकरा से के पियास बुझाई
एह से के नहाई
मलि-मलि के देह
एकरा में मिलल बा आर्सेनिक

हवा में साँस लिहल
कठिन बा
गंगा, सरजू आ राप्ती में मारल
डुबकी
कठिन बा

घाट प काई बा
ठेहुना में बाई बा
ना एकर दवाई बा
साँई के कतो नइखे
अता-पता
लापता बा हमार
सूरज
दुपहरिये में !

□□

○ सुयश, ज्ञान विहार कॉलोनी, लखनऊ



भोजपुरी के श्रापन लिंग-बिधान

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'

'लिंग' शब्द संस्कृत के ह। जवना के अर्थ होला— ऊ 'चिन्ह' जवना के जरिए कवनो ब्यक्ति, चीज—बस्तु भा भाव के नर, मादा आ नपुंसक होखे के भेद पता लागे। सबसे पहिले संस्कृत के ब्याकरण लिखाइल जवना में सबसे पुरान पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' उपलब्ध बा। एह से भासा के लिंग-बिधान पर सबसे पहिले संस्कृते में बिचार भइल। जवना के चलते भारत के आउरो भासा के लिंग-बिधान पर थोर-ठेर संस्कृत का लिंग-बिधानन के छाया नजर आवेला। अब जइसे कवनो भासा के बोले, लिखे, पढ़े आ सिखे खातिर जवन सूत्र, नियम भा सिधांत गढ़ाला त ऊ ओकरा लोकायते रूप के अनुरूप गढ़ाला ओइसहीं ओकर लिंगो-बिधान लोक-बेवहारे के आधार पर तय होला। अइसे अपवाद के गुंजाइस हर जगे होला। बाकिर अपवाद त अपवादे ह। ऊ सिधांत से अलग एकबागा होला। खैर, अब आई हमनीं लिंग-बिधान, लिंग तय करे के तरीका आ भोजपुरी का लोकायत लिंग-बिधान के बारीकी पर बिचार कइल जाए।

कवनो भासा में लिंग तय करे के मूल आधार होला ओह भासा के लोक-बेवहारिक रूप। लोक-बेवहार के भासा-रूप में लिंग-भेद के जइसन बेवहार चलन में होला, उहे ओकर ब्याकरणो मानेला। एही से एके चीज-बतुस भा भाव खातिर बेवहार में आवे वाला अलग-अलग शब्द खातिर अलग-अलग लिंग-भेद हो जाला। आई, संस्कृत आ खड़ी बोली (हिन्दी) होत पूर्बी बोली (भोजपुरी) के लिंग-बिधान पर बिचार कइल जाए।

संस्कृत में लिंग तय करके दूगो आधार मानल बा— प्राकृतिक आ ब्याकरणिक। प्राकृतिक आधार खातिर कहल गइल कि स्तन-केसवाली स्त्रीलिंग, लोमस माने रोआं (रोम) बाल वाला पुलिंग आ एह दूनो भेद के अभाव वाला नपुंसक लिंग ह। (स्तनकेशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुष स्मृतिः। उभयोरन्तरं यच्च तद्भावे नपुंसकम्।— सदाशिव शास्त्रीय परमलघुमंजूषा की अर्थदीपिका— पन्ना-110)। बाकिर लिंग तय करे के ई लक्षण सब जगे आ सब पर ना लागू होखे। जदि अइसन रहित त संस्कृत में स्त्री के वाचक शब्द 'दारा' पुलिंग, 'नारी' स्त्रीलिंग आ 'कलत्र' नपुंसक लिंग ना होइत। सूरज का किरिन खातिर आइल शब्द 'मयूख' आ 'अंशु' पुलिंग आ 'मरीचि' आ 'दीधिचि' स्त्रीलिंग ना होइत। अमरित खातिर 'अमृत' शब्द नपुंसक आ 'सुधा' शब्द स्त्रीलिंग ना होइत। संस्कृत के पुलिंग शब्द 'आत्मा' हिन्दी में स्त्रीलिंग ना हो जाइत।

संस्कृत के लिंग तय करे वाला प्राकृतिक आधार के अनुसार तो बेजान चीज नपुंसक लिंग जनाये के चाहीं। बाकिर लोक बेवहार में अइसन ना पावल जाए। काहे कि बेजान चीज का संगे संगे अमूर्त भावो सब खातिर स्त्रीलिंग आ पुलिंग शब्द के बेवहार लोक में पावल जालाय जइसे — सूरज एगो ग्रह ह

आ ओकरा खातिर आइल 'मित्र' शब्द पुलिंग ह आ सजीव 'मित्र' शब्द नपुंसक लिंग बतावल बा। कुछ लोग प्रत्यय के बेवहार के आधार पर लिंग तय करे के बात कहेला। बाकिर प्रत्यय के चलते कवनो शब्द के लिंग तय ना हो सके। प्रत्यय के लगला से शब्द के स्त्रीलिंग भा पुलिंग होखे के द्योतन होला। संस्कृत में एके जाति का बस्तुअन के नाम अलग-अलग लिंग में प्रयुक्त होलाय जइसे— पुष्य आ तारका दूगो नक्षत्र ह। पुष्य पुलिंग, तारका स्त्रीलिंग आ खुद नक्षत्र नपुंसक लिंग ह।

एह से ई बात बिचारे जोग बा कि भासा में लिंग तय करेके आधार प्राकृतिक होई कि ब्याकरणिक आ कि लोक भा परम्परागत बड़-बुजुर्ग के बेवहार आधारित?

ई त सभे जानऽता जे भासा आ ओकरा शब्द के बेवहार अपना जीवन-ब्यापार खातिर लोक करेला। फेर ओही लोक बेवहार के आधार पर ओकर नियम भा ब्याकरण बनेला। बाकिर लोक के मानल प्रयोग एक रूप में भइल जरूरी होला ना त एह दिसाई अराजकता फइल जाई। एही एक रूप के जरूरत के ध्यान में र खला पर, गुन सबके लिंग तय करेके आधार माने के कल्पना बहुत उपयोगी ना हो सके। एह से कई बैयाकरण लोग का विचार के मानत डॉ. दीप्ति शर्मा के मत बा कि भासा के बेवहार में आवे वाला लिंग शब्दनिष्ठ होला, अर्थनिष्ठ ना। एह से ओकर प्राकृतिक लिंग का संगे हर घरी सामानाधिकरण ना मिले। लिंग तय करे के एके गो आधार बा लोक बेवहार। जवन ओह लोक आ समय के भासा में लउकेला। संस्कृत आ भोजपुरी के पुलिंग 'आत्मा' शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग हो जाला। उर्दू के पुलिंग 'कलम' हिन्दी में स्त्रीलिंग हो जाला। हिन्दी के स्त्रीलिंग 'चर्चा' उर्दू में पुलिंग हो जाला। एकरा से दूगो तथ्य उभर के सामने आवऽता— एक-भासा बेवहार के लिंग शब्द पर आधारित होला आ दोसर— लिंग तय करे के आधार लोक बेवहार ह।

एह से एगो भासा भा लोक के आधार पर दोसरा भासा भा लोक के लिंग तय करे वाला अनुवादक अराजकता पैदा कर देलन।

जब लिंग के शब्दनिष्ठ मान लिआई तब नाम का सक्ति के ओकरा में ना मानल तर्कहीन हो जाई, खास करके संस्कृत जइसन भासा में, जहाँ अर्थतत्व का संगे रूपतत्व के जोग लिंग के आधार पर होला। जदि लिंग के संकेत लिंग में ना मानल जाई त स्त्रीलिंग, पुलिंग आ नपुंसक लिंग बिभक्तियन के प्रयोग के कवनो आधारे ना रह जाई। लिंग भेद से बिभक्ति भेद होला। अइसन हिन्दियो में होला, जइसे— राजा का लड़का और राजा की लड़की। अइसन भोजपुरी में ना होखे। भोजपुरी में राजा के लरिका आ राजा के लरकी होई। इहाँ लिंग भेद से परसर्ग भेद ना होखे। कहीं कहीं का परसर्ग के प्रयोग होइबो करेला त ओकर स्त्रीलिंग बनावे खातिर की के प्रयोग ना होखे। भोजपुरी में राम का/के घरे

घरे आ सीता काधके घरे जइसन राम की बेटी आ सीता की बेटी ना होके राम के बेटी आ सीता के बेटी होला। इहे भोजपुरी के लोक मान्य मानक प्रयोग ह। आम तौर पर भोजपुरी में स्त्रीलिंग भा पुलिंग खातिर के परसर्ग ही चल ला। एक बात आउर, संस्कृत भा हिन्दी में सब्द का लिंग के आधार पर बिभक्ति के बेवहार होला, साकिर, बिभक्ति के आधार पर सब्द के लिंग तय ना कइल जाए। जदि बिभक्ति का प्रयोग के लिंग तय करे के कारन मानल जाई तब सब सब्दन के सर्बलिंगी माने के पड़ी। मतलब, हर सब्दन के स्त्रीलिंग, पुलिंग आ नपुंसक लिंग में बेवहार का संभावना के माने के पड़ी। जइसे सब्द के कवनो आपन लिंग होइबे ना करे। जब जवन बिभक्ति लाग जाई ओकर उहे लिंग हो जाई। पुलिंग बिभक्ति लागल त सब्द पुलिंग आ स्त्रीलिंग बिभक्ति लागल त सब्द स्त्रीलिंग। अइसन स्थिति में भासा में घोर अराजकता फइल जाई।

एके सब्द के दू लिंग वाला अर्थ भइला पर प्रसंग-प्रयोग के आधार पर वाक्य में ओकर लिंग तय करे के पड़ेला। जइसे सूरज के अर्थ में जब मित्र सब्द के प्रयोग संस्कृत में होला तब ऊ पुलिंग आ बन्धु के अर्थ में होला त नपुंसक लिंग में बेवहार कइल जाला। अइसन आउरो सब्द का संगे हो सकेला।

भोजपुरी के लोक साहित्य भा अस्सी का दशक तक के लिखल-छपल साहित्य के अध्ययन से एह तथ्य उभरता कि ओह समय तक का भोजपुरी साहित्यकार लोग के सरो. कार आज के हजुरा गांव, समाज आ उहाँके भासा के प्रकृति-प्रवृत्ति से अधिका रहे। जदि ऊ लोग खड़ी बोली हिन्दी में लिखे का सडे-सडे भोजपुरियो में लिखत रहे त उनकर लिंग बिधान लोक बेवहार के नियंत्रित होत रहे। बाकिर अस्सी का दशक के बाद जइसे जइसे खड़ी बोली हिन्दी वाला लोग जल्दबाजी में बहुत कुछ लिख-पा लेवे के चक्कर में पड़के सीधे सीधे हिन्दी से भोजपुरी में उल्था करे लागल त भोजपुरी भासा के क्षेत्र में कई तरह के अराजकता फइलत चल गइल। एगो त एकर ध्वनि प्रकृति आ भाव प्रकृति कसरिआए लागल। एकरा मूल सब्दन के भेदस मानके लोग संस्कृतनिष्ठ आ हिन्दी के तत्सम सब्दन के बहुतायत बेवहार करे लाग ल। एकरा नाम, सर्बनाम, क्रिया, बिसेसन, क्रिया-बिसेसन, लिंग-बिधान आदि पर खड़ी बोली हिन्दी के छाप साफ दिखे लागल। एने एकइसवीं सदी आवत-आवत जइसे हिन्दी अंगरेजी के प्रभाव में अपना अधिकाधिक सब्दन से बंचित हो गइल ओइसहीं भोजपुरिओ हिन्दी के अनुबाद रूप लेके अपना लोक से दूर होत जा रहल बा। खैर, फिलहाल हमरा भोजपुरी के लिंग बिधान के लेके बात करेके बा।

जइसे ब्रह्मपुत्र आ सोनभद्र नदी स्त्रीलिंग ना बल्कि नद मतलब पुलिंग हवें स ओइसहीं भोजपुरिओ पुलिंग प्रधान भासा ह आ ई तथ्य एकरा लिंग बिधान सम्बन्धी लोक बेवहार से उभर के सामने आवऽता। बाकिर एकर माने ई नइखे कि एकरा में जीवधारी स्त्रीलिंगन के छोड़के आउर कुछ स्त्रीलिंग हइए नइखे। बात पुलिंग के अधिकाधिक बेवहार से बा। जवन भोजपुरी लोक मतलब गांव-देहात में सुने के मिल ला। गाँव-जवार से जीवन्त सरोकार राखे वाला खड़ी बोली हिन्दी के बिद्वान जब भोजपुरी बोले लें भा लिखे लें तब हिन्दि-

बोली हिन्दी के बिद्वान जब भोजपुरी बोले लें भा लिखे लें तब हिन्दिओ के स्त्रीलिंग सब्द के पुलिंगे प्रयोग करत नजर आवेले। जइसे हिन्दी में प्रयुक्त होखे वाला स्त्रीलिंग सब्द पुष्टि, नींद,ब्लेड, कैंची, बात, याद, कहानी, कविता, झोपड़ी, रोशनी, मित्रता, मुराद, भीड़, मृत्यु, दशा, दुर्दशा, चिट्ठी, रचना, अग्नि, तस्बीर, प्रकृति, अध्य क्षता, परम्परा, मर्यादा, कला, दृष्टिकोण, कल्पना, स्थिति आदि के पुलिंग रूप में बेवहार ना होइत।

एह तथ्य के पुष्ट करे खातिर कुछ नामचीन हिन्दी के बिद्वान लोग के कुछ उदाहरन दे रहल बानीय जइसे- पुष्टि-एह से हमरा वक्तव्य के पुष्टि होता।(जेब (ललित निबंध)- प्रो. रामेश्वर नाथ तिवारी), नींद- नींद पगहा तुरा के भागि गइल बा। (अंजोर पत्रिका, अप्रैल-जुलाई 1971, पन्ना-18), ब्लेड आ कैंची - ब्लेड आ कैंची चल जाता (उहे, पन्ना 18), बात- बात ई बा (उहे, पन्ना-18), तोहार कहानी बड़ा लामा-चाकर बा, कविता पितरिआ हो सकेला (कविता के कसउटी- प्रो. हरिकिशोर पाण्डेय), काव्य कला-काव्य कला के गिनती श्रेष्ठ कला में होला, दृष्टिकोण- ओकर दृष्टिकोण मानवीय होला, अध्यक्षता-कुलपति जी का अध्यक्षता में संगोष्ठी सम्पन्न भइल, परम्परा-परम्परा बा, मर्यादा- मर्यादा बा, आवश्यकता-आवश्यकता बा, दौर-नया दौर बा आदि (स्मारिका, अ. भा. भो. सा. स. तिसरका अधिवेशन सिवान-1977), विश्वसनीयता- ओकर विश्वसनीयता पूरा तरह खुल के उभरल बा (कुंवर सिंह : दूगो महाकाव्य - डॉ. जितराम पाठक, स्मृति ग्रन्थ, पन्ना-255), भीत - नया भीत उठेला पुराना भीत ढहेला (आँधी - सिपाही सिंह श्रीमंत), लाली आ कविता - 'पुरब में उतरल लाली बा' बड़ा तगड़ा कविता बा (भोजपुरी पद्य संग्रह'- डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव, पन्ना-8), रचना- संतलोग अपना रचना में भाषा के खिचड़ी पकवले बा (निरगुन बानी- कुलदीप नारायण झड़प), अनुभूति- अनुभूतियो ओइसने ओजनगर होला, तस्बीर- तस्बीर उभरेला, प्रकृति- राम के प्रकृति अलग बा (काव्य आ जीवन- डॉ. कुमार बसंत, निबंध निकुंज, पन्ना-44-45), आह- बिपतिआ के आहो बा आदि।

अइसन अनगिनत उदाहरन बा जवना में लिंग बिधान के दिसाई भोजपुरी के आपन अलग प्रकृति नजर आवत बा। जवना के आधार लोक बेवहार बा। बाकिर आज खड़ी बोली हिन्दी से प्रभावित जन एह सब्दन के सडे ह के बदले हिअ, होला के बदले होले, भइल के जगे भइली, ता के जगे तिआ, बा के जगे बिआ अपना के बदले अपनी, उनका के बदले उनकी जइसन स्त्रीबाची सर्बनाम आ क्रियापद लगाके भोजपुरी के हिन्दिआवे के उतजोग में लागल बाड़न। हमरा समझ से एह दिसाई बिना कवनो जोर-जबर्दस्ती के लोक बेवहार के अनुसरन कइल उचित कहाई। काहे कि भासा लोक के सम्पत्ति ह आ ओकर नियमन लोक बेवहार के आधारे पर तय होला। ना त देस-दुनिया के हर भासा खातिर एके गो बिधान बनित आ सब पर लागू होइत। इहाँ हम इहो कहेब कि जब कवनो एक भासा दोसरा भासा से प्रभावित होला त ओकरा के प्रभा. वित करेवाला भासा का प्रकृति के प्रभाव ओकरा पर थोड़-ढेर जरूर पड़ेला। बाकिर एतना ना पड़े के चाहीं कि ओकर मूल प्रकृति पर गरहन लाग जाव। □□

○ लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर (बिहार)



लोरी

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

संपादक, भोजपुरी साहित्य सरिता



सत्ता के भूख

कुमार मंगलम रणवीर

जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।
केई पुचकारे, केई अंगे लगावेले
अंगे लगावेले, अंगे लगावेले
केकरा अँचरवा नीचे, जालें लुकाय हो
बबुअवा के मुसुकी पर।
जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।

माई पुचकारे, बाबू अंगे लगावेले
अंगे लगावेले, अंगे लगावेले
दादी के अँचरवा नीचे, जालें लुकाय हो
बबुअवा के मुसुकी पर।
जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।

केई किलकावे, केई लहकि बोलावेले
लहकि बोलावेले, लहकि बोलावेले
केकरा सुरतिया देखि, जालें अघाय हो
बबुअवा के मुसुकी पर।
जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।

चाची किलकावे, चाचा लहकि बोलावेले
लहकि बोलावेले, लहकि बोलावेले
बुआ के सुरतिया देखि, जालें अघाय हो
बबुअवा के मुसुकी पर।
जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।

केई दुलरावे, केई हुलसि बोलावेले
हुलसि बोलावेले, हुलसि बोलावेले
केकरा गोदिया से, जालें पराय हो
बबुअवा के मुसुकी पर।
जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।

नानी दुलरावे, नाना हुलसि बोलावेले
हुलसि बोलावेले, हुलसि बोलावेले
दादा के गोदिया से, जालें पराय हो
बबुअवा के मुसुकी पर।
जाई हम लोभाय हो, बबुअवा के मुसुकी पर।

□□

○ अवंतिका-2, गाजियाबाद (उ.प्र.)

मातम के संसार में दिखल सत्ता के भूख..
रैलियां से चलत रहल बंगाल में वोट के लूट।

भारत माँ के जयकारी लगा के
आग मे कूदे मूर्ख!
भइल कोरोना जानलेवा झरोखा
से निहारे तमाशा सूट-बूट।

भरी दुपहरी अनिकेशवा सतुआ फांके
सांझे गइल भूखे बेटा-बेटी सुत।
जमराज सुनावे रोजे मातम के सन्देसा
बेटा बिन गांव माई रोवे चूल्हा फूंक।
इ जीवन के हवन अब राम मालिक
कुशाग्र बुद्धि हनुमान के सभे बनाव साथी।
मास्क सेनेटाइजर रोजे लगाव
करिह न कवनो चूक।
इंसान के इ हाल देखि उठे करेजा बीच हूक।

कोरोना के पहिले मिली-जुली भगाव
फिर जइह साथिन हेमू संगे गंगा तीर
बैठ के संगे भूजा चबईह अंखिया
से हरिअ पीर।

□□

○ बी.एच.यू. वाराणसी (उ.प्र.)

कीमती भेंट

बोल बचवा, कुछो बोल

माला वर्मा

मोनिका राज

अनु के शादी हो गइल रहे आ अब विदाई के बेरा आ गइल रहे। अनु त अब घर से अंतिम बेरी जात रहस त सब लोगन से आशीर्वाद लेत रहली। शादी-बियाह के बेड़ी बोल बोले वाला लोग के कमी ना होला। ठीक इहवाँ भी ई काम अनु के बड़की भउजी कइली आ जब अनु अपना फुआ से आशीर्वाद लेवे गइली त बड़की भउजी चुस्की लेत कहली—“अनु त अपना फुआ जी के सबसे प्यारी हई। दे खल जाव कि फुआ जी अनु के का देत बाड़ी?”

फुआ जी अनु के मन भर के जोड़ से अपना करेजा में बांध लेहली आ कहली— “अइसे त तू खूब निमन बाड़ू आ सब लोग के साथे निमन से रहे लू आ बात भी निमन से ही करेलू, बाकिर तबो हम तोहके एगो बात कहब कि तू हमेसा अपना सास आ ससुर के अपना माई आ बाबूजी खानी ही मनिहे आ एकदम ओइसने रहिअ जइसे तू अपना माई बाबूजी खातिर अपना भउजी से उम्मीद करत होखे। अइसन कइला से रिश्ता में नेह-स्नेह बनल रहेला आ सब लोग खूब निमन से जिनगी बितावे ला।”

फुआ जी के ई सब बात सुन के अनु के चेहरा त खुशी से खिल गइल। काहे की ई फुआ जी के ओरी से अनु खातिर कीमती भेंट रहे। अइसे कर के अनु सबके खुशी दे सकत रहली आ चौन से आपन आ अपना परिवार के जिनगी बिता सकत रहली।

□□

○ मधेपुरा, बिहार

कुछ दिन से दादा जी बहुत याद आवत बाड़न। जब भी पुरान बात अतीत के सोचीला, ओकरा में दादा जी जरूर शामिल होखेलन। छुट्टी में जब भी शहर से दादा जी के पास जात रहनी, खूब बतकूचन होखे। हमरा से भर पेट तरह-तरह के बात पूछस। एके बतिया के घुरपेट के आगे बढ़ावत रहीं जा। गर्मी के छुट्टी एक महीना के होत रहे। दादा जी खाली बतिआवे में रहस, त दादी माँ के आपन अलग किस्सा रहत रहे। ऊ खाली खियावे बदे परेशान रहस। बबुआ ई खा ल, हऊ खा ल! दुधवा जरूर से पी लीह, तू जाऊन कह हम उहे बनाइब! आ दादा जी हमरा के पकड़ खाली इहे पूछस—बबुआ आपन बात कह। स्कूल शहर के कौनो बात!

एक दिन हमार दोस्त संगतिया के साथ खेले के मूड भइल रहे कि बरामदे में दादा जी पकड़ लेलन —“आव बबुआ कुछो बतिआव, कुछो बोल!”

हम तुरन्त कहनी, “दादा जी, अब नया-नया बात कहाँ से ले आई! जेतना बात रहे ऊ त रऊआ के बता देनी। हमरा के छोड़ी, तनी बाहर से खेल आई। नया बात होखी त बताइब।”

दादा जी तुरन्त कहलन, “ऐ बबुआ। कुछो कह! अखोर-बखोर, झूठ-साँच, पुरनके बतिया में कुछ हेने-होने से फेंट-फांट के बोल... तू कौनो बात कहेल त हमरा सुन के बहुत अच्छा लागेला, बड़ा नीमन तरीका से तू कौनो बात कहेल। जब तू अप. ना शहर चल जईब तब तहार इहे सब बतिया हमरा याद पड़ेला अऊर हम खुश हो जाइला। हमरा ई बुढ़ापा में एकरा से बढ़कर खुशी अऊर कहाँ से मिली! आव बड़ठ हमरा पास, कुछो कह, जौन पहिले कह चुकल बाड़ ओकरे में तनी जोड़-घटाव कर दीहल कर...।”

दादा जी के इ बात सुन के हम ठिठक गइनी। एक बुजुर्ग आदमी के केतना इच्छा होला कि ऊ अपना बच्चा, नाती-पोता के साथ ज्यादा से ज्यादा वक्त बीता सके। दादा जी इ बात त जानते रहन कि हमार छुट्टी जल्दीये खत्म होखी अऊर हम अपना शहर चल जाइब। हमरा गइला के बाद उनकर मन केतना छटपटात होखी! तभी त कुछो अटर-पटर, आखोर-बखोर, झूठ-साँच, किस्सा-कहानी, अरकच-बथुआ हमरा मुँह से सुने के तैयार रहलन। बस्स इहे सोच की हमार पोता हमरा साथे ज्यादा से ज्यादा समय बीता सके...

इ घटना के दो दशक बीत गइल बा। दादा जी, दादी माँ दूनो आदमी अब इस दुनिया में नईखे लेकिन उनकर याद रोज पल-पल सतावेला। आज हम अपना शहर से बहुत दूर, सात समुन्दर पार विदेश के का कहीं कि विदेश की धरती छोड़ अपने धरती पर हमेशा विचरे ला। नौकरी-चाकरी, जीवनयापन का चक्कर बा, ना त आपन घर-दुआर केहू काहे छोड़ी!

काल रात सपना में दादा जी के देखनी। उनका के गोड़ छू के प्रणाम कइनी। अभी कुछ बोलती, उनकर हालचाल पुछती कि ओकरा पहिले दादा जी कह उठलन, “आव बबुआ। बहुत दिन के बाद भेंटाइल बाड़। कुछ कह, आखोर-बखोर, झूठ-साँच, अरकच-बथुआ, पुरनके बतिया में कुछ फेंट-फांट के बोल! तहार बोली सुनला केतना ढेर दिन हो गइल बा! बोल बचवा, कुछो बोल! तहार बोलिया बड़ी मीठ लागेला। उहे सुने खातिर तहरा पास अइनी हा। बोल बचवा-कुछो बोल!!”

हम कुछ जवाब देती ओकरा पहिले घबराहट में हमार नींद खुल गइल। दुबारा नींद ना पड़ल लेकिन उनका के याद करके बहुत देर रोवत रह गइनी...। □□

○ उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल



सगुन

आशोक मिश्र

पिछलका दू-तीन साल से लइकी-देखाई के नाम से रमेसर के समूचा परिवार परेशान हो रहल बा। हर साल लगन शुरू होते रमेसर अपना एम. ए. पास बेटी खातिर लइका खोजल शुरू क देले, लगन थाकत-थाकत कतहुं बात आगहुं बढ़े ला आ लइकी-देखाई तक चहुंप जाला। खूब ठाट-बाट से लइका वाला आवे लें, ओहि लोगन खूब आदर-सत्कार होला, भारी-भर खम बिदाई होला, सब कुछ खुशनुमा माहौल में होला। एगो सीधा-साधा किसान रमेसर के कुछ दिन खुशफहमी में बीते ला। लेकिन ओहि बीचे लइका-पक्ष से भारी दहेज के मांग आ जाला आ जवन रमेसर के कूबत से बहरि रहेला आ बियाह कट जाला।

आजु फेरु एगो पाटी रमेसर के बेटी सगुन के देखे खातिर आवे वाला बा, रमेसर जी अपना हैसियत से बढ़ के इंतजाम कइले बाड़े, नामे के अनुरूप बिटिया सगुन दुलहीन खानि सजल बाड़ी। घर में चहल-पहल बा, बाकिर सबका चेहरा पर एगो अनजान भय बेयापता।

एहि इंतजार में लइका वाला लोग आ गइले, पांव पखराई भईल, भांति-भांति मिठाई, नमकीन, फल आदि से जलपान करावल गइल।

नाश्ता-पानी भइला के बाद लइका के बाबूजी कहले कि अब लइकी के बोलावल जाव। परीक्षा के जवन डर एगो परीक्षार्थी के मन में होला तवने डर आजु फेरु रमेसर के मन में समा गइल।

भयभीत रमेसर अपना बेटा के इशारा कइले आ बिटिया चाय के ट्रे लेहले बैठकखाना में आ गइल। आके ए अपना बाबूजी के ओरि मुंह क के पूछलस "हे बाबूजी दहेज तय हो गइल बा कि ना?"

ई सुनि के लइका के बाबूजी कहलन- बेटी! हमनीं दहेज खातिर नाहि, लक्ष्मी सरुप सगुन (सगुण) के पूजे आइल बानीं सन।

ई सुनि के ऊहां उपस्थित सबके आंख खुशी से भर गइल आ माहौल खुशनुमा हो गइल।

□□

○ कटनी, म. प्र.

कइसे बांची माटी के महक

आदित्य नारायण

ई का हो गइल? ई कइसे हो गइल? केहू, केहू प ताकत नइखे। सभे डेराइल बा। लुकाइल बा। बाप रे बाप ई सब का होता। कवन भूत-पिचास आ गइल। कवन अनहोनी हो गइल। कइसन हवा आ गइल कि गांव में नफरत के आग बवण्डर बन के लहके लागल। ह-ह उहे गांव जहवां चिका-कबडी, गुल्ली-डंडा, दोल्हा-पाती, अटेन-बटेन, ओका-बोका, अंखमुदउवल जइसन कइगो खेल गांव के लइका-नवही जात-पात, धर्म-संप्रदाय भूला के साथ-साथ खेलत रहन। ना बुझाइल कि लड़ाई-झगड़ा कइसे होला। फगुआ में गाल टस-टस लाल रहीम चाचा के भइल त ईद में राम जी काका सेवई घरे-घरे घुम-घुम मांग-मांग खाए में ना लजात रहन। मंदिर के घंटी के टन-टन आवाज गांव के कोना-कोना में जगरम करावत रहे त एहि गांव के मस्जिद में नमाज अदा से दुख-कलह दूर हो जात रहे। दुखनी चाची नाती के नजर उतारे बराबर मस्जिद के दर पर माथा टेकत रही। झारफूक कइला से नजर उतर जात रहे।

दसहरा में दसों दिन डरामा गांव में मिल-जुल के कइल जात रहे। कमिटि के अध्यक्ष मुस्लिम चाचा। महिला पात्र सीता के रोल अकसर सलिम भइया के दियात रहे। सुनर-सुमेख चेहरा हु ब हु मेहरारू लेखा। कलाकारी देख चिहात रहे दरसक। बरकतअली के जोकडई जे जबरदस्त होत रहे कि आदमी हंसत-हंसत लोट-पोट हो जात रहन। दसों दिन दसहरा के चहल-पहल। समय भक से कट जात रहे। ना डिजे, ना डेकोरेसन ना वेटर।

कवनो बिरादर के काज-परोजन में गांवहीं में कराही-छनवटा, चउकी, तोसक-ताकिया, दरी, जाजिम कुर्सी जोगाड क के जुटावल जात रहे। गांव के लोग गैस के मधिम अंजोरा में हित-कुटुम के साथे भवधी खात-खिआवत रहन। भंजहरिया प खेती-किसानी होत रहे। अब्दुल चाचा के एगो बैल टेंगर काका के एगो बैल। मन से मन के मिला के बैल के जोड़ी बना के भांज बान्ह के खेत के जोताई-बोआई होत रहे। पलटी प रोपनी-कबरिया मिल जात रहन। आज हमरा में काल्ह तहरा में। सहयोग आ जोगाड के खेती रहल हा। सहयोग से खेती-किसानी होत रहे। खेतिये ना जीवन के डगर प कइसनों मुसिबत भा खुशी में साथ चले के आदत रहे। सतार अंसारी काका कहते रहन, मरनी-हरनी में जात-धर्म भुलाके अंतिम-संस्कार में गांव के लोग साथ देत रहन। दुख-सुख में सभ केहू एक-दुसरा के मदद करत रहे। बाकिर आज का हो गइल। बुझाते नइखे। कवन बामत-पिचास एकता-प्रेम के खा रहल बा। कहां से अइसन हवा आ गइल कि बाप-दादा के सहेजल धरोहर सब छितिर-बितिर, तहस-नहस हो गइल। सम्प्रदायिकता के जहर, सहर से गांव-गांव आ के जोगिया घुन रमावत। भाईचारा के रिसता टुट-टुट सिसा नियन चुर-चुर हो रहल बा। समाज के मुंह पर करिखा लाग रहल बा। मलाई बरफ जइसन रहे गांव के जिनगी, आज समय आ राजनीति के गरमी से धीरे-धीरे गांव के भाईचारा, प्रेम आचार-विचार, रहन-सहन, के मलाई पिघलल जाता। अब बांच गइल बा हाथ में सुखल डांटी। भकूआइल बा मन। डर बा कि के तरे गांव के माटी के महक बाचीं।

□□

○ भोजपुर, बिहार

टूलकिट

आजकाल टूलकिट नाँव के शब्द मीडिया प्रिन्ट मीडिया में खूबे देखे सुने के मिलता, जेहरे देखी ओहरे ई वर्चुअल टूलकिट के भौकाल लउकता। ई सुनके बसरोपन काका के चुप ना रहल गइल उ बोल पड़लन, ई कइसन टूलकिट ह रे जवन लउकबे ना करेला, असली टूलकिट त हमनीके जमाना में रहे जब स्कूटर के साथे प्लग, पाना, पेचकस अउरी चटकार लाल रंग के जोड़ के आकृति बनल कुंट के डब्बा में रुई के फाहा, जालीदार बैंडेज, एंटीसेप्टिक के शीशी रहत रहे। कुल मिला के इहे हमनी खातीर फर्स्ट एड बॉक्स कम टूलकिट रहे भा समझल जात रहे। हमनी के सपाट समझ एकरा से अधिका सोचला पर बुद्धि के बेमतलब के खर्चा कइल ही मानत रहे।

हमनी खातिर स्कूटर पर ठीक ठाक हालत में लागल स्टेपनी ही दिल के बड़हन सकून देत रहे। ओ समय स्कूटर के पाछे एगो दुरुस्त चक्का लागल रहत रहे, बकायदा खोल चढ़ा के। जवन पाछे बड़टे वाला के पीठ के अलम त देत रहे आ चालक के निफिकिर भी करत रहे। मोटरसाइकिल में एकर अभाव रहे एहीसे ओके लफंगन के सवारी के रूप में गोहरावत रहे बाल बच्चेदार घर गृहस्थी वाला लोग।

वाह रे वक्त, वाह रे समय। उहो का वक्त रहे, पँकचर भइला पर आदमी घबरात ना रहे, कमीज के बाँह के ऊपर चढ़ा के चक्का बदले आ हाँथ पोछ के अपना मंजिल की ओर बढ़ जाव। तब अक्सर नजारा लउके की नावा नावा बियाहल कनिया सड़क किनारे कवनो फेड़ के छाँव में दहेजुवा स्कूटर के आपन सईयों के हाथे स्टेपनी बदले के प्रक्रिया के बड़ा स्नेह से देखे आ मने मने उनका काबलियत के दाद देवे। टूलकिट सजना सजनी में पियार दुलार बढावे में बड़हन सहयोगी रहे।

अब समय तेजी से आगे की ओरी बढ़ रहल बा, जमाना बदल गइल, रहन बदल गइल। विकास के रंग चारु ओरी लउकता अब एगो एक्स्ट्रा चक्का लागल 'शान की सवारी ये हमारी' स्कूटर बीतल जमाना के बात हो गइल। टूलकिट आजुवो बा आधुनिक दुपहिया में लेकिन ओकर हालत ठीक ओह मखमली बुट्टेदार मियान में राखल मोर्चाइल तलवार नीयन बा जवन दूल्हा के कमर पर खाली देखावे खातीर बान्हल जाला ओकर उपयोग कुछऊ ना होला।

इहो पता चलल ह कि आजकाल के टायर ट्यूबलेश होखत बाड़न स, पंचर भइलो पर ओमें हावा रहता, ओके उगरा के लेके जाइल जा सकत बा, शराबी नीयन लहराला ना, आ तनी गुनी बानी त पंचर खुदे बना सकत बानी।

ई इकीसवीं सदी के हाई-फाई दुपहिया हवन स, बटन दबवते भर से चालू हो जात बाड़न स। हमनीके समय के स्कूटर नीयन नाही जबले थोरकी टेढ़ क के जमीन के ना देखावल जाव आ दस बारह दुलत्ती नीयन किक ना मारल जाव चालू होखे के कवनो सुगबुगाहट ना लउके। तब स्कूटर के स्टार्ट भइल एगो नावा खुशी दे जाव चालक के भी आ मय परिवार के भी, मेहरारू पाछे आ बाल गोपाल लोग आगे आराम से खाड़ हो जात रहे, मय परिवार के सवारी के रूप में एकर ख्याति रहे।

माने के पड़ी कि परिवर्तन वाला गाड़ी के रफ्तार बहुते तेज बा। सब कुछ बदल गइल आ बदले के गति अबहियो चालू बा। मानवीय मूल्य के भाव नीचे की ओर त रोजमर्रा जिंदगी में काम आवे वाली चिञ्जन के दाम आसमान छू रहल बा। जीवन-मूल्य ओह स्टील के गिलास नीयन हो गइल बा जवन चायपत्ती के साथ बिना दाम के भेटा जाला।

ओइसे त बड़ा किल्लत बा ऑक्सीजन के एह कालखण्ड में लेकिन इंसानियतो के एकर बहुते जरूरत बा। जवन आई सी यू में बिया। आपदा में भी कुछ लोग अवसर ढूँढ रहल बा कमाई के। लानत बा अइसन कमाई पर। जय हो लोकतंत्र के। आम आदमी के मददगार भगवाने बाड़न। उनकरे भरोसा बा। □□

○ गाजीपुर, उत्तरप्रदेश



तारकेश्वर राय 'तारक'

कइसन रोग कोरोना बा...

आकाश महेशपुरी

पहिले के दिन लौटी कबो बुझाते नइखे
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

पूजा गाँवे गाँवे भइल कसाई के
माटी खोनि हलावल गइल मिठाई के
थरियो पिटला से त तनिक डेराइल ना
कहीं चुनावे में कहिओ उपराइल ना
इस्कूले गइला से कबो डेराते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

विद्यालय पर ताला जबसे लागल बा
लइकन के शैतानी सगरो जागल बा
रहनो कुछ बुढ़वन से लइका सीखे सन
माँग माँग के सुर्ती गुटखा चीखे सन
पढ़ला लिखला के त कवनो बाते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

सगरो दुनिया मोबाइल में घूसल बा
मित्र मण्डली हीत—नात सब छूटल बा
आइल—गइल बंद भइल ससुरारी के
उमर बढ़ल बा मुर्गा अउर बरारी के
चोखा से बेसी अब कुछु भेटाते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

साबुन सेम्पू नइखे ना बा कंधी ले
चालू रही लागत बा ई बंदी ले
पति—पत्नी के झगरा बढ़ल बुलंदी ले
फाटि गइल बा कुर्ता अउरी बंडी ले
झगरा के ई भूत अभी उधियाते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

येकरा डरे सभे इहाँ डेराइल बा
पूरा दुनिया बंद भइल घबराइल बा
बाकिर दारू से कोरोना भागेला
कोरोना के बैरी साइत लागेला
मयखाना प लाइन कबो ओराते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

परसादी के तरिये रोज बतात हवे
मेहनतकश बा उहे लाठी खात हवे
बिन गलती रोवत आ टोवत जात हवे
लोकतंत्र पर कइसन ई आघात हवे
भीड़ बढ़ावेला ऊ कबो थुराते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

काम कइल जाताटे दुखवे बाटे के
चाहत ना रहनी हँ बात उपाटे के
हालत देखीं जा के रउआ हाटे के
मजदूरा लो घर के बा ना घाटे के
सत्ता के अब मद में पीर सुनाते नइखे—
कइसन रोग कोरोना बा कि जाते नइखे

□□

○ कुशीनगर, (उ.प्र.)

गीत

आनंद पांडेय

हाय रे कोरोना हाय हाय रे कोरोना,
टोनहीन से तेज तोर लागता टोना।
हाय रे कोरोना हाय हाय रे कोरोना।।

कतने सोहागिन के पोछले सेनूरवा,
दिहिते बताई कवन भइले कसुरवा।
लोरवे से भरल देशवा के कोना कोना,
हाय रे कोरोना हाय हाय रे कोरोना।।

कोसता गरीब एगो अपना नसीब के,
कवनो बेमारी काहें मारे बस गरीब के।
सबकर जिनीगिया लागल जाता लौना,
हाय रे कोरोना हाय हाय रे कोरोना।।

पांडेय आनंद मंद होता सहनाई,
लागताकेहू रहे ना पाई।
सुन भइल जाता कतने ओढ़ना बिछौना,
हाय रे कोरोना हाय हाय रे कोरोना।।

बलिया, उत्तर प्रदेश

पाँच कवः भीतर तब देवता पीतर

मार्कण्डेय शारदेय



भारतीय संस्कृति गजब लचकदार बिया। मानीं भा ना मानीं, एकरा पर बाहरी प्रभाव के कवनो टिकाऊ आ आन्तरिक असर ना होले। ई बाहरी संस्कृति आ धार्मिक विचारनो के सबके समेत के, सबके साथ लेके चलेवाली हिये। एही से रउरा नास्तिक होखीं भा आस्तिक, ई कवनो दुराव ना राखे। रउरा आत्मकेन्द्रिते होखीं भा परम उदार ई रउरा के कबो दुरदुरावे के भवना ना राखेले। एहिजा आस्तिको के कतने धर्म-पन्थ बाड़ें, बाकिर शास्त्रार्थ भले होखे, छत्तीस के बदले तिरसठे भा तैंतीसे के सम्बन्ध रहेला।

एहिजा केहू के बिहान धरमे करम से शुरु होला ते केहू के सूती-ऊठी खाते-पीयते। केहू परमात्मवादी बा ते केहू देहात्मवादी। केहू देवता-पितर के पूजा बड़ मानेला, ते केहू माइये-बाबू के। केहू कार्तिकेय जी लेखा कार्यसिद्ध करे खातिर सउँसे धरती के परिक्रमा करेला ते केहू गणेश जी लेखा माता-पिता के परिक्रमे में समस्त भूमण्डल के प्रदक्षिणा मानेला। कवनो मेहरारू पतिये के परमेश्वर मानेली ते कवनो मन्दिर-मन्दिर जाके जल ढरकावेली, बाकिर पति आ सासु-ससुर के कवनो गिनती में ना राखेली। एहिजा आजुओ ना ते श्रवणकुमार के कमी बा आ ना सीता-सावित्रिये के। जवन-जइसन खोजबि, तवन सहजे मिली। उपमान पर उपमान जुटावत जाई, अनघा उपमेय मिलत जइहें। एहिजा के दर्शनो एक से एक बाड़ें। निराकारो बा एहिजे, साकारो बा एहिजे। बाताबाती भले हो जाऊ केहू केहू पर भले गभिया चलावे, बाकिर केहू केहू के अछूत ना माने।

हमनी के आस्तिकता वेद पर आधारित बिया। एही से हमनी के धरम-करम श्रुति-स्मृति पर आधारित बा- "श्रुति-स्मृति-विहितो धर्मः"। पुराणो वेदे के उपबृंहण (विस्तार) मानल गइल बाड़ें। एह से वेद-पुराण से अलग जे -धर्म-कर्म बाड़ें ऊ धर्माभास कहल गइल बाड़ें। आस्तिकता के आधार कर्मवाद बा। जवना के अन्तर्गत पुनर्जन्म, स्वर्ग-मोक्ष आ पाप-पुण्य के विभाजन आवेलें। दूसरा लोकायत- जइसन नास्तिक दर्शन बा, जेकर पूरा विश्वास हऽ कि स्वर्ग-नरक, आत्मा-परमात्मा, देव-दानव, पाप-पुण्य, आत्यन्तिक सुख के प्राप्ति आ आत्यन्तिक दुख से निवृत्ति कुछुओ ना होलें। ई शरीरे आ ई संसारे सब कुछ हऽ। प्रत्यक्ष के ही प्रमाण मानेवाला एह मत के मोताबिक-

'लोकसिद्धो भवेद्राजा परमेशो नापरः स्मृतः।

देहस्य नाशो मुक्तिस्तु न ज्ञानान् मुक्तिरिष्यते'।।

अर्थात् संसार के द्वारा मानल गइल राजा ही परमेश्वर हवें, कवनो दोसर ईश्वर-परमात्मा ना होखे। देह के नाशो मुक्ति हऽ, ज्ञान से मुक्ति ना होले (ऋते ज्ञानान् मुक्तिः-ई कथन

बेकार बा।) एही से नु प्रत्यक्षवादी चार्वाक दर्शन के मुख्य कहनाम बा जे जबले जीये सुख से जीये, करजा ले ले घीव पीये...।

खैर, देवगुरु बृहस्पति ना, कवनो दोसर बृहस्पति के ई विचार हऽ। बाकिर हमनी के अपना धर्मशास्त्रन पर पूरा विश्वास बा, अटूट श्रद्धा बिया। हमनी के कर्मफल मानींले जा, जेकर संचित, संचायमान आ प्रारब्ध ई तीन रूप बा। हमनी के कइल पाप भा पुण्य कबो ना कबो, कवनो ना कवनो जन्म में अवश्य फल देलें- 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्'। करमे से मानव-देह मिलल बा आ करमे से मोक्षो भा देवत्वो प्राप्त हो सकेला। मनुष्य सत्कर्म ना करी तऽ पतन के ओर बढ़त अनेक जनम लेत पशु-पक्षी कीड़ा-मकोड़ा पेड़-रूख बनत जाई। एही से चौरासी लाख तरह के योनि बतावल गइल बाड़ी सँ। एही से भोगो में योग के स्थापन बा। एही से पाँचगो कर्म प्रत्येक गृहस्थ खातिर निर्धारित बा- ब्रह्मयज्ञ (अध्ययन-अध्यापन), देवयज्ञ (देवाराधन-हवन, पूजन), पितृयज्ञ (पितरन के तर्पण-श्राद्ध), भूतयज्ञ (बलि-वैश्वेदेव-भोजन बनला पर अपना भोजन में से अनूना अग्नि, सोम, अग्नि-सोम, विश्वेदेव, धन्वन्तरि, कुहू, अनुमति, प्रजापति आ स्विष्टकृत् हवन के बाद अनुचरन के साथ, इन्द्र, यम, वरुण आ चन्द्रमा के आ एकरा बाद मरुत के जल के वनस्पतियन के, लक्ष्मी के भद्रकाली के, ब्रह्मा जी के वास्तु के, विश्वेदेव के, दिन में आ रात में विचरण करेवाला प्राणियन के, सभ प्राणियन के, पितरन के, कुत्ता के, कमजोर-असहाय लोगन के आ कीड़ा-मकोड़न के कुछ अंश देबे के चाहीं), नृयज्ञ (अतिथि-सत्कार)- एह पाँचो के कइला के बाद बाल-बच्चन के नवहर कनिया के आ सेवकन के भोजन देला के घर के मालिक के खुद भोजन करे के धार्मिक विधान ह। एह कृत्ये से भोजन शुद्ध होला। काहें कि ऋषि, पितर, देवता भूत आ अतिथि ई गृहस्थन से आशा रखेलें-

ऋषयः पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा।

आशासते कुटुम्बिभ्यः तेभ्यः कार्यं विजानता।।(मनुस्मृति:3.80)

एह से गृहस्थ के देवता, ऋषि, मनुष्य, पितर आ घर के देवतन के पूजा से बचल यज्ञशेष अन्न से ही आपन भरण-पोषण करे के चाहीं। ना ते पाप-भक्षण हो जाला। मनु महाराज के कथन बा-

देवानृषीन्मनुष्यांश्च पितृन् गृह्यांश्च देवताः।

पूजयित्वा ततः पश्चाद् गृहस्थः शेषभुग्भवेत्।।

अघं स केवलं भुंक्ते यः पचत्यात्मकारणात्।।(3.117-118)

एही पंचयज्ञे के विस्तार हमनी के समस्त आचरण, व्रतोपवास, पूजा-पाठ, तर्पण-श्राद्ध, दान आदि हवें। उत्तम समय में उत्तम कर्म कइला के फलो उत्तमे होला, एही से यज्ञादि के शुभ मुहूर्त जाने खातिर ज्योतिष के प्रचलन भइल, तिथियन के आधारो पर स्वामी देवी-देवता, पितर आदि के विशेष स्थान दियाइल।

अलग-अलग महीनो के अलग-अलग मान बढ़ल। पितर लोगो 'आब्रह्म-स्तम्भ-पर्यन्त' अर्थात् परब्रह्म परमात्मा से लेके समस्त जड़-चेतन तक व्याप्त बाड़ें। अइसे ते दिवंगत सपत्नीक पिता, पितामह, प्रपितामह आ सपत्नीक मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह- ई पितृकुल आ मातृकुल के तीन पुस्त के लोग मुख्य होला, बाकिर इनिकरो पुरुखन के पुरुखन के जोड़ला से सृष्टि के आदि बीज तक पहुँच हो जाला। एही से कव्यवाद् अनल, सोम, यम, अर्यमा, अग्निष्वात्, सोमप आ बर्हिषद- ई सात दिव्य पितरन के अतिरिक्त मरीचि आदि पितर, पितृपत्नी, पितृसुत तथा पितृगण के हमनी किहाँ श्रद्धास्पद स्थान बा।

पितृकुल आ मातृकुल के तीनों पुस्त के पूर्वज भले तर्पण आ पार्वण में क्रम से वसु, रुद्र, आदित्य के नाम अत्यन्त करीबी भइला से तर्पण के तिल-मिश्रित जल आ पार्वण श्राद्ध के पिण्ड के विशेष अधिकारी होलें, बाकिर हमनी का अपना अनजान अउर ऊपर के पितरन के बिसार ना दीहीला जा। पिण्डदान में लेपभागी (तरहत्थी में लागल पिण्ड के अन्न खायेवाला) कहिके अउर ऊपर के पुस्त तक पहुँचे के कोशिश करीला जा। एह से सृष्टि के आदि से आजु तक उतार क्रम से भा आजु से सृष्टि तक चढ़ान क्रम से आपन पितर लोग के सश्रद्ध स्मरण करीला जा।

ई बात आजुए के ना हऽ। ऋग्वेदे के समय से भा ओ. करो पहिले से हमनी के परम्परा से अपना ज्ञात-अज्ञात पितरन के प्रति श्रद्धा समर्पित करत आवत बानी जा। एही से ऋग्वेद के ऋषि कहेताड़ें-

ये चेह पितरो ये च नेह यँश्च विद्म यँ उ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिः यज्ञं सुकृतं जुषस्व ॥
(ऋग् 10.15.13)

अर्थात् जे हमनी के मन-मस्तिष्क में बनल-बसल बाड़ें, जेकर आकृति के हमनी का भूल गइल बानी जा, जेकर गुण-यश ज्ञात बा, अभी स्मरण में बा तथा जिनिकर रूप-गुणो से हमनी का दूर हो गइल बानी जा, ओह सभ के अग्निदेव जानेलें। हे जातवेद! यानी संसार के समस्त उत्पन्न प्राणियन के जाननेवाले अग्निदेवता! हमरा द्वारा अपना समस्त पितरन के निमित्त अच्छा से तैयार कइल एह हवि को रउरा आपन स्वधा शक्ति से स्वीकार करी।

पितृयज्ञ के रूप में नित्य श्राद्ध के विधान तऽ बड़ले बा, प्रत्येक अमावस्या तिथि के स्वामी पितरे लोग हऽ आ आसाढ़ के बाद के पाँचवाँ पख पितरे के पख हऽ। एही से एकरा के पितरपख भा पितृपक्ष कहल जाला। दक्षिणायन में प्रायः कन्या राशि आ हस्त न क्षत्र के सूर्य के रहला पर कुआर के अन्हरिया (आश्विन कृष्ण पक्ष) में पन्द्रह दिन (कुछ मत सोरह दिन के बाड़ें। एकरो दू रूप बाड़ें। कुछ मत भादो के पूर्णिमा से कुआर के अमवसा तक बा ते कुछ मत कुआर बदी परिबा (आश्विन कृष्ण प्रतिपदा) से कुआर सुदी परिबा (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा) तक) पितरन के उत्सवकाल मानल गइल बा। एह समय कइल गइल पितरन के यज्ञ ओहन लोग खातिर विशेष तृप्तिकारक आ करेवाला खातिर अनेक उत्तम फल देबेवाला होला, अइसन शास्त्रन के कहनाम बा। शास्त्रमत

कइला से स्वाथ्यलाभ, दीर्घायु पुत्र-पौत्र के प्राप्ति, धन-धान्य के वृद्धि, यश, ज्ञान, कार्यसिद्धि, कुलवृद्धि आदि के साथ मरला के बाद स्वर्ग-मोक्ष अर्थात् उत्तम गति प्राप्त होले। एही से कहल गइल बा-

आयुः प्रज्ञां धनं विद्यां स्वर्ग-मोक्ष-सुखानि च।

प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः ॥

आयुः पुत्रान् यशः कीर्तिं तुष्टिं पुष्टिं बलं श्रियः।

पशुं सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात् ॥

किन्तु स्मृतिसार में कहल गइल बा जे विवाह, यज्ञोपवीत, चूडाकरण (मुण्डन) आदि में आभ्युदयिक श्राद्धं करेके विधान बा। कुछ लोग के नाहियो होला। एह से यदि ऊ भइल होखी ते एक वर्ष तक महालय के श्राद्ध निषिद्ध बा, अर्थात् मना बा। एह निषेध के एक वर्ष के अतिरिक्त छव महीना आ तीन महीना के रूप में विकल्पो बाड़ें। अर्थात् छव भा तीन महीना बीतला पर कइल जा सकेला। कथन एह प्रकार से बा-

विवाह-व्रत-चूडासु वर्षमर्धं तदर्धकम्।

पिण्डदानं मृदा-स्नानं न कुर्यात्तिल-तर्पणम् ॥

पितरपख में रोजे तर्पण आ पार्वण कइला के महातिम हटुए। जे रोजे ना कर सके ओकरा पंचमी से अमावसा तक आ जे अतनो ना कर सके ओकरा दशमी से अमावसा तक अवश्य करे के चाहीं। जेकरा एकदमे सकान नइखे अर्थात् तन, मन आ धन से जे लाचार बा ओकरा कमसे कम एको दिन पिता के मृत्युतिथि के भा अमावसा के तर्पण आ पार्वण करे के चाहीं। काहें कि पितर लोग अपना वंशजन से नित्य अन्न (पार्वण के पिण्ड) आ जल (तर्पण के तिल-मिश्रित जल) के अपेक्षा राखेलें-

'आषाढीमवधिं कृत्वा पंचमं पक्षमाश्रिताः।

कांक्षन्ति पितरः विलप्ता अन्नमप्यन्वहं जलम् ॥

एह से अगर पूरा पख रोजे ना कर सकीं तऽ कम-से-कम एको दिन अनेक कष्ट सहिके एह देह के विकसित करेवाला माता-पिता आदि के पवित्र स्मृति में श्रद्धा अवश्य निवेदित करे के चाहीं। जइसे बाल-बच्चन के हाथ से एक टूका रोटी, एक कवर भात भा एक चुटुकी सातू से माई-बाबू परम आनन्दित होलें, ओसहीं पितृपक्ष में एको दिन पितरन के निमित्त कइल कृत्य के कम महिमा नइखे। कहल गइल बा-

'आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे।

यो वै श्राद्धं नरः कुर्याद् एकस्मिन्नपि वासरे।

तस्य संवत्सरं यावत् संतृप्ताः पितरो ध्रुवम् ॥

अर्थात् आसाढ़ के पूर्णिमा के पंचम पक्ष में जब कन्या राशि के सूर्य रहसु तऽ एको दिन श्राद्ध कइला पर साल भर तक पितर लोग तृप्ति के अनुभव करेलें (अगर पितरपख भर रोजे कइल जाउ ते का कहे य 'अधिकस्य अधिकं फलम्' हो जाई)।

वस्तुतः ई पितरन के पर्व हऽ आ पर्व पर कइल पिण्डदान के पार्वण श्राद्ध कहल जाला। पार्वण श्राद्ध में पितृकुल से क्रमशः पिता, पितामह आ प्रपितामह के, फिर माता, पितामही आ प्रपितामही के अलावे सपत्नीक मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह के आसन-पूजन के साथ पिण्डदान होला। पहिले दूनो कुल के अलग-अलग विश्वेदेव के आसन-पूजन होला, तेकरा

बादे पिण्डदान कइल जाला। पिता से लेके वृद्ध मातामह तक नौ लोग बा एह से नवदैवत भी कहल जाला। कहीं-कहीं पितृकुल के भी सपत्नीक कर दीहल जाला तऽ षडदैवत कहल जाला। नवदैवत में नौ गो आ षडदैवत में छव गो आसन-पिण्ड रहेलें।

एह समय गयाश्राद्ध के भी बड़ महातिम बा। देवीभागवत में पुत्र के पुत्रत्व पर कहल गइल बा—

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।

गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।।(6.4.15)

अर्थात् जब तक माता-पिता जीवित बाड़ें, तब तक उनुकर आज्ञा के पालन कइल, उनुका मरला पर मृत्युतिथि पर भरपूर श्रद्धा से यथाशक्ति पिण्डदान आदि कइल आ पितरन के उद्धार भा कल्याण खातिर गयाश्राद्ध कइल, ईहे तीनगो पुत्र के पितृपरक मुख्य योग्यता हई सँ।

आजु ई तीनों गुण घवाही लउकताड़ें। एकर कारण आजु के विज्ञानवाद में खोजीं, पूँजीवाद में खोजीं भा संचारवाद में खोजीं, बाकिर मुख्य कारण बा स्वार्थवाद-आत्मकेन्द्रित भइल। एही से ओकर (पुत्र के) आस्था मरणासन्न बिया, सदाचार कार्यसिद्धि पर ठहरल बा, जीवन-सुख लोभ-मोह के बैसाखी ले के मृगमरीचिका में भरमऽता। ऊ आपन चाहत खातिर कोहू के कुछुओ कर सकऽता, फिर बाबू-माई कवना खेत के मुरई बाड़ें। हँ, अपवादो कम नइखे कि विश्रवा मुनि किहाँ रावण आ हिरण्यकश्यपु किहाँ प्रह्लादो आजुओ होलें। कतना लोग तऽ अइसनो बाड़ें जे माई-बाप के जीयते खूब सतावे लें आ मुअला पर समाज के देखावे खातिर बड़-बड़ श्राद्धभोज करेलें। ई भारतीयता ना हियऽ। भारतीयता 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के हिमायती हियऽ। एही से हमनी किहाँ तर्पण में पिता, दादा, परदादा, माँ, दादी, परदादी, सौतेली माँ, नाना, परनाना, वृद्ध परनाना, नानी, परनानी, वृद्ध परनानी, पत्नी, पुत्र-पुत्री, चाचा-चाची, चचेरा भाई, मामा-मामी, ममेरा भाई, आपन भाई-भौजाई, भतीजा, फूफा-फूआ, फुफेरा भाई, मौसा-मौसी, मैसेरा भाई, आपन बहिन-बहनोई भगिना, ससुर-सासु, गुरु-गुरुआइन, शिष्य, संरक्षक, मित्र आ सेवक जे-जे रहल आ जे-जे मर गइल ओह सबके तिल-मिश्रित जल से तृप्त करे के विधान भारतीय हृदय के उदारता के पहचान हऽ। अतने ना, हमनी के कुल में जे गर्भावस्था में भा बचपने में मर गइल, जे एह जनम में भा कवनो जनम में हमार बन्धु-बान्धव रहल, मित्र भा नातो में सम्बन्धी रहल, ओह सबके जलांजलि देके तृप्ति-प्रदान कइल भारतीयता हिये। अतने ना, सातो द्वीप में भा चौदहो भुवन में रहेवाला करोड़ों कुल पहिले जे लोग आपन रहन, ओह लोगन के तर्पण कइल भारतीय भावना हिये। अतने ना, देव, राक्षस, यक्ष, गन्धर्व, पिशाच, भूचर, खेचर, जलचर, नरकगामी जीव, यातनाग्रस्त जीव, समस्त पेड़-पौधा, घास-तिनका भा जड़-चेतन के नाम पर जलांजलि दीहल भारतीय उदार चेतना के अद्वितीय निदर्शन हऽ। फिर हमनी का प्रत्यक्ष प्रकृति-पुरुष भा पार्वती-परमेश्वर अपना माता-पिता के कइसे अलगिया सकतानी जा? ई तऽ महापाप बा। जे अइसन करता, ओकरा

कवनो यज्ञ-पूजन के फल कबो ना मिली। शास्त्रानुसार अइसन पशु-प्रवृत्ति वालन के सुगति कबो ना हो सकेले। द्रव्यहारी आ न्यासस्वामी भइल पुत्रत्व ना हऽ। पुत्रत्व तऽ सब तीर्थन से बढ़िके जंगम तीर्थ हऽ- 'सर्वतीर्थाद् वरं तीर्थं पुत्रतीर्थमुदाहृतम्'।

जहँवा सन्तानलाभ के सब तीर्थन में कइल स्नान, सब तरह के कइल पुण्यप्रद यज्ञ आ समस्त पृथ्वी के कइल गइल प्रदक्षिणा से बढ़िके मानल गइल बा, ओहिजा कुपुत्र के भइला पर 'पुम्नाम नरकात् त्रायते इति पुत्रो पुत्री वा' के परिकल्पना पर वज्रपाते नु कहल जाई।

रउरा कइसनो होखीं, स्वार्थी भा परमार्थी। बाकिर माता-पिता के मत बिसारीं। कवनो बात के रउरा दुखो हो सकेला, तबो उनुकरा के दुख मत दीं। पुरु वगैरह मत बनीं, बाकिर पुत्रधर्म से अलग मत होखीं। जब तब जीयऽताड़ें तब तक शक्तिभर उनुकर सेवा करीं आ मरला के बाद अप्रत्यक्ष, कहीं अउर जगह गइल भा कवनो अउर रूप में रहत मानिके उनुका खातिर तृप्तिकारक कृत्य जरूर करीं, ईहे भारतीय अवधरणा हियऽ। काहें कि हमनी के शास्त्र कहताड़ें जे हमनी के पुरुखा कवनो योनि में रहसु, उनुका नाम पर कइल धार्मिक कृत्यन के फल मिलेला, उनुका तृप्ति होले, अइसन तत्त्वदर्शी ऋषि-मुनियन के कथन बा। प्रयोगशाला के सिद्धि ना, धर्मकृत्य पर श्रद्धा मानीं—

'प्रत्ययो धर्मकृत्येषु दृढश्रद्धेति उदाहृता'।

'पाँच कवर भीतर तब देवता पीतर'— ई कहाउत स्वार्थ आ श्रद्धा के मिश्रण के उपज बुझाता। पेटपूजा के बड़ मानेवाला लोग भा सूती-ऊठी चाय-नास्ता करेवाला लोग नास्तिके ना होलन। उनुकर आस्था पर पतझर ना कहाई। चाहे जवने कारण, ऊ भले कुछ खा लेसु, बाकिर नहा-धोके एगो अगरबत्तियो भगवान के जरूरे देखावलें, बाप-महतारी के तस्बीर पर माला चढ़ावलें भा देवता-पितर लोग के कवनो विधि आस्तिकता से याद करेलें।

एहिजा 'पाँच कवर' कहलो धार्मिकते के सूचक बा। काहें कि एकरा के प्राणाग्निहोत्र कहल जाला, जवन, समस्त यज्ञ के फल, जन्म, मृत्यु आ बुढ़ापा से मुक्ति देबे वाला हऽ। भोजन शुरू करत खानी पहिले "प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा"—एह पंचाहुतियन के विधि पान बा आ सबके नित्य करे के चाहीं। एह से अइसन कहेवाला भा करेवाला लोगन के नास्तिकता के नजर से ना देखे के चाहीं। हमनी के उदार संस्कृति अवगुण के अनदेखी करके गुणग्रहण पर जोर देले। एही से कवनो आँधी-तूफानो एकरा के ना बिगाड़ पावल आ ना बिगाड़ पाई।

□□

- सी/603, पाटलिग्राम अपार्टमेंट, बजरंगपुरी गुलजारबाग, पटना (बिहार)
मो. 8709896614



अतने कहे के बा

डॉ. बलभद्र

जियादा कुछ नइखे कहे के। बस अतने कहे के बा कि हमहूँ जब छोट रहीं आने कि कम उमिर के, त इहे सुने आ जाने के मिले कि गाँधीजी त समझौतावादी रहलें। आजादी के ऊ समझौता बना देले रहलें। ऊ का कइलें! कुछो ना। असली लड़ाई त भगत सिंह, आजाद आ सुभाषचंद्र बोस लडलें। ऊ लोग जे गांधी के मजाक उड़ावे, ना गांधी के बारे में कुछ जानत रहे आ ना भगत सिंह के बारे में। बस इहे जाने कि भगत सिंह असेम्बली में बम फोडलें आ फांसी प हंसते हँसत झूल गइलें।

हम भगत सिंह आ आजाद के पासपोर्ट साइज के फोटो जब इंटर में गइलीं त पाकिट में लेके चले लागल रहीं। बाकी कुछ पढ़ले ना रहीं एह लोग के बारे में। बस कुछ मास्टर टाइप लोगन से सुनले रहीं। आ साँच कहीं त ऊ मास्टर टाइप लोग बड़की जाति के रहलें। जे आचार्य चतुरसेन के 'वयम रक्षामः' में उभचूभ, गाँव-जवार में विद्वान आ बुद्धिजीवी कहात रहलें। हं, एगो किताब 'तरुणाई के सपने' (सुभाष बोस) के कुछ अंश पढ़ले रहीं। महाराजा कॉलेज, आरा के लाइब्रेरी से। ऊहो उपरे-झापर। एह लोग के बारे में बाबूजी (बड़का बाबूजी) जबे तबे बतावत रहलें। गांधीजी, नेहरू, पटेल, भगत सिंह,

आजाद आ सुभाष बाबू के बारे में। ऊ जवन बतावत रहलें तवन उनकर पढ़ल रहत रहे। किताब प्रेमी रहलें। बाकी उठना-बइठना ओही तथाकथित जमात में रहे। से कवनो एक ठहर प ठहरे के उनका सरगंव ना मिल पावत रहे।

बाद में,सन 1987 में जब वाम के बूझे-समुझे देने मन लरके लागल, आ कुछ करे के शुरुआत भइल, त कुल्हि 'वयम रक्षामः' प्रेमी टूट परले। अजबे बोल हो गइल ओह लोग के। हम कहीं कि रउवा सब जे भगत सिंह के पसन करीला, ऊ वाम विचार के रहलें। त ऊ लोग काहे के बूझो। का मतलब! आ गांधी जी के लेके वाम के भितरो कवनो सकारात्मक बहस हम ओह बखत ना पवले रहीं। हो सकेला गम्भीर वाम बुद्धिजीवी के बहुत नगीच ना रहला के चलते हमरा अइसन लागल। बाकी जेकरा साथे काम करे के रहे,ऊ गांधीजी के लेके बड़ा कचलोहिया विचार राखत रहे।एह के चलते वाम जनाधार में गांधी ठीक से ना पहुंच पवले।

गाँधी विरोधी आज पावर में बा लोग। रहे लोग। बाकी गाँधी जी के जाने,माने आ पढ़े वाला लोग भी बढ़ि रहल बाड़न।

□□

○ गिरीडीह कालेज, गिरीडीह (झारखंड)

गजल



संगीत सुभाष

तीन गज बखरा बदे नापे चलल आकास के।
चार आंगुर जिन्दगी बा हाथ भर बिसवास के।

जेठ के ताँतल दुपहरी के मिलल बरदान बा,
का पता कहवाँ रहेला दिन मधुर मधुमास के?

रीसि में मरजाद तूरत सब्द छिछला नित गढे
ऊ समुझि पाई ना' कबहूँ प्रीति के, एहसास के।

नीनि आँखिन बीच बा तकरार बिस्तर का करी?
रात भर गिनती भइल आइल गइल हर साँस के।

साँझि दूसर, भोर दूसर, राति में तीसर कहे
का पता कतना लसरहैं अउर ई इतिहास के?

नेह के मड़ई छवाइल गाँठ कइसे खुलि गइल?
ले गइल किस्मत उड़ा के पात जइसे ताश के।

कौन बिध ऊ बात भूलीं पुश्त सब जे में खपल।
जबकि ई हउवे कथा संघर्ष के, परयास के।

सुति गइल सारा जमाना चैन से मुँह तोपि के
छेड़ि के 'संगीत' भइनीं पात्र हम परिहास के।

□□

○ प्रधान सम्पादक, सिरिजन, भोजपुरी पत्रिका



नयका चइता

सुरेश कांटक

बड़ा दुख देवेला कोरोनावा हो रामा !
चइत महीनावा !

कुछ त मारेला बैरी सरदी बुखार वा !
कुछ खॉसी, साँस फूले सूनी लागे घर वा !
कुछ मारे भुखिया करनवा हो रामा!
चइत महीनावा !

बंद कारोबार भइले चढ़े लोग सुलिया !
बंद कारखानावा आ बंद इसकूलिया !
अँटकल आकाश में परानवा हो रामा !
च इत महीनावा !

मुँहवा प जाब लागल छव फीट दूरिया !
मिलल बतियावल बंद भइल मजबूरिया !
चले एके दुई गो दुकनवा हो रामा !
चइत महीनावा !

बेरी बेरी कांटक सतावे महमरिया !
कवन दुसमनवा भेजेला ई बेमरिया !
फूले ना बसंती अरमनवा हो रामा !
चइत महीनावा !

□□

○ बक्सर, बिहार



गजल

मदन मोहन पाण्डेय

रोज मरघट पर दीया जराइले हम।
सांचे पथले पर दुबिया जमाइले हम।।

आगि लागल भले हमरे मड़ई में बा।
लोग सनकी कहे, गीति गाइले हम।।

फेरि के मूंह काटे किनारा सभे,
आजु समुझेला हमके बेचारा सभे।

केहू गहंकी ना एइजा देखाइल कबो।
का करीं आपन गठरी लुटाइले हम।।

फूल केतने फुलाइल बा फुलवारी में,
डूबि जाला ललक मन के लाचारी में।

लोग के देखि के लीकि खिंचनी कबो।
आजु अपने खिंचलका मेटाइलें हम।।

एक तऽ बीरान अपने बगइचा रहे,
आंखि सोझां हमेशा अन्हरिया रहे।

जवन छुवनी सुमन ऊ हे मुरझा गइल।
कइसे का भइल,किछु ना जानीले हम।।

□□

○ खेसिया, कुशीनगर

दया करा माई

विकास मिश्रा

हमरा पर तनी दया करा माई
कुछ अइसन उपकार करा,
नवका बरिस में तू आपन
चमत्कार के साकार करा।

संकट में बा सभ आदमी
त्राहि त्राहि बा सगरो मचल,
रोवत रोवत दिन बा कटत
मुक्ति धाम बा सगरो सजल।

टूट पड़ा माई काली बनके
राक्षसन के सँहार करा,
नवका बरिस में तू आपन
चमत्कार के साकार करा।

रोजी रोटी खातिर लोगवा
भटक रहल बा दुनिया सगरो,
अइसन कलयुग आइले बा
विपदा टूट पड़ल बा सगरो।

तू हुउ सगरी लइकन के माई
कुछ अइसन उपकार करा,
नवका बरिस में तू आपन
चमत्कार के साकार करा।

आइल गइल बंद बा सगरो
घरहीं सभे सुतल रहेला,
लइका आ बूढ़ सभे मुर्झाइल बा
माई बाप बिना खइले रहेला।

जवन पापी अत्याचारी बा
ओकरा पर तलवार करा,
नवका बरिस में तू आपन
चमत्कार के साकार करा।

□□

○ गोपालगंज, बिहार



श्रावेला याद

दीपक तिवारी

आवेला याद बहुते गउवा घर दुवार,
लड़काई के बाति माई के लार दुलार।

बीतल दिन घूमे नजरी पर सब हो।
आवेला आँख भरी मन परे जब हो॥
आज ले ना भूलल सिखावल संस्कार..
लड़काई के बाति माई के लार दुलार।

दउड़ल कुदल बेरी,बेरी ढीमुलाइल।
हँसल छने में हो छने में रोवाइल॥
बीच आँगना में रोज होखे बार,बार..
लड़काई के बाति माई के लार दुलार।

दूध भात खाइल ऊ बिसरे ना कबो।
बचपन के याद कुल्ह दिलावेला अबो॥
होली दीवाली दीपक तीज तेव्हार..
लड़काई के बाति माई के लार दुलार।

□□

○ सिवान, बिहार



दिनेश पाण्डेय

ई चाणक्य नीति में श्री दिनेश पाण्डेय जी द्वारा लिखल सरल आ रोचक ढंग से काव्यात्मक भावानुवाद प्रस्तुत कइल जाई। एकर मूल उद्देश्य अपना भाषा के लोकप्रियता बढ़ावे खातिर कइल उद्यम आ साहित्य के समृद्धि बा।

तेरहवाँ अध्याय

छनिको मिलल जिनिगिया हो
नर कर सुभ काज।
कलप-कलप नहीं कलपत हो
बिपरीत समाज। 1

जनि अधीर हिय होखऽ हो
गइला के आह।
जे ना नियरे आइल हो
तिन्ह का परवाह।
आगततरत रह पंडित हो
जुगवे उतजोग।
सत्य उहे जिन सनमुख हो
नीके उपभोग। 2

होत प्रसन्न सुभावनि हो
सज्जन पितु देव।
न्हान पान संताननि हो
विद बचने सेव। 3

गजब बिचित्र चरित्तर हो
संतन के होत।
लछिमी के तृन मानत हो
झूके तिन्ह जोत। 4

जे नेहे अझुराइल हो
उहई भयभीत।
एहि कारन दुख पावल हो
जनि करिहऽ प्रीत। 5

बिधि अदीठ काबिल मति हो
दुइ सुख आधार।
भाग्य पाछ जिन्ह भगलन हो
उजड़ल संसार। 6

सत्यशील नृप धरमें हो
नीचू से नीच।
जस राजा तस परजा हो
एहि दुनिया बीच। 7

जीअल मरन सरीखा हो
बिन धरमें देह।
धरमवंत मरजीवा हो
नइखे संदेह। 8

एको गो पुरुसारथ हो
जिन्ह नर में नाहिं।
अजगलथन जस जीवन हो
बेअरथे जाहिं। 9

परजस आगि दगध तन हो
डाही अति नीच।
बखत पाइ पद परिहें हो
फिन डारत कींच। 10

बिसयमुग्ध तन बंधल हो
निर्लिप्ते मुक्त।
बंध-मोक्ष के कारन हो
मन से संयुक्त।
गलते गरब देह-मन हो
बिधना पहिचान।
तब मन जहवें जइहन हो
तहवें निरबान। 11

कइसे सुख अधिकाई हो
सबके मन चाह।
देव अधीन सबहिं कुछ हो
संतोखे राह। 12

सहस धेनु बिच लेरुआ हो
पहिचाने मात।
तइसहिं कइल करमवाँ हो
पिठिअवले जात। 13

बेढब जिनकर कारज हो
जन बन ना चौन।
जरत जने संसरगे हो
बन बिनु जन-बैन। 14

खंतिन खनि-खनि पावल हो
भूतल जल सोत।
तस सेवे सरधा सन हो
गरु ज्ञान उदोत। 15

करम अधीन करमफल हो
मति करम समान।
नीके तबहूँ बिचारि हो
चलले मतिमान। 16

आखर नाँव बतवलें हो
गुरु नहीं सनमान।
स्वान जोनि सत भोगे हो
फिन अंत्यज आन। 17

मेरु डिगे युग अंतर हो
बिलये सतसिंध।
कबो न छाड़ि धरमपथ हो
चलि साधु नरीन्द। 18

कठिन सव्दन के अर्थ-

कलपत- रोवत-कुफुरत। विपरीत समाज- समाज विरुद्ध। गइला- बीतल समय। जे ना नियरे आइल- भविष्य। आगत- वर्तमान। विद- विद्वान। अदीठ- अदृष्ट। मरजीवा- जे मू के जीअल होखे। अजगलथन- बकरा के गला के थैली। निर्लिप्त- आसक्तिरहित। संयुक्त- जुड़ल। लेरुआ- बछड़ा। नरीन्द- नर इन्द्र।
छंद संकेत:- विरहिनी 14-9 मात्रा, समचरणांत (S)

चोटी से आगे

श्री अशोक लव हिंदी साहित्य खातिर एगो सुपरिचित नाम हईं। हिंदी साहित्य के समृद्धि के कहानी बिना ऊहाँ के नाम के जिक्र के पूरा नइखे हो सकत। शैक्षणिक आ साहित्यिक कृतियन के रूप में अब ले लगभग 150 रचना-ग्रंथ प्रकाशित हो चुकल बा। ईहाँ प्रस्तुत बा ऊहाँ के सबसे अधिका चर्चित उपन्यास 'शिखरों से आगे' के भोजपुरी अनुवाद 'चोटी से आगे के धारावाहिक के रूप में कुछ अंश।



मूल उपन्यासकार
अशोक लव

शुद्धि के कहानी...

“अबहिन बच्चा बाड़ऽ विनोद। अबहिन तहके ढेर कुल्ही सीखे के बा। ध्यानावस्था के ओर बढ़ला के बाद तहरा सामने अइसन सवाल ना आई। योग में सिद्धावस्था पवला के बाद संसार के पन्ना खुलत जाला। तहार जिनगी खुलल किताब नियर हमरा सामने बा।”

“साधारण मनई त एह दिशाई आगहीं नइखे बढ़ि सकत नू?”

“साधारण मनई के? सांसारिक काज में लागल सभे मनई साधारण बा। हमहूँ त संसारे के काम करत बानी। ध्यानावस्था के ओर बढ़े ला सबसे पहिले आदमी के आत्मिक उत्थान जरूरी बा। तू अपना आजू-बाजू देखत होखब, कुछ लोग धन बटोर-बटोर ओहके भोग में लागल बा। ओह लोग खातिर धन आ ओहसे मिले वाला आनंदे सब कुछ बा। एह दैहिक आनंद के पावे बदे औरत कुल कई-कई मरद से संबंध राखेली, मरद कई-कई औरतन से। दैहिक भूख पाशविक आदत ह। एह के जेतने बढ़ावल जाई, ई ओतने बढ़त जाई। ये इन्द्रिय सुख में सनाइल मनई साधारण ह।”

“स्वामी जी! गृहस्थ जीवन जीये वाला मनई त एह सब में लिप्त त होइबे करी नू?” विनोद सवाल कइले।

“काहें होई? दैहिक संबंधन से बात शुरू करत बानी। संभोग के त्याग संभव नइखे। जननेंद्रियन के भूख के मेटावल जबले जरूरी लागेला, तब ले मनई के मानसिकता ओह दिशा में भरमत रहेला। तहार बात करेब। तू अविवाहित बाड़। तहरा जिनगी में पुभांगी आ कृति – दू गो युवती अइली। का तू एह लोग से संभोग कइलऽ? ना! काहें? तहार भूख जननेंद्रियन के भूख ना रहे, आ ना बा। तू एह सबसे ऊपर उठ गइल बाड़ऽ। तहार ध्यान दोसरा काम में लागल रहेला। तू एह दिशाई सोचबे ना करेल। गृहस्थ जीवन जीये वाला आदमी अपना कर्तव्य के पालन करत रहे। एकरा साथे-साथ अत्मो के उत्थान करत रहे। परमात्मो के ओर ध्यान लगावे। अपना घरवो में रहि के ध्यान लगावल जा सकत। एही ध्यानावस्था से सिद्धावस्था आवेले। ईश्वर के निकटता मिलेला। आदमी के धीरे-धीरे अपना पाशविक वृत्तियन के षमन करत जाए के चाहीं। आदमी जब 'स्व' तक केंद्रित हो जाला त ओहके खाली आपन देह, आपन परिवेश लउकेला। ओकर समष्टिगत चिंतन मर जाला। हमन के खाली अपने खातिर जनम नइखीं जा लिहले। समाजो खातिर हमनी के कर्तव्य बा। राष्ट्र आ

संसारो खातिर मनी के कर्तव्य बा।”

विनोद के दिमाग के नया दुआार खुलत रहे। उनके अपना अस्तित्व के नया परिभाषा मिलत रहे। स्वामी जी कवनो विचित्र बात ना कहत रहनी। बाकिर एह बातिन पर ध्यान कहाँ जाला। आदमी अपनहीं बारे में ना सोचेला। ऊ खूदे अपना बारे में ना सोचे के चाहेले। के तरे त उलझल रहले हैंऽ।

स्वामी जी उनुके समझावे लगले, “आजु औद्योगीकरण के दुष्परिणाम छछात लउकत बा। उपभोगवादी संस्कृति जनम रहल बा। छोट-छोट परिवार बन गइल बा। आदमी के सोचवो ओतने छोट होत जा रहल बा। मूल्य आ संस्कृति के बारे में केहू के कवनो चिंता नइखे। राजनेतालोग सिद्धांत आ मूल्यन के गटई दबा के सत्ता-पावे आ सुख भोगे में लागल बा लोग। व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय- सगरो चरित्र के सामने सवाल उठत बा। एह सब के पतन होखे से रोके के पड़ी। भारतीय संस्कृति पर टी.वी. के माध्यम से हो रहल आक्रमण के रोके के पड़ी। तू का सोचत बाड़ऽ, देह देखावल का आधुनिकता का पर्याय हऽ? आधुनिकता आ प्रगतिशीलता विचार के धरती पर होखे के चाहीं। आदमी के अंधविश्वासी ना होखे के चाहीं। तर्क के कसौटी पर कस के जिनगी में सिद्धांत बनावे के चाहीं।”

स्वामी जी चुप हो गइनी। विनोद सम्मोहित-जस उनुके टहलत डेग के साथे-साथे चलत रहले। सोफा पर बइठलो के बाद ऊ बइठल कहाँ रहलें!

“विनोद! कुछ काम हमनी के करत बानी जा। ई प्रयास हऽ। समुन्दर में एगो बूनी जइसन। बूँद-बूँद के महत्त्व होली। हमनी के नइखे पता कि हमनी के केतना सफलता मिली। यज्ञ कइल जाता। आगि में समिधा डालला से सुंगधित परिवेश छोटे होला, बाकिर होला त सुंगधिते। एही तरे अगर जगह-जगह पर यज्ञ होखे त पूरा वातावरण सुंगधित हो उठी। हमनी के तहार जरूरत बा। हमनी के काम हमरा मरलो के बाद चलत रहे के चाहीं, तबे त हमनी के आजु के कइल काज सार्थक होई।

“स्वामी जी! हमके का करे के होई?”



“स्वामी जी! हमके का करे के होई?”

“हमार आश्रम देष-विदेष में बा। एहके माध्यम से हमनी का मानव-कल्याण के काम में लागल बानी जा। तू हमानी के साथे आ जा। पुभांगी एह पुण्य के काज में हमनी के साथे बा। एक हप्ता ले दिल्ली में बानी। आलोकानंद-भवन में रुकल बानी, ओहिजा आव। एह मधे आप विप्लेषण करऽ, चिंतन करऽ। स्कूल के सेवा से मुक्त हो जा। आर्थिक पक्ष के चिंता जनि करऽ। आठ-दस-पंद्रह हजार, जेतना पइसा चाहीं, निष्चित कऽ लऽ। ई वेतन ना हऽ। हम तहरा के वेतन नइखीं दे सकत। परमात्मा के पुत्रन में स्वामी-सेवक के संबंध नइखे हो सकत। जवन हमार बा, ऊ सब तहरो ह। उठऽ, जागऽ विनोद!” कहि के स्वामी जी उनुके मुड़ी पर हाथ ध दिहनीं।

विनोद के मुड़ी झनझना उठल। उनके लिलार अद्भुत अँजोर से जगमगा उठल। उनुका रीढ़ के हड्डी में सन. सनाहट-जस होखे लागल। अद्भुत आनंद के अनुभूति! कइसन त अलौकिक प्रकाश! ऊ कहाँ पहुँच गइल रहले! कइसन त सु खद शांति रहे!

ऊ मुनले आँखि से बोले के प्रयास कइले। स्वामी जी सामने बइठल मुस्की मारत रहनीं।

“विनोद, इहे अँजोर साँच ह। एही के पा के समाज में अँजोर फइलावे के काम में लागि जा।... उठऽ, पुभांगी के बोलालऽ!”

विनोद कँवाड़ी खोल के पुभी के बोलावे चलि गइले।

□

प्रेम के स्थिति विचित्र स्थिति ह। मन के अनंत गहराई से प्रेम कइला पर झोरा में निराशा आ जाए त ना जिअल जाला आ ना मरल जाला। रेगिस्तान के जरत बालू पर उघारे गोड़ चलला जइसन हर पल जरे के पड़ेला। गोड़ में झलका बनेला, फूटेला। तबो चलत रहेके पड़ेला। आँठ सूख जाला, जीभ सूख जाले, गटई सूख जाला। परान घेंट में अँटकल रहेला। आस बन्हाइल रहेला कि बस, अब पानी मिल जाई, अब पानी मिल जाई। इहे उमेद जीअवले रहेला। जिनगी जरत बालू पर घिसटात चलल जाले। ओह ताप के पीड़ा तपहीं वाला जानेला।

हिया के दुआर सबके सामने नइखे खोल के राखल जा सकत।

कृति के इहे दषा रहल। ऊ उदास बइठल कविता पढ़त रहली। पता ना ऊ कब ऊ वाला कविता-संग्रह उठा लिहले रहली। उनके उदासियन के कविता अउरी उदास बना दिहले रहे। ऊ पन्ना पटल के आगे के कविता पढ़त बाड़ी- “ईयादन के खुलल आकाश पर/घुम रहल बाड़ी/उदासियन के चिरई/ना जाने कहाँ-कहाँ से/उड़त चलि आ रहल बाड़ी/बइठत जा रहल बाड़ी।/मन-मुंडेर पर। बड़ा रोअले बा मन/भीज गइल बा/हियरा के कोना-कोना/काहें आ जाला बसंत के तुरंत

बाद/पतझड़?/काहें ना भावेली/उदासियन के/खुषी के छोट-छोट/मुस्कात कोमल कोपल।”

विनोद के बारे में ऊ केतना निश्चित रहली। केतना सपना सजवले रहली। प्यार के थीर पड़ल झील के पुभी हिला दिहले रहली। सब कुछ हिल गइल रहे। ऊहो हिल गइल रहली। विनोद त एकदमे बदल गइले। उनका मन में पुभी खातिर फेर से प्यार जाग गइल बा। पति के मरला के बाद पुभी के कवन चिंता! अब ओकर सपना साकार हो जाई। मनई पहिला प्यार ना भुला पावेला। ओह प्यार में निष्कलता होले। इहो नितिन के कहाँ भुला पवली!

मम्मी आके चिट्ठी दे गइली। बिहानहीं डाक से आइल रहे। ऊ नितिन के लिखवट चिन्ह लेली। ऊ चिट्ठी धऽ दिहली। खोले के मनही ना कइलस। का लिखले होईहें! ऊहे सफाई दिहले होइहें।

चुपचाप अमेरिका चलि गइलन। चुपचाप बिआह कऽ लिहले। मरद कवनो ना कवनो बहाना बना लेलें। परिस्थिति... विवषता... पता ना कवन-कवन षब्द-जाल बिनैलें। साफ देह बचा के निकल जालें। बहानाबाज! चालाक! ओकरा बारे में ना साँचेलें, जे के घुट-घुट के जीने खातिर छोड़ देलें। जेकरा बसंत में फुलाइल गुलाब जइसन जिनगी में पतझड़ के नागफनी लेआ देलें।

अमेरिका जाए के बात पक्का होते केतना खुष रहले! फोन क के बोलवले रहले, “आव, आजु तहरा के स्पेसल-ट्रीट देब। अमेरिका जाके पक्का हो गइल बा। कन्फर्म! यस, कृति! आवत बाडू न!” षिप्रा रेस्तरां में आइसक्रीम खात-खात केतना बोलत रहले, “रमाकांत जी बड़ा भलमनई बानीं। अमेरिका में हमरा पढ़ाई के सगरो व्यवस्था करवा दिहले बानी। कम्प्यूटर-इंजीनियरिंग के सगरो खर्चा उठा रहल बानी। आजुकाल्ह अइसन के करे ला? कहत रहनी हँ कि हमारा कारने केहू के जिनगी बन जाव त एहसे बड़ा पुण्य का होई। कृति! तू चिंता मत करिह। लौट के त तहरहीं लगे आवे के बा। हमरा पाछे कवनो भल लइका मिल जाव त ओकरा से बिआह मत क लिह। हमार प्रतीक्षा करबू न?”

ऊ नितिन के आगे बढ़ल हाथ पर आपन हाथ ध दिहले रहली।

कृति अपना हाथ के अकेलापन के देखत बाड़ी। एगो ठंडा साँस लेत बाड़ी।

क्रमशः

○ अनुवादक : केशव मोहन पाण्डेय



एह अंक के चित्रकार

एह अंक के चित्रकार बानी श्री अमित कुमार उपाध्याय जी। अमित जी के जन्मतिथि— 08 मई 1993 बा अउरी ऊहाँ के बी. एफ. ए. (2011–2015) आ एम. एफ.ए. (2015–2017) बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से कइले बानी।

ऊहाँ के कला के प्रति ई मानेनी कि कला के उद्देश्य अलौकिक आनंद दिहल होखे के चाहीं। कला कवनो होखे, सबके लक्ष्य मनुष्य के सुख–दुख से ऊपर उठा के आलौकिक आनंद दिहल हवे।

चइता

बिम्मी कुँवर



बीतते फगुनवा साजन गइले पहड़वाँ।
आहि हो सखि कइसे बीती चइत के महिनवाँ।।
कि आहि हो सखि।

दूई तीन मास अब त सुधियों ना लीहें,
रहिहें बाझल काज में त पतियों ना दीहें,
केकरा से भेजब हम लिख लिख के बयनवाँ।
आहि हो सखि।

बिन उनके देखले हम त साज नाही करब,
भेजे पइसा कतनो हम त राज नाही करब,
भाय भाय करे सखि चइत में अगनवाँ।।
आहि हो सखि।

अइहे जे सावन में त झूलहा हम झूलब,
सोलहों सिंगार करिके साजन संग खेलब,
अगिला चइत किलकिहे हमरी गोदी में ललनवाँ।।
आहि हो सखि।

□□

○ सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

गजल

गीता चौबे 'गूँज'



आ गइल बा प्रेम के दिन, दिल भइल कचनार अब,
फेर जनि आपन नजरिया, नैन कर तू चार अब।

खेत में सरसों फुलाइल, रंग हरदी के लगल,
लाज से धरती लजाइल, हो गइल बा प्यार अब।

प्रीत–चुनरी ओढ़ के जे, डूब गइली प्यार में,
गीत मस्ती के पवनवा, देत बा उपहार अब।

आम के मोजर सुगंधी, दे गइल चहुँ ओर में,
कूक कोयल के सुनीजा, बाग में गुंजार अब।

राग सगरो 'गूँज' गइले, नेह के अनुराग के,
छा गइल देखीं गुलाबी, फाग के झंकार अब।

□□

○ राँची, झारखंड



राजू साहनी

जबसे आइल परधानी

सब कर्मठ सुसील भइल,
हम इहे सुन तानी,
जब से आइल परधानी,
भैया जब से आइल परधानी।

जब से चुनाव के परचा,
भइया लोग भराइल बा।
तबसे हर गली में एगो,
प्रत्यासी भेटाइल बा।।
सब केहूँ हाथ जोड़ के भइया,
देखावत आपन निसानी,
जब से आइल परधानी
भैया जब से आइल परधानी।

जे कबो दुआर प आइल ना,
खोजलो प कबो भेटाइल ना।
आज उहे लउकेले हाथ जोड़ले,
होते साझ बिहानी,
जब से आइल परधानी,
भैया जब से आइल परधानी।

ऊच नीच छोट मोट सब,
भेद भाव भुलाइल बा।
धन्य हो चुनाव देवता,
का निमन दृश्य देखाइल बा।।
लागेला सभे रची इतिहास,
बोलेला अइसन बानी,
जबसे आइल परधानी,
भैया जबसे आइल परधानी।

कमी ना रही सेवा में,
कहेले सीस नेवाई।
मुर्गा मछरी खायेके,
देबेले घरे पहुँचाई।।
अइसन सेवा जदि मिलत 'राजू',
का आवत कवनो परेशानी,
जबसे आइल परधानी,
भैया जबसे आइल परधानी।

□□

○ मदनपुर देवरिया (उ. प्र.)



नइकी माई

अंकुश्री

रामप्रताप के बेटी आ बेटा जवान भ गइल रहे। बेटी के बिआह खातीर ऊ लइका खोजे में लागल रहस। एही बीच उनकर बीमार मेहरारू के तबीयत जादे खराब भ गइल आ ऊ बच ना पइली।

मेहरारू के मुअला के बाद रामप्रताप अनमना जइसन रहे लगलन। कवनो काम में उनका मन ना लागत रहे। कुछ दिन बाद मन बदले खातिर अपना बेटी-बेटा के साथे ऊ धाम पर गइल रहस। होटल से आके घाट पर नहात रहस। ओहीजा एगो औरत से उनकरा भेंट भ गइल। परिचय-बात होखे लागल। ओह औरत के नांव मुन्दरी रहे। गोर-सुन्दर चेहरा। बात करे त बुझाये कि मुंह में मिसरी घोलल बा। बेवहार अइसन कि कोई भी लट्टू हो जाये। रोज सुबह-शाम घाट पर ओकरा से भेंट होखे लागल। ऊ दूनो लइकनो से खूब घुल-मिल गइल रहली।

भेंट-बात होत-होत मुन्दरी से रामप्रताप के अइसन अपनापन बढ़ल कि मंदिरे में माला पहिरा के बिआह कर लेलन आ ओही रात गाड़ी पकड़ के भोरे-भोर घरे आ गइलन। दिन भर में मुन्दरी घर-रसोई सब समझ गइली। रामप्रतापो बहुत खुष रहस। सांझी खानि ऊ अलमारी खोल के ढेर सारा गहना देवत उनका से कहलन, "आज राति खानी पहिर लीह!"

"हं, अब पहिरहीं के नू बा?" मुन्दरी कहली, "काल्हे बन्दिआ से नहा-धो के पहिरब।" ऊ सब गहना अपने से उठा के अलमारी में रख दिहली। गहने वाला दराज में ढेरे नगद रुपियो राखल रहे। दू हजार के बहुते गड्डी लउकत रहे। बातचीत, खान-पान करते-करात रात के एक बज गइल। हफ़ता भर के जतरा के थकान से सभे निश्चिन्त भ गइल रहे। सूते के देर रहे, नीन में सभे बेहोष भ गइल।

दोसरा दिन लोग के नीन बहुत देरी से टूटल। रामप्रताप उठलन त उनका मुन्दरी कंहई देखाई ना देली। बाथरूमो के दुआरी खुलल रहे। झन्न से उनकर माथा ठनकल। ऊ दउर के अलमारी खोललन आ ऊंहवा के हालत देखते सन्न हो गइलन। अलमारी में गहना आ रुपिया कुछुओ ना बांचल रहे। घर के मुख्य दरवाजा बाहर से बंद रहे। तब तकले बेटा-बेटियो ओहिजा आ गइलन। रामप्रताप के मुंह से निकलल, "नइकी माई सब ले गइली।"

□□

○ राँची (झारखंड)



‘मनवा के बात’ के बहाने नारी विमर्श

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी भाषा के अलगे महातिम ह, जेकर मन एहमे रम गइल ओकरा के आउर कुछे नीक ना लागेला। कुछ अइसने स्वीकारोक्ति के संगे भोजपुरी कवियित्री आ समाज सेविका श्रीमती सरोज सिंह जी के पहिल काव्य संग्रह ‘मनवा के बात’ भोजपुरी साहित्य जगत का सोझा आइल बा। कवनो साहित्यकार खाति ओकर कविता, गीत, कथा, कहानी समाज के स्थिति-परिस्थिति से प्रभावित ओकरे मनवे के बात होला। समाज में घटत घटनन से भला केहु कइसे बाच सकेला, मने बाचल मोसकिल होला। कवि मन भला कइसे बाची। एही से कवियित्री सरोज सिंह एह सगरो – घटनन से प्रभावितो भइल बा जवन उनुका के एगो लेखिका का संगही समाज सेविका का रूप में समाज खाति कुछ करे ला ओ प्रेरित करत रहेला। एगो कवियित्री का रूप में हम उनुका के 4-5 बरिस पहिले से परिचित बानी आ उनुके रचनन के धार के देखियो रहल बानी। एगो नारी जेतना नीमन से नारी के दरद के बूझ सकेले, पुरुष खाति ओतना गहिराह बले बूझल मोसकिल बा। कवियित्री सरोज सिंह के ‘मनवा के बात’ अइसने पीर के अपने भीतर समेटले बा। एह कविता संग्रह में छन्दबद्ध, छन्दमुक्त, गीत आ गजल सहित कुल 40 गो रचना बाड़ी सन। एह काव्य संग्रह के मूल स्वर नारी विमर्श बा। नारी के दरद के स्वर देवे लमहर परायास बा।

सदियन से एगो नारी अधिकार के प्रश्न जवन अजुवो ले अनुत्तरित बा। एगो ऐतिहासिक स्थिति पर ‘द्रौपती’ के बहाने आपन लेखनी चलावत कवियित्री सरोज सिंह कह रहल बानी—

“जेकर एगो प्रश्न
समूचा नारी जाति खातिर
अजुगों... अनुत्तरित बा
कि मेहरारू के दाँव पे लगावे के अधिकार
...के दिहलस मरद के?”

भा समाज में अजुवो लइकिन के संगे दोहरा बेवहार के बाति होखे, कवियित्री ओकरो पर आपन कलाम चलावे के भुलाइल नइखी। रउवो देखीं ‘हम त मछरिया जल के’ मथेला कविता –

“भइया गइलें सहरिया पढ़े
हम सिखली गिरहस्ती गढ़े
हम त मछरिया जल के”

भा

“एकै चाक के माटी हम सब
कुछ गढ़ल कुछ टूट गइल!”

अइसन कतने प्रश्नन के संगही अपने अगिले रचना ‘आदम अउर हउवा के माने’ मथेला कविता में कवियित्री सरोज सिंह नारी अधिकार के बातों क रहल बानी—

“बदले के होई आदम अउर हउवा के माने
जेमे लइकी होखे के माने—कमतर अउर कमजोर ना
अउर लइका होखे के माने—क्रूर अउर कठोर ना...!”

अलग-अलग जगह पर मेहरारू के संगे कइसन-कइसन अत्याचार हो रहल बा आ बतकही कुछ आउर कइल जा रहल बा। एहु पर कवियित्री सरोज सिंह के नजर नीमन से गइल बा। महिला सुधार गृह के रेखाचित्र आ समाज के मुँह पर तमाचा बा ‘पगली’। समाज के एह सोच आ रूप पर कवियित्री सरोज सिंह कह रहल बानी—

“त धरम माने देह
देह माने धरम”

समाज के एगो अइसन तबका जवन प्रताड़ित महिला खाति नीमन नजरिया ना राखेला। खाकी, सफेद आउर करिया रंग के कहर के डर आउर ओकरे धिनौना रूप पर चोखगर प्रहार करत कवियित्री आजु के समाज के ओकर आपन असली चेहरा देखला रहल बानी।

आजु के समाज के नजरिया अपने बूढ़-पुरनियन के संगे कइसन बा इहों कवियित्री के नजर से बाचल नइखे। अपने ‘बिसुखी गईया’ मथेला कविता के जरिये लोगन के सोझा रखले बानी। त संगही तीन पीढ़ी में भइल बदलाव के सकारहूँ से नइखे चूकल—

“ए माइ! अब के घरन में चउकठ ना होत
एहिसे ते...”

अब बड़े आराम से उ डाँक जालीसं एवरेस्ट भी
अउर इ सुन के माई के गहिर चिंता
संतोष में बदल जाला!!”

समय के बदलाव के संगे समाज के नजरियों गवें गवें बदल रहल बा। कवियित्री के कलम भरपूर चलल बा। जवन आजु के लइकिन के मन बिसवास जगा रहल बा। ई बिसवास जब भूइयाँ उतरेला त उ सभे में एगो आस जगावेला। देखीं—

“करब पूरा हम आपन अरमान
माई हम उड़बे करब !!”

नारी विमर्श से इतर समाज के दशा-दिशा आ गाँव से लगातार शहर का ओर हो रहल पलायन के बात होखे भा शहर

में लोगन के स्थिति होखे ओकरा के पढ़निहार लोगन खाति एह संग्रह में उकेरल गइल बा। गाँवों में अब गाँव बिला रहल बा। 'पलायन' मथेला के ई कविता बहुत कुछ कह रहल बा—

पहिले जे सुनात रहे कजरी, चइता, बिरहा ठाँव ठाँव

अब चमेली बाइ, हलकट जवानी के सोर बा गाँव गाँव।”

गाँवन के लोग जब शहर चहुँपेला आ उहाँ जवन स्थिति ओकरा सोझा आवेला, ओकर स्थिति 'ई शहर' मथेला कविता नीमन से बता रहल बिया। देखल जाव—

“आसान नइखे इहाँ चैन के जिनगी 'रोज'

जिंदा रहे खातिर रोज नया कसौटी देला!!”

'लखैरन के टोली' के बहाने समाज के एगो अइसन कोना के खोले के परयास बा, जहवाँ तक आजु के बुद्धिजीवी लोगन के न सोच जाले आ ना नजर जाले। 'अहम के तेजाब' पढ़त बेर कवनो मनई के मनई होखला के दंभ भरभरा के गिर परी, अइसन हमार बिसवास बा। एह संग्रह में वैश्विक महामारी कोरोना पर कविता त हइए बा संगही एगो बंगला कविता के भोजपुरी भावानुवादो बा।

कुल मिलाके हम ई कह सकत बानी कि कोरोना काल कवियित्री के लमहर फलक दिहलस जवना के प्रतिफल का रूप में 'मनवा के बात' भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा परोसे के भरपूर समय मिलल आ ई संग्रह 'सर्वभाषा प्रकाशन' से प्रकाशित होके हमनी तक चहुँपल। भोजपुरी में कुछ शब्दन के परयोग के किनारे राखि के देखल जाव त 'मनवा के बात' के कई गो कविता अइसन बाड़ी सन जवना के पढ़त-पढ़त आँख लोरा जाता। मन भावुक हो जाता।

किताब— मनवा के बात (भोजपुरी कविता संग्रह)

रचनाकार— सरोज सिंह

मूल्य—रु. 200/- मात्र

प्रकाशन— सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली



○ अवंतिका-2, गाजियाबाद (उ.प्र.)

लोक-पश्लोक के शंघतिया

दुलारी देवी के सज्जन सिंह से बिआह भइला 40 बरीस। खुल के ना बोल पावत रहली आ ना उनुका से नजर मिला सकत रहली।

उनकर खड़ाऊँ के खटर खटर सुनऽते उनकर घूघ नाक तक आ जात रहे। सज्जन सिंह से ऊ कुछुओ बोलऽतो बतिआवत रहली कि ना कहल मुसकिले रहे।

सज्जन सिंह बड़ी दम-खम वाला जमींदार के पूत रहलन। जमींदरई त माई-बाप संगही ओरा-बिला गइल रहे बाकिर ओकर असर सज्जनसिंह पर अजुओ खूब रहे। दुआर पर हरदम आसामी आ अंगना में औरतन के खेत खरिहान से आइल सामान के बटोरे-सटोरे के काम जब होखे त सज्जन सिंह के अंगना में दसन औरत काज करे। ओहघरी दुलारी देवी के साज-बाज आ गहना के ऊ खूब खयाल राखत रहलन। कबो-कबो त चुड़िहारिन, मनीहारिन आ रंगरेज तीनों के खुदहीं बोला के दुलारी देवी खातिर खरीददारी करवावत रहलन। आ दुलारी देवी उ सब पहीर के खूब इतरास।

ओह घड़ी हमनी के छोट रहनी सन। उनुका के बड़की माई कहत रहनी। ऊ लइकन सभ के खूब दुलारस बाकिर सज्जन बाऊजी के देखते हमनी के अकिल हेरा जात रहे आ कुछ गड़बड़ हो जात रहे। एही से उनका से डाँट पड़ जात रहे। ओकरे कारण हमनी के उनका के देखिये के आपन रस्ता बदल देत रहनी सन। उनकर चारो बचवा हमनी के चारो भाई बहन के जोड़ापारी के रहलन सन आ खूब हमहन में दोस्ती भी रहे। अब इहो एगो सोचेवाला बात रहे कि सज्जन बाऊजी कब अपना घर में ढुकत रहले कोई बूझ ना सकल काहेकि रोजे चार बजे भोरे ऊ बहरवें दालान में बइठ के रामायण गाव. स। ई एक तरह से एलारम रहे घरैतिन के उठावे के। ओही घड़ी आजीयो लाठी ले के दुघरत उनका के। ओही घड़ी आजीयो लाठी ले के दुघरत उनका लगे जाके बइठ जास आ उहो राग में राग मिलाव. स। फेर दुनो माई-बेटा सुख-दुख बतिआवस। जब चाय के बरतन के खटर-पटर होखे लागे त दुनो माई बेटा फेर भीतर जास। माई अपना खटिया पर आ सज्जन बाऊजी भंसार में।

बड़की माई भोरहीं नहा-धोआ के लाल चटक साड़ी आ मांगभर के सेनुर पहिर के सज-सँवर के भंसार मे भोरे-भोरे रोज चाय बनावस। ओह घड़ी बड़का बाऊजी ओहीजे जाके चाय पीयस। चाय पीयत बड़का बाऊजी एके गो बात बोलस— राम किरिपा से भोर क दरशन आ चाय दुनो बढ़िया भइल



डॉ. रजनी रंजन

बा। बाकियो ठीके कटी। एतना कहते बड़की माई के दुनिया जगमगा जात रहे। मुँह के मुसुकी घूँघटा से देख सज्जनो बाऊजी मुसकिया के निकल जास। ई कुल सभे देखत रहे बाकिर बड़ के लेहाज से कुछ कहत ना रहे। सावन के महीना में जब मेला लागे त सज्जन बाऊजी के पहिलहीं से टेकसी के साज-बाज शुरु हो जात रहे। मनीहरिनियो जानत रहे कि सज्जन सिंह के एह घड़ी छीलल जा सकेला। दुआर पर चुड़ी के दउरा रख के बोले- मलिकार के गोर लागतानी। मलिकाइन के हथवा में पुरनके चुड़िया रही का? सज्जन बाऊजी कहस- ई कुल हमरा के का कहतारे। भीतर जो। जे पसन्द होखे बोल दे ले लेस बाकिर हई हरियरका बड़ा नीक लागता। अंगुरी से इशारा करस। का हो महेश? महेशवो धीरे कहे- हँ मलिकार खूब सुन्नर बा। गोर हाथ पर खूब नीक लागी। सज्जन बाऊजी डेहुरी के ओट से झाँकत आपन बहुरिया के हाथ निहरलन आ मुसुकिया दिहले। सकुचात लजात बड़की माई ओनहीं से तनी चोन्हा करत कहली- एजी! एतनो पुरान नइखे। रहे दीहीं।

बाकिर चुड़ीहरिनिया के आपन दोकान चलावे खातिर तनी नेह के गुड़िया के रसरी फँसावे के पड़ल। उहो कहे लागल- ए मलिकाइन, मालिक के सै-सै बसंत होखे। सोहाग के सामान के ना ना कहे के चाहीं। सज्जन बाऊजी ओकर बात सुन के कहलन- अरे ले लऽ। अब ई खलिहा जाई थोड़हीं। आ तनी अर-अनाजो दे दीह। जो-जो भीतर जो। इहाँ मरदन के बीच तोर जरूरत नइखे। एतना सुनते ठहाका बाहर लागे त भीतर पइसत मनीहारिन के देख के अंगना के मेहरारू सभ बड़की माई से चुटकी लेवे के शुरु कइली सन त भीतरो ठहाका उठे लागल।

घर भर के लोग चुड़ी पहिर लेहलस। अंत में बड़की माई ओही चुड़ी पर हाथ धइली जवना के बड़का बाबूजी नीक कहले रहलन। चुड़ी पहिरावत मनीहारिन कहली-ए जी मलिका। इन! रउरा दुनो परानी के मन एके बा। इहे मलिकारो के पसन पड़ल ह। ओह घड़ी बड़की माई के गाल लाल हो जात रहे उ बस कहस- आरे पेन्हाव हाली से। ढेरे काम पड़ल बा घर में।

शिवरात के दिन दुआरा पर भोरहीं चारे बजे टेकसी पोछाये लागत रहे तऽ भीतर में पकवान छनात रहे। सबसे पहिले लइकन सभ के तइयार करके आ आजियो के साड़ी पेन्हा के बाहर खटिया पर लइकन सभ के संघे बइठा देस आ तब बड़की माई छानन बीनन कइला के बाद खुदे तइयार होखस। बाऊजी ओह घड़ी देर होत देख के बोलस- ई औरत सभ ना सुधरिहें! का जाने कवन तइयारी होत बा। ओह घड़ी लइकन पर नजर पड़ेतऽ सभ ओहीजे खटिया पर लुढकल बाड़े सन। ऊ खुदे भीतर जाके देखस तऽ बड़की माई के रुप देखके टकटकी लगा के देखस आ जब बड़की माई के नजर उनका पर पड़े त कहस कि जाये के बा कि ना? एतना बोलत मुख पर जे चमक आ आँख मे नेह लउके बड़की माई ओह से आउर सकुचा जास झट से उनका पीछे चल देत रहली।

बड़की माई आ सज्जन बाऊजी के ई नेह के डोरी कइसे बन्हल रहे कि बुझेवाला के खूबे परेम लउके आ ना

बुझेवाला के ऊ लोग रसहीन लागे। समय अइसहीं बीतत रहे। बेटा-बेटी सभकर चाकरी आ बिआह हो गइल। ऊ लोग धीरे-धीरे शहर में ही बसे के जुगाड़ कर लेहलस। अब दुनो परानी रह गइलन। शरीर भी थाक गइल रहे। अब दुआरा आ अंगना में ऊ रौनको ना बचल रहे। सज्जन बाऊजी त ठीक रहलन बाकिर बड़की माई लइकन से दूर होते धीरे-धीरे झंवांन हो गइली। अंत में खटिया ध लेहली। लइका सभ अपना लगे ले जाये के चाहत रहे लोग ताकि शहर में बढिया इलाज करा सके बाकिर बड़की माई ना जाये के तइयार भइली। फेर गँवही के एगो आदमी आ मेहरारू के घर जोगे खातिर रख के लइका लोग लवट गइले। ऊ दुनो मरद-मेहरारू खूब मन से सेवा करत रहलन। सज्जन बाऊजी भी बड़की माई के समझइले पर बड़की माई उनका के छोड़ के जाये ना तइयार रहली काहेकि ऊ जानत रही कि सज्जन बाऊजी ना जइहें। सज्जन बाऊजी से लइका लोग के उनका कड़क सोभाव के कारण पटरी ना बइठत रहे। एही से ऊ पहिलहीं एलान क देहले रहन- एही माटी में जनमल बानी, बड़ भइनी अब एही माटी में मिलब। कतहूँ हम ना जाएब।

बड़की माई खटिया पर बइठले सज्जन बाऊजी के पसन्द के भाजी काटस, उनकर कपड़ा चपेट के रखस, उनकर खाये-पीये के समय के धेयान राखस। सज्जन बाऊजी खाये आवस तऽ बड़की माई बेनिया डोला के जे तोष पावत रही ऊ उनका मुँह पर लक्षउकत रहे। एने सज्जन बाऊजी भी बड़की माई के नहान-धोवान, खाये-पीये के खूब खेयाल राखस। अब कय बार दुनो जन संघही खात रहे लोग। सज्जन बाऊजी बड़की माई के थरिया में ताकत वाला भोजन के खास खेयाल राखत रहन। बड़की माई के हाल देख के तऽ सज्जन बाऊजी के खटिया भी रात में भीतरिये लाग लागल। रात बिरात कबो सज्जन बाऊजी बड़की माई के हँकार देस त कबो बड़की माई बाऊजी के। एह तरे दुनो लोग अपना मन के तोष पहुँचावत रहे। एक दिन सज्जन बाऊजी दुपहरिया में खाये खातिर जगावे गइलन त बड़की माई जगबे ना कइली। फेर बेटा लोग लगे खबर गइलत उहो लोग आ पहुचल। अंतिम विदाई घड़ी सज्जन बाऊजी खुदहीं साड़ी आ चुड़ी कीन ले अइलन। निरभेद सुतल बड़की माई के खूब सजावल गइल। सज्जन बाऊजी एकटक निहार के उनका के फूल के माला पहिरवले। घाट पर मुख में आगुन देके जब ऊपर अइले त हाँफत रहलन। कहलन- तनी बइठे द लोग। बाकी लोग आगे बढऽ। उनकर बड़ बेटा आ उनकर चाकर ओहिजे सज्जन बाऊजी के लगे रुक गइलन आ बाकी लोग आगे बढल। दस मिनट बइठला के बाद सज्जन बाऊजी कहलन- हमरो जाये के पड़ी ना त उ ना जइहें। एतना कहते लुढक गइलन।

बड़ बेटा बाऊजी के पुकारते रह गइलन बाकिर उ त बड़की माई लगे चल गइले। ओही चिता पर एगो आऊर चिता जरल। एके साथे सराध आ बाकी किरिया करम भइल।

बड़की माई आ सज्जन बाऊजी के परेम अद्भुत रहल। बे कहले बिन देखवले दुगो मन के तार जे जुड़ल ऊ संगही अनंतलोक तक गइल। □□

○ घाटशिला (झारखंड)

गाँव शहर हो गइल

कुछ दिन पहिले हम आपन गाँव गइल रही हा, ऊहो दू साल बाद। दू साल में गाँव साचो बदलल लागत रहल ह। गाँव ऊहे बा खाली थोड़ा-बहुत ओकर ढाँचा आ रंग-रूप बदल गइल बा। अब पूरा गाँव में मड़ई-खपरैल के जगह पक्का ईट-सिमेंट के घर आ लोहा के गेट लउकत बा।

लोग चापा कल के पानी के जगहा 'आर ओ' के पानी पीयत बा। गाछ-वृक्ष त हइलहीं नइखे की लकड़ी-लवना पर खाना बनो, अब सरकार के देहल गैस घरे-घरे हो गइल बा। फन से गैस बरनी आ टन से खाना पाकल।

गाँव के नयका पीढ़ी हाफ पैट आ लुंगी पहिने में लाज शर्म महसूस करत बा, एही से जेठ बैसाख के दुपहियो में ई पीढ़ी के लइका जीस चढ़वले रहत बाड़ें। फलाना चाचा के छोटका बेटवा मोबाइल पर त 'पब्जी' गेम के कप्तान हो गइल बा, एकर पढ़ाई-लिखाई त बुझाता कि फलाना बो चाची अँवछ के नदी के कान्ही फेंक आइल बाड़ी का दू।

चिलाना बो काकी के तीनू छँऊड़ी सिलाई-कढ़ाई सिखल छोड़ के फेसबुक आ वाट्सएप के विद्या बालन हो गइल बाड़ी सन। ओकनी के ई लछन कादू गाँव में चर्चा के विषय बनल रहत बा, बकरी चरवाही से ले के भैंस चरवाही तक चिलाना बो काकी के बेटियन के ही कुटन-पिसन होत रहत बा।

गोधना बो भौजी मोबाइल के बारे में एतना ज्ञान बघारत बिया टोला-मोहल्ला में कि लागत बा गोधन भैया साईकिल के मिस्त्री ना मोबाइल के इंजीनियर हउवन।

टिकटाक बंद भइला पर अच्छेलाल बो भौजी दुखी होके गाँव के बितियन सन लगे घुम-घुम एतना दुखी मन से ओकनी के दुख बाटस जइसे कि अच्छेलाल के कुछु हो गइल बा। हाल फिलहाल वाला पीढ़ी जवन बुढ़ापा में ढलत बा लो, ऊ लोग त सुबह उठ के गाँव के चौहद्दी घुम के इहे खोज-खबर करत रहत बा लो कि कवना के बेटी-पतोह के चरित्र खराब भइल बा, आ कवना के बेटा कवना के बेटी के चक्कर में पड़ल बा। शायद कुचरपन वाला उपाधि इहे पीढ़िया धारण करी।

बस, अब गाँव नाँव भर के रह गइल बा, डेग-डेग पर नफरत के बारूद बिछा देहल गइल बा। भाई के भाई से, पाटिदार के पाटिदार से, ऊंच जात के नीच जात से, बराबर झूड़-डरेर, नाला-नाली के झगड़ा भइले रहत बा।

बस अब गाँव में एको डेग बढ़ावे के पहिले सौ बेर सोचे के पड़त बा कि का जाने ऊ बारूद हमरे पैर के नीचे मत आ जाए। हमनी से तनीसा जुनियर वाला लइकवा जवन गाँव में बाड़ेसन ऊ त कवना-कवना दू नेता के पार्टी के पदहवा अध्यक्ष बन गइल बाड़े। उठते-सुतते फेसबुक पर आपन आपन पार्टी आ अध्यक्षता के कर्मकांड लिखत रहत बारे। ऊ कर्मकांड के लेखनी में एक-दोसरा पक्ष-विपक्ष के माई, बहिन, बेटी के गारी देहल ई पीढ़ी के तकिया कलाम हो गइल बा।

बस एके चीज गाँव छोड़ के शहर के रास्ता नाप लेले बा, ऊ गाँव के पढ़ाई-लिखाई आउर शिक्षा बा। गाँव में जे समझदार-शिक्षित बा, ऊ आपन बेटा-बेटी के कवनो अच्छा प्राइवेट स्कूल में गाँव से बहरी पढ़ावत बा ताकि उनकर बेटा-बेटी गाँव में लइकन के माहौल में ना ढले। काहे कि गाँव के सरकारी स्कूल आइस-पाइस, गुल्ली-डंडा खेले वाला जगह बन गइल बा, मास्टर साहब के ना तनख्वा मिलत बा आ ऊ ना मन से पढ़ावत बाड़े, ज्यादातर ऊ लोग अनशने पर रहत बा। बस लइको गर्जीवन के आगे हवा-हवाई उड़ा रहल बाड़े, गर्जीवनो गच रहत बाड़े कि बबुआ पढ़त बा।

ई दू साल बाद गाँव के बदलाव देख के एके महिना में मन थोर हो गइल रहे।



○ छपरा (बिहार)



जियाउल हक



पड़सा का नीमक एक शमान हऽ

डी. के. सिंह

तरकारी होखे चाहे दाल, अगर जरूरत से जियादा नीमक पड़ जाला त पूरा सवाद बिगाड़ जाला खाना के! ठीक ओहि तरे पड़सा! अगर पड़सो आदमी के जीवन में जरूरत से ढेर आ जाला त जिनगी के सवाद बिगाड़ देला। आज हमनी के ईक्सवीं सदी में जी रहल बानी जा, जिनगी के गाड़ी बहुते तेज रफतार से दउड़ रहल बिया। केहू घर के रोजी-रोटी खातिर आपन माटी, आपन गाँव से पलायन कर रहल बा, त केहू ढेर पड़सा कमाए खातिर आपन दिमाग लगा रहल बा। एक-दोसरा के पछाडे खातिर धनवान बने खातिर तरह-तरह के जुगति लगा रहल बा लोग। सच्चाई त ई बा कि लोग तरक्की त कइले बा मगर बहुत कुछ गंवाइयो रहल बा। सरकारो ढेर योजना चलवले बा कि लोगन के जीवन स्तर में सुधार आवे। आज अफसोस के साथ कहे के पड़त बा कि जिनगी में पड़से सब कुछ ना होला। केहू के हक मार के पड़सा कमाइल कहाँ तक सही बा? ईमान बेच देले बा लोग। कोर्ट, कचहरी, थाना में सबसे जियादा केस जमीन-जायदाद, चोरी, घोटाला के देखे के मिल रहल बा।

संयुक्त परिवार के विभाजन हो रहल बा। घर के बूढ़ माई-बाबू के लोग वृद्धा आश्रम में बइठा देले बा। ई सब कुछ के जड़ पड़से बा ऐकरा के कोई झूठला ना सके। समाज पहिले से शिक्षित जरूर भइल बा मगर नैतिक पतन दिन पर दिन हो रहल बा.. प्रकृति से हमनी के सीखे के चाही। कवनो भी पेड़ आपन फल खुद ना खाये, बाँट देला इंसान खातिर, पशु-पक्षी खातिर। नदीयो आपन पानी सबके पियावेले, जरूरतमंद के प्यास बुझावेलेस तबो ई मानव कुछ सीख ना लेलस!

सबसे कड़वा सच त ई बा कि गाय आपन अमृत नीयन दूध में मिलावट ना करे, मगर ई लालची इंसान पड़सा खातिर मिलावट कर देला। ई वैज्ञानिको लोग प्राकृतिक तत्त्व के आपस में मिला के रासायनिक अभिक्रिया द्वारा बम, गोला, बारूद बना देत बाड़े। विकास के ई पराकाष्ठा विध्वंसकारी रूप ले चुकल बा। परमाणु से हमलो होता एक-दोसरा के राख में मिलावे के खातिर! आप अपने करेजा प हाथ रख के कहीं, जेतना प्रकृति से हमनी के मिलल बा ओकरा बदले में हम आप प्रकृति के का देले बानी जा? पेड़-पौधा अनघा रोज कटात बा, इहवांस काहे से कि स्मार्ट सिटी बसावे के बा। बड़ बड़ मॉल, अपार्टमेंट, हाइवे बनी। आज शहर के ढेर मकान में एसी लागल बा। रउआ के पता बा न कि एसी से क्लोरो-फ्लोरो कार्बन निकलेला, जवन कि बहुते हानिकारक होला। आज शहर में तमाम सुविधा बा तबो शहर कराह रहल बा। एकर परिणाम इहे ह। रउआ आजो गाँव देहात में जाई, जवन शुद्ध हवा-पानी ओहिजा मिल जाई उ कतो ना मिली। पड़सा कमाए वाला हर सुख-साधन रखले बा घर में, मगर ओह घर में सुगर, ब्लड प्रेशर, अनिद्रा, तनाव जियादा देखे के मिलत बा। एकर सबसे बड़ा कारण इहे बा कि शहर में प्रकृति के खूब दोहन भइल बा। दोसर बात कि शहर के लोग के जीवन स्तर ढेर भाग दौड़ वाली बा, ऑफिस, कंपनी, कारखाना में लाखों

लोग नियमित काम करत बा। आदमी अउर मशीन में कुछ खास अंतर नइखे। आदमी मशीन बन गइल बा ई आधुनिक जुग में। अब त विकास के स्तर एतना बढ़ गइल बा कि हर आदमी के पास मोबाइल हो गइल बा। इन्टरनेट से लोग जुड़ गइल बा। कवनो बात आ संदेश मिनट भर में वायरल हो जाता। आज हजारों-लाखों कंपनी लुभावना समान बाजार में उतार के रउआ आ हमरा पाकिट से पड़सा खींच रहल बिया। भौतिकवाद के जुग में सब केहु एक-दोसरा के नकल करता। कुल्ह मिला के देखल जाव त 'पड़सा' के भूख सबका पास बा। ई देश में कबो महान संत कबीर के दिहल संदेश रहे कि "साई इतना दीजिए, जामे कुटुंब सामाय। मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भूखा जाय।।" आज कबीर, तुलसी, रहीम के अमृतवाणी आ संदेश के लोग भूला गइल बा। लूटपाट, चोरी, हकमारी चरम प बा आज। तानिका तानिका पड़सा, जमीन जायदाद खातिर हत्या हो जाता। लोग ई आधुनिक जुग में जिये के कला भूला गइल बा। परिणाम सबके सामने बा! धनवान आ दू पड़सा पाके लोग खुद के भगवान समझ लेता। एक बात गाँठ बान्ह लिहि आप, प्रकृति रउआ से दिहल धन छीन के गरीब गुरबन में बाँटे भी जानेले। ई कोरोना काल एक बात जरूर सीखा देलस कि पड़सा, पद, पावर सब कुछ ना होला। बढ़िया-बढ़िया धन सेठ लोग भी काल के गाल में समा गइलें!

हम त इहे कहब कि माई बाप के दुआ आशीर्वाद लिही रउवा लोग। केहु के हक हिस्सा मत मारी! जीवन में संतुलन बना के राखी। जवन चीज भीरी बा ओहि में खुश रहीं लोभ लालच मत पाली! अगर जरूरत से जियादा धन दौलत आपके लगे बा त ओहके गरीब, बेबस, लाचार लोगन में बाँटी। ई पड़सा सच में जीवन के स्वाद बिगाड़ देला। अंत में एगो हथजोरी बा रउआ सभे से कि खाना-पीना देशी खाई। तरह-तरह के बाजारू ब्यंजन आपके बीमार क दिही। पानी त डिब्बा में पैक होके बेचाते रहे, अब आक्सीजन रूपी संजीवनी हवा खातिर हाहाकार मचल बा। डॉक्टर लोग मानवता भूल के खून चूस रहल बाड़े। ईश्वर सबके हिसाब करे जानेलन। आज आदमी आदमी से सामाजिक दूरी बना देले बा ई कोरोना महामारी में। केहू-केहू में छुआइल नइखे चाहत। आज जेतना उपाय लोग बता रहल बा कि साफ सफाई राखि, गोड़-हाथ धोई। काढा पीहीं.. उ बहुत पहिले ऋषि मुनि लोग बता देले रहे। मगर कुछ तथाकथित ज्ञानी लोग ओह पर अमल ना कइलस! अभियो सुधरे के समय बा फिर से आपन संस्कृति आ सभ्यता के आप अपनाई। पेड़-पौधा जादा से जादा लगाई, हँस के जिनगी बिताई। आपन माटी आपन गाँव से जुडल रहीं जिनगी के स्वाद बनल रही।

□□

○ कैमुर, भभुआ (बिहार)

लंदन में जब पुष्पा पाकल

मनोज भावुक



सोरह साल हो गइल. सोरह साल सुन के त बहुत लोग के मन बासंती हो जाला. सोरहवा साल पर त ना जाने केतना फिल्मी गीत बा. बॉलीवुड में गीत गूँजल कि “सोलह बरस की बाली उमर को सलाम”। भोजीवुड में गाना बनल, “सोरहे में सुन्नर सामान भइलू”। सोरह पर हमरो एगो शेर बा –

भउजी सोरह के बाड़ी आ साठ बरिस के भईया
बाज के चोंच में देखीं अंटकल बिया एक गौरइया

त हमरा कबो-कबो लागेला कि हमार भोजपुरी कई गो अइसने बाज के चोंच में अंटकल बिया। एक बेर हिंदी के एगो महापंडित गरियावत रहलें, रे भोजपुरी के कुछ बा? आपन कवनो शब्दावली नइखे। खाली हिंदी में क्रिया पद लगा के भोजपुरी थोड़े बनेला? बहुत देर ले गप्प चलत रहल। हम लइका रहनी। लइका त आजो बानी, बुद्धि से। तब उमिरो से रहनी। चुपचाप सुनत रहनी।

पंडित जी नोकर पर चिचिअइनी- रे, चाह अभी ले ना बनल ?

बन गइल बा ए मलिकार बाकिर गिलसवा में गिलसवा अइस गइल बा।

हमरा हँसी छूटल कि कादो भोजपुरी में कुछ नइखे। पंडी जी हमरा के खिसिया के देखनी। बाकिर बड़ भइनी. तनी आँख खुलल त लागल कि साँचो, आपन भोजपुरी कहीं अइस गइल बा। फेर लागल कि ना ई हमार लड़िकबुद्धि बा। हमरा ठीक से भोजपुरी बुझाते नइखे। जेकरा बुझाता, बुझता, ऊ खेलता-खाता। ओकरा घर में रेड कार्पेट बा। हम चटाई पर के चटाइये पर रह गइनी। केतना लोग के ई नायक-महानायक, सांसद-विधायक बना दिहलस आ भावुक आदमी हम, हमरा भोजपुरी अइसल लागतिया?...अइसल त हम बानी ? हमहीं ना, ऊ सब लोग अइसल बा जे भोजपुरी खातिर अपना के होम कइले बा, स्वाहा कइले बा।

त सोरह साल पहिले गइल त रहनी प्लांट मैनेजर बन के बाकिर भोजपुरी के कीड़ा भी हमरा साथे लंदन पहुंचल रहे। अब कीड़ा के कवन बीजा-पासपोर्ट लागे के रहे कि ना जाव। लंदन पहुंचते गीत लिखनी-

बदरी के छतिया के चीरत जहजवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया
लन्दन से लिखतानी पतिया पहुँचला के,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया

दिल्ली से जहाज छूटल फुर देना उड़ के,
बीबी बेटा संगे हम देखीं मुड़ मुड़ के.
पर्वत के चोटी लाँघत, बदरी के बीच,
नीला आसमान ऊपर, महासागर नीचे
लन्दन पहुँच गइल लड़ते पवनवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया

हीथो एयरपोर्टवा से बहरी निकलते,
लागल कि गल गइनी थोड़ दूर चलते.
बिजुरी के चकमक में देखनी जे कई जोड़ा,
बतियावें छतियावें जहाँ तहाँ रस्ते.

हाल चाल पूछनी हम अपना करेजवा से,
अइलीं फिरंगिया के गांवे हो संघतिया

खैर, गीत लम्बा बा। फेर कबो सुनाए। मेन मुद्दा प आवतानी। भोजपुरी में लिखे-पढ़े आ कार्यक्रम करे के जवन कीड़ा रहे उ अउर तेजी से काटे लागल। हमरा किताब “चलनी में पानी” में के अधिकांश गीत लंदन में लिखाइल बा। चूंकि लंदन में भोजपुरी के भा भोजपुरी खातिर कुछ रहे ना त हम यूके हिंदी समिति, लंदन आ गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम से जुड़ गइनी बाकिर भोजपुरी के साथे लेके, छोड़ के ना। लंदन से प्रकाशित पत्रिका ‘पुरवाई’ के कभर पेज पर हमार भोजपुरी गजल छपल। ई बात 2006 के ह। फगुआ के आसपास हम लंदन पहुंचल रहनी।

देखीं, फगुनी बयार बहता त याद के पुरवाई मन के छू-छू के निकल जाता। हमार फैंक्ट्री लंदन से लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर हादम में रहे। हम सपरिवार गइल रहनी उहाँ। पत्नी अउर ढाई महिना के बेटा के साथे। बेटा अब हाई स्कूल में पहुँच गइल बा अउर पत्नी सफर में हमसफर बन के सोरहवां साल में। अभिये 18 फरवरी के शादी के सोरहवां सालगिरह मनल ह।

त साल 2006 में हम पत्नी आ बेटा के साथे भोजपुरी के भी

के भी लेके लंदन पहुंचल रहनी। ओकरा पहिले युगांडा, पूर्वी अफ्रीका में रहनी। उहाँ भी ई बेमारी रहे त 2005 में भोजपुरी एसोसियेशन ऑफ युगांडा के स्थापना कइनी। स्थापना में हमरा साथे आजमगढ़ के अजय सिंह भी रहलें। हम त युगांडा से भाया लंदन इण्डिया आ गइनी बाकिर स्वामी नारायण के भक्त अजय भाई त उहाँ जमीन—जायदाद खरीद के बसिये गइल बाड़न। खैर, भोजपुरी एसोसियेशन ऑफ युगांडा के स्थापना के बाद उहाँ तमिल, तेलगू, गुजराती, मराठी विंग के साथे भोजपुरी के भी एगो विंग खुलल। फगुआ—चइता उहवों गूँजल। दियरी—बाती आ छठ शुरू हो गइल। कई गो स्वीमिंग पूल आ विक्टोरिया लेक के किनारे छठ भइल। हम कई लोग के भोजपुरी पत्र—पत्रिकन के सदस्यो बनवनी।

मन बढ़ल रहे त लंदन में भी भोजपुरी समाज के स्थ.ापना भइल. दरअसल 2006 में हमरा भोजपुरी गजल—संग्रह 'तस्वीर जिंदगी के' के पर सिनेहस्ती गुलजार आ तुमरी साम्राज्ञी गिरिजा देवी के हाथे भारतीय भाषा परिषद सम्मान मिलल. ई खबर बीबीसी समेत तमाम अखबारन आ वेबसाइटन के सुर्खी बनल. बीबीसी लंदन, रेडियो खातिर मुकेश शर्मा जी (जे अभी बीबीसी दिल्ली के संपादक बानी) हमार इंटरव्यू कइनी। ओकरा बाद हम लाइम लाइट में आ गइनी। फेर यूके के भोजपुरिया लोग हमरा संपर्क में आवे लागल आ अंततः हम भोजपुरी समाज, लंदन के स्थापना कइनी अउर लंदन के हाईड पार्क में एगो कार्यक्रम रखाइल। तय ई भइल कि सब केहू अपना—अपना घर से एगो भोजपुरिया डिश बना के ले आई त लंदन में केहू किहाँ पुआ पाकल, केहू किहाँ टेकुआ बनल, केहू दाल में के दुलहा बना के ले आइल रहे त केहू लिट्टी त केहू मकुनी त केहू फुटेहरी...माने अजबे—गजब हाल रहे. सितम्बर के महीना रहे. हाईड पार्क में जब गुनगुनी धूप में गीत—गजल के साथे लोक राग छिड़ल त ब्रिटेन में आरा—बलिया—छपरा लउके लागल आ पूस के देहसुख वाला घाम जइसन लागे लागल।

अब नू जेके देखीं, सेही लंदन पहुँच जाता शूटिंग करे भा प्रोग्राम करे. 15—16 साल पहिले अइसन ना रहे। एह से लोग में उत्साह ज्यादा रहे अउर अफ्रीका आ यूके में भइल भोजपुरी गति. विधि के भारतीय मीडिया में भी अच्छा कवरेज मिलल।

दू साल पहिले 2018 में हमरा के गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम द्वारा भोजपुरी नाइट्स खातिर आमंत्रित कइल गइल। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद द्वारा हमरा के यूके भेजल गइल अउर एक बेर फेर यूके के भोजपुरियन के भारी जुटान भइल। ई हमरा खातिर आनंद आ गर्व के पल रहे. उहाँ हमरा के गीतांजलि साहित्य व संस्कृति बर्मिंघम सम्मान से नवाजल गइल।

अइसे त युगांडा, यूके के अलावा दुबई, मॉरिशस आ अउर कई गो देश में जाए आ भोजपुरिया लोग से मिले—जुले, जोड़े—जुड़े के अवसर मिलल लेकिन एगो सवाल बरिसन से सालत आ रहल बा कि भोजपुरिया लोग त आगे बढ़ गइल, जे मजदूर बनके गइल, उहो मालिक बन गइल. मॉरिशस में सरकारी मान्यता भी मिल गइल बाकिर अपना देश में भोजपुरी खातिर अभी पचरे गवाता. भोजपुरी एगो सियासी मुद्दा बन गइल बा आ भोजपुरिया लोग के बतावे—जतावे के पड़ेता कि भाई हो जनगणना में आपन मातृभाषा भोजपुरिये बतइहा. माई आ मउसी में फरक होला ए चनेसर...बाकी सम्मान त सभकर बा. सवाल पहचान के बा आ पहचान अपने मातृभाषा से होला. ना त अधभेसर बन जाए के पड़ी ए चनेसर. सवाल अस्मिता के भी बा. जेतना रोटी जरुरी बा ओतने इज्जत.

देखीं, अइसल आ छटपटात भोजपुरी के कब खुला आकाश मिलेता ?

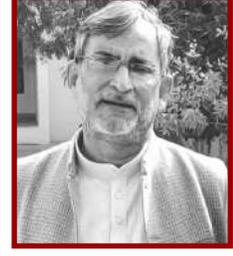
□□

○ नोएडा, उ.प्र.

खूब पढ़ीं आ तनी सा लिखीं
ए तरे बढ़िया भोजपुरी सीखीं।

गोरखनाथः धीरे धरिबा पाँव

सदानंद शाही



अठवीं से लेके बरहवीं शताब्दी ले चौरासी सिद्ध लोग अपभ्रंश में कविता करत रहे। सिद्ध लोगन के कविता में भोजपुरी शब्द आ क्रिया रूप मिलल शुरू हो गइल रहे। चौरासी सिद्धन में सबसे प्रसिद्ध रहलें सरहपा। उन कर एगो कविता देखल जां— नगर बाहर रे डोंबि तोहारि कुडिया/छोड़-छोड़ जाई सो बाभन नाडिया/आलो डोंबि तो सम करबि मो संग/जाम मरण भाव कइसन होई /जीवन्ते भले नाहि विसेस।' एमे 'छोड़ छोड़ि जाई' आ 'कइसन होई' भोजपुरी प्रयोग हवे। सिद्ध लोगन के कविता में एह तरे के बहुत उदाहरण मिलेला। बाकिर ठीक ठीक भोजपुरी कविता के रूप गोरखनाथ कीहा से मिलल शुरू होला। गोरखनाथ के समय नउवीं से लेके एगारहवीं शताब्दी के बीच मानल जाला। एह तरे देखल जा त भोजपुरी कविता के इतिहास हजार साल से उप्पर के बा।

बौद्ध धर्म के बजरयान शाखा जब भोग विलास में डूबि गयल तब गोरखनाथ जी अपने हठयोग से समाज के नया रस्ता देखवनी. समाज के गिरल दशा से उबरले में गोरखनाथ जी बड़ा सहजोग बा। भोजपुरी इलाका में गोरखनाथ जी जेतना प्रसिद्ध हवें ओतने उनके गुरु मछिंदर नाथो हवें। मछिंदर नाथ जी कवनों जोगिनी के फेरा में परल रहलीं। कवनों तरे एह फंदा से निकलि ना पावत रहलीं। गोरखनाथ जी के पता चलल कि गुरु के ई हाल हो गइल बा, उहाँ के तुरते चलि देहलीं गुरु के जगावे। गोरखनाथ कवनों कवनों तरे गुरु के जगवले। गोर खनाथ आ मछिंदर नाथ के ई किस्सा भोजपुरी इलाका में बहुत चाव से कहल आ सुनल जाला। एह कहानी प गाँव गाँव में नाटक नौटंकी होत रहे। जाग मछन्दर गोरख आया एगो रूपक के तरे हमन के सामने आवेला। कहानी में जवने तरे मछन्दर माया-मोह आ भोग विलास में फसल रहलें ओहि तरे ओ समय के लोगवो फंसल रहे। गोरखनाथ ओह समय लोग के जगवले। उनके 'अलख निरंजन' आ 'जाग मछन्दर गोरख आया' सुनते आजो जगले के अनुभव होला।

गोरखनाथ जी के नाव प चालीस गो किताबिन के चर्चा होला। एमे से अधिकांश किताबि संस्कृत में लिखल गइल बाड़ी स। बाकिर उ कुलि जोगी जती आ पंडितन खातिर बा। गौतम बुद्ध लेखां जनता के भासा में जवन लिखलीं भा कहलीं उहे ढेर

प्रसिद्ध भइल। गोरखनाथ जी के घूमन्तू जीवन रहे एसे उनकरे भासा में कई भासन के रूप मिलेला। बाकिर निखालिस भोजपुरी में उहाँ के कई गो रचना मिलेली –

हंसिबा षेलिबा रहिबा संग। काम क्रोध न करिबा संग।

हंसिबा षेलिबा गाइबा गीत। दीढ़ करी राखीबा आपना चीत।।

गगन मण्डल में ऊंचा कूवा तहां अमृत का वासा

सगुरा होई सु भरि भरि पिवे, निगुरा जाई पियासा।।

गोरखनाथ के भोजपुरी कविता भले बहुत ढेर न होखो बाकिर भोजपुरी मन मिजाज प उनकर असर बहुत बा। एकर वजह ई बा कि गोरखनाथ जी घूमन्तू सिद्ध रहलीं। ऊंहां के पूरा भारत घूमत रहीं। गुजरात से लेके बंगाल आ उड़ीसा ले आवत जात रहलीं। बाकिर उन कर ढेर समय गोरखपुर धइले पूरब में बीतल। जवने में भोजपुरी इलाका ढेर बा। गोरखपुर में आजुओ गोरखनाथ पीठ एकर भारी प्रमाण बा।

एकरे अलावा गोरखनाथ के कहानी अपना के गोर खपंथी माने वाला जोगी लोगन के उपस्थिति कहि रहल बा। गोरखपुर से लेके नेपाल धइले देवरिया आ कुशीनगर के इलाका में जोगिन के गाँव के गाँव मिलेला। ई जोगी लोग हिन्दू आ मुसलमान दूनों धरम से जुडल बा। बाकिर ई लोग गोरखनाथ आ कबीर के आपन गुरु बतावेला—

'गोरखपुर में बाबा गोरखनाथ

मगहर में संत कबीर

आजमगढ़ में बाबा भैरवनाथ

तीनों एक तपस्वी जीव

ले ल गुरु जी का नाव'।

गोरखनाथ के परंपरा के ई जोगी लोग गाँव-गाँव एकतारा प गोपीचन्द आ राजा भरथरी के गीत गावत—घूमेला। जोग बैराग के एह गीतिन में दर्द के अइसन टीस रहेला कि सुनवइया के लोर चुवे लगेला। बंगाल के बाउल गीति के चर्चा बहुत होला, बाकिर ठेठ भोजपुरी के ई जोगिया गीति कवनों तरे ओसे कम नइखे। गोपीचन्द से जुडल एगो गीति दे खल जाँ—

'केहू ना चीन्ही गोपीचन्द

केहू ना चीन्ही

माई न चीन्ही
बहिना ना चीन्ही
जोगी क सुरतिया नाहीं विरना
बहिनिया नाहीं चिन्हेले' ।

गोपीचन्द के कहानी कहत कहत कवने तरे ई जोगी लोग राम वनगमन के करुण कहानी प आ जाला ई कहल मुश्किल बा। अरे राम के माई बनवा भेजवलू/भरत के देहलू राजगद्दी/बताव माई राम कहिया ले अइहन/अरे पतझर बगिया में फूलवो न फूलेला/भंवरो ने खिलेला फूलवो न फूलेला/बताव माई राम कहिया ले अइहन' ।

एही माहौल में गोपीचन्द के महतारी मयनावती के दर्द जोगी लोग के कंठ से फूटि परेला –

'अरे एतना बचनिया हो माई
भर-भर माई रोयेली
फटही गुदरिया हो माई
झरि-झरि रोयेली
कौने करनिया हो बचवा
बनल तू जोगी हो
अरे जनम देहलू हो माई
अरे करम न देहलू हो माई
अरे बारह बरसवे हो बचवा बन गइल जोगी हो
अरे बड़-बड़ तपस्या हो बचवा
बड़-बड़ पूजवा हो गोपीचन्द' ।

केतना पूजा पाठ आ केतना तपस्या से गोपीचन्द के जनम भइल बाकिर घर दुवार छोड़ि के जोगी हो जा ताने। एही तरे राजा भरथरी के जोगी भइले के कहानी भी बहुत करुण बा। आपन राज पाठ छोड़ि के भरथरी जोगी हो जा ताने-अमर राजा भरथरी /छोड़े गढ़ उज्जैन का राज/हथवा लिये संरगिया/बना है राजा भि खरिया हो/गुदरिया गला में डाले भरथरी/राजा भरथरी बना भि खारी/राजपाट बिसराई' ।

जोगिया गीतिन में ई सवाल बहुत भीतर से उभर रहल बा कि कवने कारण एइसन राजा लोग जोगी हो जाता। ओकर एगो जवाब बा कि-गोरख के अजब/तन में भस्म रमाई/राजा बना भिखरिया हो'। गोरख के भस्म लगा के लोग जोगी हो जाता। जोगिन के ई गीति कब लिखाइल, के लिखल कहल मुश्किल बा। बाकिर ई बाति एकदम साफ बा कि भोजपुरी कविता के ई जोगिया रूप गोरखनाथ के समय से चलल चलि आवत बा। एह जोगिया कविता के अलगा से देखल जां त भोजपुरी जीवन के मोह छोह आ सथही माया मोह से ऊपर उठला के क्षमता, दूनहूँ मिलेला। हमके त ई बुझाला जे गोरख बानी के मर्म ए जोगी लोग के गीतिन के जरिये भोजपुरी मन आ समाज में बसि गइल। भोजपुरी में गोरखबानी के अर्क परि गइल बा। एसे इहो पता चलेला कि भोजपुरी कविता में जीवन के दार्शनिक सच्चाई के गवले के क्षमता बा। ई क्षमता कवनों एक दू दिन से नाही गोरखनाथ के समय से बा। भोजपुरी के ई दार्शनिक गहराई शास्त्र के चुनौती दे रहल बा। हर तरह के पाखंड के चुनौती दे रहल बा। प्रभुता आ प्रभुताई के चुनौती दे रहल बा। ई बता रहल बा कि कवनों अइसन चीज नइखे जवने के गरब कइल जा। न बेद, न शास्त्र, न जाति, न वर्ण। सब असही बा। एसे भलाई धीरे धीरे चलला में बा। सहजे रहला में बा। भोजपुरी कविता शुरुवे से जीवन में सहजता के आ ओकरे सुंदरता के बता रहलि बा आ हर ओ चीज के खारिज कई रहलि बा जवन आदमी के कवनों भी तरे छोट बनवले के कोशिश कर रहल बा।

हबकि न बोलिबा ,ठबकि न चलिबा धीरे धरिबा पाँव।
गरब न करिबा सहजै रहिबा भनत गोरख राव।।

□□

(जोगिया गीत के उद्धरण श्री मनोज कुमार सिंह के लेख से मिलल बा।)

○ वाराणसी (उ. प्र.)

गजल



राजेश कुमार जैसवारा
'राज जौनपुरी'

अइसन चढ़ल ह प्रीत के ई रंग फाग में
फड़कत ह आज काहे सभै अंग फाग में

बुढ़वा भइल जवान ह फागुन के माह में
करतब दिखाय सबके करे दंग फाग में

काकी बुआ बहिन त भतीजी भी सब के सब
मिलके मचा रहल हई हुड़दंग फाग में

बड़की मझिलकी छोटकी भौजी के का कहीं
तीनों त कर रहल हई अब तंग फाग में

लीं प्रीति के गुलाल त चाहत के रंग लीं
अपनत्व के अबीर मलीं संग फाग में

हिंसा विवाद द्वेष के होरी त फूंक दी
दुश्मन से फिर वतन के लड़ीं जंग फाग में

तनिको रहे मलाल न हियरा में 'राज' अब
बाँटीं खुशी मिला के सभै भंग फाग में

□□

○ झूँसी, प्रयागराज (उ. प्र.)

कठकरेज

केशव मोहन पाण्डेय



तिजहरिया होते बभनटोली के लइका आपन-आपन गाय लेआवे खातिर टाँड पर जुम जालें। टाँड पर बइठल-बइठल जब तनि देर होखे लागेला तऽ तूफानी के दुआर ले पहुँच जालाऽ लोग। तूफानी के दुआर पर बुढ़वा बरगद के झूलत सोर पर अगर्द मचाऽ देला लोग। लइकन के ओह हुड़दंग के सभे मजा लेलाऽ। आवत-जात राहगीर भी, खेत में सोहनी करत जाना-मजूरा भी। लवना बिनत मेहरारून के झूण्ड होखे चाहें धोबीघटवा में मछरी टोड़आवत लइका, सभे मन से बभनटोली के ओह लइकन में मिलिए जाला। लइकन के तरह-तरह के खेल सबके भरमाऽ लेलाऽ। खेल चाहें ओल्हा-पाती के होखे, चाहें गोबरउरा के, गुल्ली-डंडा, आइस-पाइस, छुआ-छुअंत, आँकुड-मेंचा होखे चाहें कबड्डी, सगरो लइका सब खेलन में रमऽ जाले। लइका लोग चारु ओर नाचें-दौड़ें, बाकीर तूफानी के दुआर पर सावधानी रखल जाव। कारण ई रहल कि उनका दुआर पर एगो ईनार रहे, जवना के जगत के पतेऽ ना चले। जमीन छुअले रहे। सबके डर ई रहे कि खेलला के नशा में केहू के गोड़ ना बिछलाऽ जाव, ना तऽ एक डेग आगे आऽ जै सीता राम।

अस्सी बरीस के बूढ़ जुगुलो चौबे लइकन के साथे आपन गाय ले आवे जास। जुगुल चौबे अपना अढ़ाई आदमी के घर में अकेले मरदाना रहले। एगो मतिभाँवर वाला मेरहारू आ एगो चौदह-पंद्रह साल के उनकर पोती चंचल। ना अउरी हाथ पसारे वाला, ना साथ बँटावे वाला। अपनहीं नाव, अपनहीं मलाह आऽ अपनहीं सवारी। नाव मझधार में डूबे चाहे गंगा पार होखे, ना दोसर लगगी, ना दोसर पतवार। बुढ़ऊ के ललकी गइया हऽ बड़ा तेज। खूँटा छोड़ते सगरो जवार नापे के चाहे लेऽ। खाली बुढ़ऊ के चिन्हेंले आ चरवाह बीरबल के। दोसर केहू ना ओकरा पँजरा जाए के चाहेला, आ ना ऊ आवे देले। चंचल के ईआ तऽ कई बेर बुढ़ऊ से कहली कि कवनो लइका के लेमचूस खाए के एगो रोपेआ दे दिहल करीऽ बाकीर एह बूढ़उती में मत दउड़ीं। बुढ़ऊ सुन के अनसुना कऽ देस। चूड़ीहारिन नगोसरी फुआ के नजर पड़ल तऽ ईआ अइसहीं कह दिहली, 'बड़ा कठकरेज हउअन बूढ़ऊ। ... अपने दम पर सब करीहें बाकीर एक रोपेआ लइकन के ना दे सकेले।'

जुगुल चौबे गाय लेआवे लइकने के साथे जास। ओकनी के साथे दउड़बों करें बाकीर खेलस नाऽ। जब लइकन के हुजुम किसिम-किसिम के खेल खेले त चुपचाप बइठ के खाली ओकनी

के खेलवा देखस। एकदम चुपचाप। टुकुर-टुकुर। कवनो भूलवना में भूलाइल रहस। लइकन के ऊ खेल देख के कवनो सपना सजावत रहस। ओकनी के झूण्ड में केहू के खोजत रहस। एकदम पत्थर बन के। तनो से, मनो सम आ करमो से।

जुगुल चौबे के दू जने बेटा रहलें। भोला आ शंकर। भोला त सचहूँ भोला रहले। देहियो में, अकीलियो में। कंठ के बाजा आ कान के दरवाजा, दूनो बंद रहे। ना कुछ बोलें, ना कुछ सुनाव। ना इगुवारे के होश रहे, ना पिछुवारे के फिकिर। कहीं निकलला-पइसला के डरे उनका के अपना आँख से ओझल ना होखे दिहल जाव। ... मंदिर पर शिवरात के मेला दे खे जाए वाला लइकन के देखले तऽ निकल गइले। अठारह बरीस के भोला आज ले ना अइले।

शंकर त लइकाइएँ से बड़ा होनहार लइका रहले। पढ़े में त एतना तेज कि लोग दाँते अँगुरी काटे। बनारस जा के ज्योतिष पढ़ले। केहू के कुंडली देखते भूत-वर्तमान-भविष्य के भागवत बाँचे लागस। उनकर भविष्यवानी ब्रह्मा के लकीर हो जाय। ... लइका के लिलार ऊँच बाऽ। गुन आ ज्ञान के संयोग से ई बहुते आगे जाई, एही संयोग से शंकर के बिआह फूलमती से हो गइल।

फूलमती गुन, सहर के साथे सभ्यता-संस्कार में एक नम्मर। बेटा के त दू घर के आवा-जाही होला। बेटा से त दू घर के कुल-खानदान, मान-मर्यादा जुड़ल रहेला। फूलोमती दूनो घर के मान बढ़ावे आ चिंता करेऽ वाली नारी रहली। नारी के एही सब रूप से त धरती भारी बनल बाड़ी। नारी ना रहे त कवनो संस्कार ना रही। ना कवनो रीति-रिवाज रहीं आ ना आदमी के अस्तित्व। नारीए त सृजन ह, सिंगार ह, सेवा, समर्पण, सद्भावना आ संस्कारो त नारीए नू ह। नर त अपना मर्दाना भइला के दंभ में अपना के सिरिजे वाली नारीए के भूला जाला। नारी त ना नर के भूलावे, ना नारायण के। फूलोमती पति के परमेश्वर आ घर के मंदिर माने वाली नारी रहली।

पट्टीदारन के तेल-बेलई से आ सँवागी के कमी के कारण जुगुल चौबे के हिस्सा में ढेर जमीन ना आइल रहे। बाकीर जवन रहे, कम ना रहे। पट्टीदार लोग के पक्षपात के मलाल त रहबे करे, सँवागन के कमियों के मलाल रहे। भोला के बिलइलो के पीड़ा रहे आ तनी-तनी खुशी के कई-कई बरीस ले बाट जोहलो के पीड़ा रहे। शंकर के पढ़ाई आ गुनी

पतोह के अइला से जुगुल चौबे के अभाव भरल करेजा में नेह के भाव भरे लागल। घर के सँवर गइला के आह्लाद से मन मुस्काए लागल। अब उनकर दिन भजन में बीते। ज्ञान बटोरल आ ज्ञान बाँटल ऊ आपन धरम बना लिहले।

शंकर खातिर नौकरी के कागज आइल। पट्टीदारी में कई घरे चूल्हा ना बराइल त कई जने आके भेंटो-अँकवार कइलें। शत्रुओ मान लिहले कि शंकरवा तेज बा। बाकीर ऊ नौकरी करे से मना क दिहले। माई-बाप ढेर पीड़ा भोगले बाड़ें। अब त एह लोग के बूढ़उती के दँह भइल। अब त तनी ओह लोग के हाथ बँटावल जाव। जुगुल चौबे के समझवले, 'नौकरी काहे के करे के ह, दू पइसा कमाहीं खातिर नू? ...त तहनी के आशीर्वाद से दुअरवे पर लोग के कुडली पढ़ेब, पीड़ा दूर करे के उपाय बताएब। ...दू पइसा अइबो करी आ तहनीए लगे रहबो करेब।'

शंकर के माइयो साथ दिहली, 'देखीं जी, कुछू हो जाई त का ह, ...अब हम शंकर के अपना से दूर ना जाए देब।'

फूलमती त चाहते रहली। केंवाड़ी के ओते से कहली, 'सरकार के नोकर बनला से अच्छा बा कि अपने गुन से कमाइल जाव। ...ना केहू रोब जमाई, ना केहू आँख देखाई।'

सबके बात सुन के बुढ़ऊ मुँह सी लिहले। उनकरो सहिए बुझाइल कि अपने गुन के कमाई से ना केहू रोब जमाई, ना केहू आँख देखाई। सहिए बुझाइल कि आँखि के पुतरी, एगो लइका, अपना महतारी से त दूर ना रही। सहिए बुझाइल कि बेटा लगे रही त रोग-बेमारी में दवा-पानी त समय से भेंटा जाई। आ दोसर केऽ बड़ले बाऽ कि ओहसे संतान के सुख लिहल जाई।

नीम के नवका पौध के नीचे शंकर के आसन बनवले। शंकर रोज बिहाने दू घंटा आ साँझ के दू घंटा आसन जमावें। पीड़ा में तड़पत लोग के लोर पोंछा जाव त शंकर के करेजा जुड़ा जाव। बाबुजी से कहस, 'बाबुजी, नौकरी से बड़का धन त ई पुन्य बा।'

केहू के लइका नइखे होत त साफ-साफ कहानी बता देस। केहू के खेत में अन्न नइखे ऊपजत, केहू के बेमारी नइखे छूटत, केहू के जवान बेटा के हाथ नइखे पिअर होत, केहू केतनो कमाता बाकीर शय नइखे मिलत। शंकर एक-एक पीड़ा के अइसन उपाय बतावस कि सुने वाला के लागे कि ई सचहूँ छछात अवतार बाड़े। दोसरा के पीड़ा बुझे वाला, पालनहार। कई जाने के त ईहे ना बुझाव कि ई सब अक्षर के चमत्कार हऽ कि रेखा के कलाकारी। विधि के विधान हऽ कि एह बभना के जादू-टोना। आ हाऽऽ। हो न होऽ। बाभन जात बड़ा चालाक होले सों। ई पढ़ाई नइखे कइले, जादू-टोना सिखले बा। अरे मर्दवा, तब्बे नू नौकरी ना लागल्ह। ई टोनहाई के डिगरी पर कवन नौकरी? ...आ ई बबवा चालाकी से सबके मन में जन कल्याण आ गृहस्ती रक्षा खातिर त्याग के बात डाल के आपन दाल गलावताऽ। बस-बस। अब बुझाइल एकर चलबुधई।

लोग के मति के कृपा। शंकर के ज्योतिष-ज्ञान के लोग ना जाने का-का नाम देबे लागल। केहू खातिर ब्रह्मा के वरदान मिलल बा त केहू खातिर बबवा बड़ा जगता बा। केहू खातिर जीन के पूजा करेला तऽ केहू खातिर बरम के पूजेला। आदमी एगो सामाजिक प्राणी हऽ। समाज में किसिम-किसिम के लोग रहेला। किसिम-किसिम के विचार सुने के मिलेला। सबके गाड़ी एही तरे डगरेले। एही समाज में कुछ लोग अइसनो बाड़न कि अक्षरो-ज्ञान के अभाव में अपना अनुभव के दम पर चाणक्य के नीति के टक्कर देलन त कई जाने कथे-कहानी में खेती-किसानी के गीता सुना देलन। कई जने अइसनों बाड़े कि अपना अधबेसरा ज्ञान के गुमान में समाज के भ्रमित करे में कवनो कोर-कसर ना छोड़ेलन। आजुओ एह समाज में ढेर लोग बा जे ना गौरैया के चाल चली ना मोर के। ढेर लोग अइसन बा जे खिड़लिच के चाल पर लोटाए लागी। शंकरो खातिर धीरे-धीरे ई बात फइले लागल कि भले ऊ ज्योतिष पढ़ले होइहें, बाकीर टोनों में महारथ हासिल बा। एक बेर कवनो मेहरारू के देख लेस त ऊ आपन सुध भूला के उनका पाछे दँवरी करे लागी। भर नजर अगर कवनो पेड़ के देख लेस त हरिहर-हरिहर पेड़ खड़े जर जाई। बड़ा कलाकार बाड़े शंकर। बाझीन के परसौती हो जाला आ बहीर के कान खूल जाला। अरे आज अगर भोला रहते त बबवा के चमत्कार से सुनबो करते, बोलबो करते। बबवा से बैर ले के केहू चैन से नइखे रहि सकत। रामनरेश पट्टीदार हवन नू, डँडेर कटले त गोड़वे कटा गइल। केहू कहल कि सहीए ह, टोना-टोटका करे वाला निसंतानी रहेला, तबे नू आज पाँच साल भइल बाकीर जुगुल चौबे के दुआरी पँवरीया ना नचले सों।

शंकर के दुआर पर अब भीड़ त ढेर बढ़े लागल, बाकीर अब लोग ज्योतिष के ज्ञान खातिर कम, टोना-टोटका के उपाय खातिर ढेर आवे। शंकर के कपार चकराए लागल। का करें, कुछू ना बुझाव। सोचले कि चलऽ, हमरा ज्ञान के लोग जवन मन करे, बुझे, हमार गुन निखरते नू बा।

अब शंकर चाहे जुगुल चौबे, जेनहे जाव लोग, चाहें डेरा के, चाहें भाव से, लोग कुछ गेंठरी बान्हीए दे। कबो साग-तरकारी त कबो भुजा-भरी खातिर मकई-मटर। ना कुछ त एक घुँच्चा दूधवे ढरा जाव। संगत आ व्यवहार के प्रभाव आदमी पर त पड़बे करेला। खैरात खात-खात शंकरो परीक गइले। बिहाने उठते दिशा-फराकी हो के नदी में डुबकी लगावे चल देस। उगते सूरुज के साथे बड़ी देर ले गर्दन भर पानी में बइठ के प्रभु के गुणगान करें। एक बेर केहू देख लिहल तबसे त टोना के चर्चा में चार चाँद लाग

गइल। सभे समझे लागल कि ई बबवा रातभर नदी में बइठ के बरम जगावेला। ...खैर, नदी से नहा धो के बिहाने-बिहाने केहू के दुआर पर चाय के दूध खातिर जुम जास। लोग आदर से कम, बाकीर डर से ढेर, देइयो दे। बाद में त ई उनकर कुछ आदत बन गइल।

पचासो के उमीर में भी अपना के पट्टा बुझे वाला बाबूलाल व्यवहार में तनी टेंढ़ हवें। ऊ दूपाया-चौपाया, सबके एक्के लउरी हाँके ले। जबान के भाषा ना बुझे वाला के ऊ लठीए के भाषा समझावेले। चार गो गाय आ छव गो भैंस, ईहे उनके धन बा। रातो-दिन ओकनीए में लागल रहेले। नाद आ छाँटी से साँस मिलला पर चउवन के पगहा खोल के ले के वृत्त में चल दिहें। आज शंकर बिहाने-बिहाने बाबूलाल के दुआर पर जुमले। चौबे जी के देखते बाबूलाल के त बरमंडे जर गइल। पूछले, 'का बाबा, बड़ा देर से लोटा उठल बा? ...रउआ त होत भिनुसारे दिशा-फराकी से निपट लेनी। आज का बात ह?'

'आरे मर्दे, तूँ त जानतहीं होखब कि हम सब काम निपटा के चाय खातिर दूध के जोगाड़ में निकलेनी।'

'अच्छा! ...कव लीटर दूध चाहीं? ...थान से देब त चालीस रोपया, नाहीं त तीस रोपया।'

शंकर के त मुँहे बवा गइल। ऊ सोचे लगलन कि आज रास्ता भूला के कवनो दोसरा गाँव में त ना आ गइनी। बात बनावत कहलन, 'आरे नाहीं, हम त तहरा दुआर भइला जात रहनी हँ त तनी रूक गइली हँ। ...वइसे तहार हउ करीकी गइया दूध केतना देले?'

'आरे चौबे जी, ...तहरा के का बताई। जब दूध ना चाहीं त जल्दी से घरे जाई, ना त चायवा सेरा जाई। ...माँगे के भी ख आ पूछे गाँव के जामा?'

शंकर के तऽ बाउर लगबे कइल, सुनहूँ वाला लोग के बाउर लागल। चौबे जी त मुँह चोखा कइले चल गइलन। बाबूलाल के माथा चमके लागल कि आज बभनू के फोकट के दूध लेहला के आदत छूट जाई। बाबूलाल सबसे पहिले करीकीए गइया के दूहे ले, काहें कि ऊहे सबसे ढेर आ सबसे चोखहवा दूध देले। दूध का, मिसरी देले, मिसरी।

आज दूहे गइलन त थान छुअते गोड़ उठा दे। गोड़ो छनाइल, थनावलो गइल, बाकीर पता ना आज ओकरा का हो गइल कि घूँच्चा में एक छटाक दूध ना आइल। बाबूलाल के बुढ़ऊ बाप से ले के घर में मेहरारू ले उनका के लगली साँ खोबसे। का हो जाइत अगर एक पाव दूध देइए देत तऽ। अब भोगऽ। बबवा एक्के नजर से सगरो दूध जरा देहलस।

बाबूलाल के साथे के ई घटना माटी के तेल में आग नियर सगरो जवार में फइल गइल। लोग डेराए लागल। अब त कई जने होत फजीरे दुआर पर दूध पहुँचावे लागल लोग। बाबूलाल जइसन कई जने अब बैर निकाले के फिराक में पड़ गइल लोग। रोज दौव खेलल जाव, रोज जोर लगावल जाव बाकीर कवनो दाले ना गले।

शंकर त बस ओइसहीं कही देहले रहले। सोचले कि तनी कही के डेरवावल जाव, ना त गाय-गोरू के भाषा बुझे वाला ई बबूललवा एक्के लउरी सबके हाँकी। शंकर त कहले डेरवावे खातिर बाकीर अब उनकरे पर काल मेड़राए लागल। जब उनकर पट्टीदार लोग सुनल त करेजा फूला गइल। उहो सब लोग आगि में घीव डारे लागल लोग। पट्टीदार अइसन जीवे हवें साँ, जवन आपन जरल ना देखीहें बाकीर दोसरा के बनल जरूर देखिहे साँ।

फूलमती के दू दिन से खाली उल्टी होखे। कुछ खाए के मन ना करे। पेट में कुछ अँवड़ेरे। शंकर के माई त बुझ गइली। ऊ त मने मन उछलें आ भगवान से दसोनोह जोड़ें। शंकर ना मनले। मलीकाइन के अस्पताल ले गइल रहले। ओहीजा भीखम भेंटइले। गोड़ के घाव बड़का मुँह बनवले रहे बाकीर बहे ना। शंकर देखले त कहले, 'अरे मर्दे! दू बेर पथलचूर पीस के छापऽ, देखऽ सगरो मवाद बाहर क दी। ना चिरला के पीड़ा, ना टभकला के डर।'

भीखम बड़ा खुश भइले। काहें कि ऊ घउआ पर चीरा लगला से डेरास। खुशी के एह उछाह में आपन अंदेशा बतवले, 'बाबा, बबूललवा से सावधान रहेब। ऊ कहीं बोलावे त जाएब मत।'

शंकर अबहिन कुछ समझीए ना पवले कि कम्पाउण्डर आके बतवलन, 'चौबे जी, अब अपना पत्नी के तनी ढेर खेआल करेब। ... ई महतारी बने वाला बाड़ी।'

'काऽ!'

सुनतहीं भकुआ गइले। जइसे उनका चारु ओर के धरती नाचे-गावे लागल। जइसे ऊ हवा में उड़े लगले। जइसे ऊनका पर अमृत बरसे लागल। जइसे ऊ चमेली के पराग से नहाए लगले। घरे अइले त उनकर माई जुगुल चौबे के आँख में झाँक के मुसकुराए लगली। सभे सुनल आ सबके मन प्रसन्न हो गइल। आज साँझी के कीर्तन बइठल। आस-पड़ोस के सभे आइल। चनामृत खातिर दूध ले के बाबूलालो आइल रहले। मंडली के पुड़ी-तस्मई परोसाइल बाकीर केहू के बतावल ना गइल कि ई काहें होता। बुझे वाला लोग त बुझिए गइल। करते-धरत में ढेर रात हो गइल। सभे थकल-हारल रहे से जल्दीए सुत गइल। शंकर अबहिन भँगुआते रहले कि दुआरी पर केहू बड़ा करुणा के

विलापे लागग। शंकर निकलले त देखले कि केहू बूढ़ आदमी हाथ जोड़ले बा। ऊ चिन्ह ना पवलन। शायद केहू के घरे हितई आइल होइहें। पूछलन त पता चचल कि उनके जवान पतोह के पता ना का हो गइल बा कि बकऽ तिआ। गड़हा में पड़े वाला बिआ बाकीर तिजहरिया साग खोंटे गउवे, तबसे होसे में नइखे।

दोसर दिन आ दोसर बेमारी रही त शंकर ना जइते, बाकीर आज उनकरो मन चंचल बा। साथे चल दिहले। जुगुल चौबे पूछते रही गइले कि के हऽ? केकरा साथे जा तारऽ? बाकीर अब्बे अइला के बात कहि के चल दिहले। आज पंद्रह बरीस हो गइल, शंकर वापस ना अइले। ओह रातभर बुढ़ऊ चौबे के आँख बेटा के वापसी के इंतजारे में कटल। तबसे ऊहे दशा बाऽ। आँख में कबो नींदे ना आवेला।

ओह दिन त भिनसार होते चारू ओर हल्ला हो गइल कि शंकर घर छोड़ के भाग गइलन। महतारी अलगे डेकरें, मेहरारू के त चारो आर में कवनो आर ना लउके। दू दिन बाद नदी के किनारे फूलल शंकर के लाश मिलल। महतारी त देहीए छोड़ दिहली। बुढ़ऊ त करेजा के काठ क लिहले। फूलमती ओह दिने से पलगा गइली। सब गुन आ सब सभ्यता-संस्कार डेहरी पर धराऽ गइल। समय अइला पर बेटा के त जनम दिहली बाकीर ओकरा के देखे ना चाहें। नोच के खा जाए के चाहें। ओह छँउडी के कहीं छोड़ देस। कहीं पटक देस। ना ओकर देह-आंग करस, ना दूध पिआवस। ऊ रहे बड़ा भाग के बली। कवनो दशा में रहि के भी चंचल के कुछू ना बिगड़ल।

महतारी के त कवनो सुधे नइखे, से चंचल के दूध खातिर जुगुल बाबा एगो लाल गाय पोसले। ललकी गइया, बड़ा मर खइया, ओकर दूधवा बड़ा मीठइया। ...ओही गइया के परिवार आज ले चल आवता। फूलोमती चार साल बाद गुजर गइली। चंचल के त महतारी के असली धरम जुगुले चौबे निभवले आ गइए के दूध पिअवले। ओही गइया के जर से आजुओ एगो लाल गाय बिआ जवना के चरवाही से घरे लेआवे बुढ़ऊ लइकन के साथे जालन।

अब उनके केहू पर भरोसा नइखे। ना आदमी पर, ना भगवान पर। तबे तऽ, दिन-रात पूजा-भजन में रमल रहे वाला जुगुल बाबा अब रोजो मांस-मछरी खालन। केहू से ना बोलेलन। घरवो में जरूरते भर के। कुफुत काटल मन पत्थर हो गइल। ना कवनो प्रसन्नता के बहाना रहे आ कवनो दुख के चिंता। रोअला पर लोरे ना गीरे आ हँसला पर करेजे ना खिले। केतनो बिपत पड़ जाव, बुढ़ऊ खाली टुकूर-टुकूर देखस। उनका पर ना जेठी घाम के असर पड़े, ना माघी पाला के। सावन के झपसो में ऊ चभोरा जाएँ, तब्बो ना काँपें, ना कूदें।

अब ऊ जीए के कवनो आधारे ना बनवले। खाली साँस चलऽ ता तऽ जीअहीं के बा। ओह बुढ़ऊती में आपन चौबीस इंच वाला साइकिल के ठेलत ब्लॉक के बाजारे पहुँच जास आ देर रात गइला पर आवस। आवस त केहू के खेत से दू-चार गो ऊँख तुरले आवस। एक बेर ऊँख तुरे गइले त सगरो देह बनकवाछ लाग गइल। बिसबिसइला के पीड़ा में सगरो कपड़ा खोल के लगँटे घरे अइले, बाकीर मुँह से रामो-राम ना निकलल।

ओह दिन त अतिए हो गइल। बरसात के दिन। चंचल दुआर पर अकेले आँकुड मेचा खेलत रहे। पता ना कहवाँ से करइत साँप रेंगत आइल। खेल के सुर में चंचल के होसे ना रहल। लतरा गोड़ के अँगुठा में काट देहलस। चंचल चिलइली त जुगुल चौबे दउड़ले। साँप के जहर ऊपर ना चढ़े से छने भर में गँडासी उठवले आ ओकर अँगुठवा काट देहले। सभे डेराऽ गइल बाकीर चंचल त बच गइली।

ओही तरे एक बेर ललकी पगहा तुरा के बड़ा नचवलस। साँझ ले धावत-धावत जब हार गइल तऽ खूँटा पर आ के खड़ा हो गइल। बुढ़ऊ के बिख बरमंड पर चढ़ गइल। लाठीए-लाठी लगले गिरावे। सभे देखे त अचंभा करे। भीखम चिलइले, 'आरे बाबा, का बुढ़ऊती में पाप कर तानी! ...गइया मर जाई जी। ... गउहत्या के पाप ले के मरेब काऽ?'

चूड़ी बेंचे निकलल नगेसरी फुआ धरती पर थूकत कहलस, 'आरे, बड़ा कठकरेज हँउअन बुढ़ऊ।'

जुगुल चौबे नगेसरी के देखे लगलन। आज उनकर आँख भरल देख के सभे भकुआ गइल।

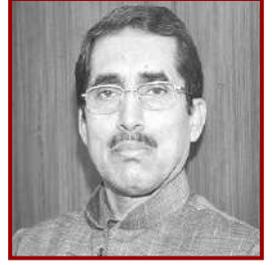
□□

(सन् 2005 में लिखाइल कहानी)

- तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर (उ. प्र.)
वर्तमान निवास : नई दिल्ली

लिखीं लिखाई, सीखीं सिखाई
भोजपुरी के मान बढ़ाई॥

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' के कविता में राष्ट्रियता



डॉ. सुनील कुमार पाठक

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' भोजपुरी के सुपरिचित रचनाकार हई। साहित्य के सगरी विधन के अपना ले खनी से समृद्ध करे में इहाँ के योगदान अविस्मरणीय बा। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संदर्भ ग्रंथ, कोश-निर्माण आदि के जरिये भोजपुरी-भारती के मंदिर के सजावे में कन्हैया बाबू के साहित्यिक सेवा के महत्वपूर्ण भूमिका रहल बिया। बाकिर साँच पूछल जाव तऽ उहाँ के काव्यात्मक अवदान आऊर सब रचनात्मक प्रयासन पर भारी पड़ल बा। 'माटी करे पुकार' उहाँ के रचल कविता-संग्रह तइयार तऽ हो चुकल रहे सन 1979 में बाकिर एकरा छप के आवे के सुयोग बनल सन 2020 में। एह संग्रह के 'भूमिका' सन 1979 में भोजपुरी आ हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डा. रामनाथ पाठक 'प्रणयी' जी लिखले रहनी बाकिर व्यवस्थित ढंग से एकर सम्पादन करके दिलीप कुमार जी सन 2020 में भोजपुरी साहित्य-संसार में ले अइनी।

'माटी कहे पुकार' जइसन कि शीर्षक से स्पष्ट बा एह संग्रह में कविवर कन्हैया प्रसाद सिंह के राष्ट्रप्रेम से भरल कवितन के अधिकता बा। एह में में देशप्रेम के अलावे प्रकृति-वर्णन, पर्व-त्योहार, प्रेम, दर्शन आदि से जुड़ल गीत-कविता बाड़ी सं। संग्रह के अंत में 15 गो गजल भी संकलित बा जवना में समय आ समाज के दर्द आ विसंगति, प्रेम-विरह के स्वर आउर सत्ता के शोषक-चरित्र के विरोध में आक्रोश के स्वर मुखर भइल बा।

भोजपुरी के राष्ट्रीय कविता में देशप्रेम के स्वर स्वाभाविक रूप में समाहित मिलेला। एह कविता में राष्ट्रीयता के जवन स्वर गुंजायमान बा ऊ कवनो 'वाद' से प्रभावित नइखे। अपना देश के माटी के प्रति प्रेम भोजपुरी मनई में स्वाभाविक रूप से देखे के मिलेला। अपना मातृभूमि आ मातृभाषा के प्रति प्रेम भोजपुरिया मनई के जीवन के अनुपम थाती हऽ जवना के सुगंधि ओकर रोम-रोम में व्याप्त बा ओकर संस्कारे में रचल-बसल बा। पश्चिम के 'राष्ट्रवाद' आ भारत के 'राष्ट्रीयता' भा 'राष्ट्रवाद' में मौलिक अन्तर बा। पश्चिमी दर्शन में जब राष्ट्रप्रेम के बात होले तऽ ओमे खाली अपने देश के हर कीमत पर विकास आ कल्याण के कोसिस प्रधान रहेले जबकि भारतीय राष्ट्रीयता के भावना में पूरा विश्व के कल्याण-कामना जुड़ल रहेले। 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्याः' के वैदिक ऋचा एह बात के गवाह बिया कि धरती हमार मतारी हई आ हमनीं इनकर संतान। ई बात हमनीं के

सांस्कृतिक बीजमंत्र के तौर पर स्वीकार कर लेले बानीं। बाकिर एह धरती के रक्षा आ सिंगार के प्रति सतत सजग-सचेत रहेवाला भारतीय कबो दोसर देश के संकट में डालेवाला काम ना करे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्'—सगरी दुनियाँ के धरती के बासिन्दा के हमनीं अपने परिवार के लोग लेखां समझिला। सभे सुखी रहो, सभे स्वस्थ-सानन्द रहो, सभकर कल्याण आ विकास होत रहो—ई हर भारतीय के मंगलकामना रहेला —

“सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।”

कन्हैया प्रसाद सिंह जी के कवितन में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता के स्वर प्रखर तऽ बा बाकिर ओमे कवनो तरे के संकीर्णता भा अनुदारता नइखे। कवि के राष्ट्रभक्ति महज देश के माटी से, इहाँ के आबो-हवा से, इहाँ के प्रकृति आ लोग से प्रेम तक सीमित नइखेय एह में राष्ट्रप्रेम के स्वरो आ यथार्थ के अनुभूति के प्रमुखता मिलल बा। कवि कन्हैया यथार्थ के भाव-भूमि पर खड़ा होके राष्ट्रदेवता के आराधन-पूजन कइले बाड़ें। मातृभूमि के प्रति कवि के धारणा बिलुक साफ बा—

“तन के दीप नेह के बाती
जरी देस खातिर दिन राती

हिन्दी, तमिल, बंगला, उड़िया सबके दुलारीं।”
कवि के राष्ट्रीयता के भावना में कातरता ना बलुक का क्रांति के स्वर सजोर बा। उनकर साफ कहनाम बा—

“शांतिदूत तऽ बन मगर तू कायर मत कहलाव
प्यासल तीर-धनुहिया बाटे अरजुन आगे आव
माया-ममता रहल कहाँ जब खुद कौरव तैयार बा
जाग उठ सब भारतवासी! हिमगिरि रहल पुकार बा।”

कवि देश खातिर सगरी आपसी टकराव आ बैर-भाव भुला देबे के निहोरा कर रहल बा। पड़ोसी चीन के बेवहार से क्षुब्ध कवि ठेठ भोजपुरिया लेखां निठाह ढंग से ओकरा के डेरवावहू में नइखे चूकल—

“लागी चमेटा त
निसा भुलाई
कहँवा से पड़ब तू
घरहूँ से जाई

भारत ह बड़ नहीं अहथिर धार बा
बरसाती नाला अस चलऽ मत फफाइल।”

भारतीय ज्ञान आ परम्परा के सागर के स्थिरता के गोहरावत कवि चीन के फफाइल चाल के निंदा करे में तनिको परहेज नइखे कइले। चीनी कुचाल से सावधान रहे के आह्वान करत कवि साफ-साफ कह रहल बा कि—

“बैरी बनल पड़ोसी भइया, हो जा अब तैयार।”

कवि के एह आगाही में खाली देशवासिये के तैयार हो जाये खातिर आह्वान नइखे बलुक एकरा में पड़ोसियो खातिर चेतावनी बा। कवि साफ कहत बा कि सहिष्णुता के परीक्षा खाली भारते काहे दी? ई सहिष्णुता कायरता ना मान लिहल जाव एह बदे बीच-बीच में देह झारत रहे के जरूरत बा। कवि अपना ‘भोजपुरिया’ नाम के कविता में देशवासी सब के सावधान कहत रहत बा—

“देसे ना रही त, रह के का करब?

करब गुलामी बे मउवत के मरब।

धन अउर धरती के मालिक ना रहब

बिना सहारा के धारा में बहब।।”

कवि के चिन्तन में कल्पना ले ज्यादा यथार्थ आ भावना ले ज्यादा विचार के प्रमुखता मिलल बा। दिवाली हर साल आवेले बाकिर अगर ओसे मनई के भीतरी अन्हरिया ना मिटे, हर घर—आँगन में अँजोर ना फँसे तऽ ओकरा अइले ना अइले का मतलब? दिवाली के बारे में कवि के धारणा बा—

“सुजी—मैदा—सुद्ध डालडा, किसमिस तनिक मलाई

दिआ—दिअर, तेल—पराका, हाय कहाँ से लाई

हाथ नचावत मुँह बजावत पत्नी बन के काली रे।।”

कवि जातीयता, धर्मान्धता, संकीर्णता, असमानता, शोसन आ सासत से उबियाके मानवता के सतपथ पर चलेके पुकार कर रहल बा—

“तकई के तकधीन, मकई के लावा।

के जइहें काशी, के जइहें काबा?

बीतल सतयुग द्वापर भागल।

त्रेता गइल सक्ति बा जागल।।

एजवा ईश्वरीय सत्ता ले ज्यादा मानवीय अस्तित्व आ प्रयासन में आस्था व्यक्त कइल कवि के अभीष्ट रहल बा। प्रकृति—चित्रणों में कवि के मन खूब रमल बा। यथा—

“उमड़ बदरिया आइल सजनी!

धरती के आकास लुभावे

इंद्रधनुष दिखला ललचावे

रस से भरल फुहार चलाके

अंग—अंग लागल गुदुरावे

ले संदेस प्यार के जुगनू

इधर उधर लहराइल सजनी।।”

भा—

“खत भेजे ना खुदही आवे!

रिमझिम—रिमझिम बरसे बदरा

सिहरावे पुरवा भिनसहरा
बिरहिन के नयनन के निनिया
काजर जइसे बह—बह जावे! ”

कवि के प्रकृति—वर्णन में चित्रात्मकता आ मानवीकरण बेजोड़ बा—

“बहुत दिनन पर मन में हमरा
सुधि के नाव चलल!

महकत साँसन के पुरवइया

चमकत चान चानी के नइया

बहकत बदरा आइल बरसल

मन के भाव गलल!

‘माटी करे पुकार’ के गीतन के प्रेम—वर्णन में मांसलता भा वायवीयता देखे के नइखे मिलत। एह प्रेम—वर्णन में कोमल भावना के गहिराई मर्म के छू देबे वाली बिया—

“जान मारे नयनवा के धार गोरिया!

देख तोहरा के फगुनी हवा रूक गइल

बाटे लाजे कंपल के कली झूक गइल

जब से लहरा के चललू डगर बीच में

थम्ह गइल बाटे नदिया के धार गोरिया।।”

कवि के भाव—प्रवणता कहीं—कहीं दार्शनिकता का ओर डेग बढ़ावत नजर आ रहल बिया—

“धीरे चलाव ना नाव माँझी!

लंगटे—उघारे नहात रहे इहँवें

कबहूँ अकेले भँटात रहे इहँवें

बचपन के हउवे ई ठाँव माँझी!

कन्हैया जी के एह गीत के देख के पं. सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ के गीत इयाद आ जात बा—

“बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु

पूछेगा सारा गाँव बंधु!

यह घाट वही जिस पर हँसकर

वह कभी नहाती थी धँसकर

पूछेगा सारा गाँव बंधु !।”

संग्रह में शामिल कन्हैया प्रसाद जी के गजल जिनिगी आ जमाना के धड़कन बनिके पाठकन के सामने आइल बाड़ी सं। एकनी में दर्द आ आहें ना मनई—मन पर युग के विडम्बना आ विसंगति के पड़ रहल दबाव आ ओकरा फलस्वरूप संवेदना में आ रहल गंजिनपन आ संकोचो के बहुविध प्रभाव देखे के मिलत बा। आदमी से हेरात जा रहल आदमीयत के देखिके कवि बेचैन बा। ओकर सीधा सवाल बा—

“काहे भइल बिमार आदमी बा आजकल?

खंडहर बनल उजार आदमी बा आजकल?

जुता लगा के माथ में, टोपी सजा के पाँव

भुतहा भइल इनार आदमी बा आजकल!”

अपना गजलो में शायर चूधरी कन्हैया ललल 'बशर'
आदलमी के शक्ति, गति आ मति के विश्वासू बाडूँ—
"भीड से पीट, भीड से अलगा
लाख चार्ही मगर ना धूइला।

एह संग्रह के शुरुआत भारत के राष्ट्रपिता महात्मा
गाँधी पर लिखल कवला से भइल बा। एह कवला के ई
विशेषता बा कि एमे गाँधी जी के जीवन—दर्शन के मर्म के
निचूड के रख दिहल गइल बा। गाँधी जी के कहनाम रहे कि
'गाँधीवाद' नाम के कवनू दर्शन नइखे।

उहाँ के कहत रहनीं कि उहाँ के जीवने उहाँ के
दर्शन मानल जाये के चार्ही। उहाँ के सत्य के साथ कवनू
प्रयोग पहिले खुद कइनीं फेर ओकरा के अपनावे खातिर
ओकर घाटा—नाफा बतावत आह्वान कहनीं। साध्य के प्राप्ति
में साधन के पवित्रतो के गाँधी जी जरूरी मनले रहनीं। चूधरी
कन्हैया प्रसाद जी के 'महात्मा गाँधी' शीर्षक कवला गाँधी
—दर्शन के समझे—बूझे खातिर एगो प्रमुख वैचारिक खुराक बा
जवना में भावना के अवलेह मिलल बा—
"चरखा मतलब ऊ मसीन जे
चले हाथ के बल से

कहे अहिंसा बलसाली तऽ
करीं नेह निरबल से
जे कहल पहिले ओके कर के देखलवल ना!
साँचे ईश्वर, सेवा तपस्या हऽ बतलवल ना!!

'माटी करे पुकार' में एकरा शीर्षक के अनुरूप कवला संकलित
बाड़ी सं जवनन में भोजपुरी माटी के सौन्दर्य आ सुरभि के
साथे—साथे ओकरा विरूपता आ जथारथो के वर्णन भइल बा।
'माटी के पुकार' में जीवन के पुकार शामिल साथही बा, जीवन
के संघर्ष आ चुनौतियनो के झलकावल गइल बा। एह संग्रह के
सगरी रचनन में कल्पना आ वायवीयता से अलग हटके जिनिगी
के धड़कन सुने के कोसिस कइल गइल बा। जिनिगी आ जमाना
के धड़कन जब कवनू माटी आ बानी के पुकार में शामिल होखे
तऽ ओ कवि के कालजयिता सहजे हासिल हो जाले। कालजीवी
कविये काजलयी होला। कन्हैया जी के कवला कालजीवी कवला
बिया, एहसे ओकर कवियो कालजयी बन गइल बा। □□

(साधार : मैना)

○ पुनाईचक, पटना, बिहार

परधानी

फेका कुदार अरूरी छूडा पलानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।

कहिया ले कोडबा टमाटर लगाय के
गोभी ले जईबा बजारे सजाय के
पातर रियाज करा बदला रहानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।

फाटल बेवाई बड़ा पीर देला
चुभे ला पऊआँ में चइती के देला
कइसे मिटी हाँथ घट्टा निसानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।

देखा बगलिये में बड़हन मकान बा
दुअरे सफारी खड़ा सीना तान बा
कब ले तू सइकिल से ढूइबा परानी
बलम हो लड़ जइता असों परधानी।

दाल भात चूखा मने नाही भावै
रोटी तरकारी हो जियरा जरावै
कई के जुगाड़ पिया बदला नेवानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।

लरिका पढ़त बाटै लईकी त जेठ बा
देखा दहेजवा कै केतना ठटेंग बा
आईल हव मौका जगा लीं जुहानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।

ढेर नाही खरचा बा बुद्धी से काम ला
राम राम कहि के गरे सबके थाम ला
घरे बोला के बिठावा सिरानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।

सबही हव आपन बेगाना ना कोई
सीखा धरै गोड़ तब काम होई
"योगी" अन्हरिया से होखी बिहानी
बलम हो लड़ी जइता असों परधानी।।

□□

○ चंदौली (उ. प्र.)



योगेंद्र शर्मा 'योगी'



श्रापदा में श्वशुर

डॉ. सुमन सिंह

“ए बंगड़ भइया, सबेरहीं-सबेरे काहें कपारे हाथ धय के बइठल हउवा हो। का भयल भाय बतावा...।”

गुटखा चुभलावत पिकू आके बंगड़ के बगल में धम्म से बइठ गइलन। बंगड़ आँख मूँद कवनों दुसरहीं लोक में विचरत रहलन। बंगड़ के चुप देख के पिकू चाय छानत साह जी ओरी ताक के बानी के मिसरी क मोहिनी चलवलन –

“ए भाई दुखी ! तनी दू भरुका इस्पेसल कड़क चाह पियावा भाय। ई ससुर कोरोनावा के चलते कूह देह में घुन पइस गइल जनात ह। टोला-महल्ला कुल सून-सपाट। सब आपन खिड़की दुआर बन क के अइसन लुकाइल ह कि का कहीं। घर –बन कुल घूम टहल आवा, कहीं कवनों रौनक नाहीं।... तोहरे हाथ क चाह पियले बीसन दिन हो गइल। कहवाँ रहला ह एतना दिन से ?... गाँवे-घरे कुल ठीक ह न?” पिकू अकेलहीं बोलत बरबरात रहलन बाकिर दुखी साह क अड़ी पहिली बार गुमसुम रहे।

“देखा भइया पिकू अब उधारी ना चली। चाह पिये के ह त पहिले उधारी चुकावा फिर ...।” साह जी क पुराना गाहक आ पिकू क खटपटिया गुरु पहिली बार बहुत गंभीर आ गमगीन दे खइलन। पिकू के उँहा के हवा में पहिली बेर कुछ असगुनाह बुझाइल आ मुँह क गुटखा तिताइल। गुटखा थूक के खटपटिया गुरु ओरी टकटकी बान्ह के पिकू सोकताइल पूछलन– “कवनों बात हो गइल का गुरु ! केकरे घरे का हो गइल ? देखा लोग हमार जीव बहुत घबरात ह ...।”

“एगो घरे क बात होय तब न बतावल जाय। इहवाँ त गली-गली काल के कटोरा में समाइल जात हऽ। गाँव-गाँव में मरन पड़ल ह। एतना लास देखलीं हम एह हपता भर में कि का कहीं। मुर्दा फूँके क लायन लगल ह। जेकरे ना सौंहर ह उ रेती में गाड़ देत ह, गंगा जी में फेंक के चल जात ह। काल त नचते ह केस खोलले बाकी अदिमी के अंदर क लालचो कम ना कराल भइल ह। आपदा में अवसर खूब भुनावल जात ह। दुखी साह क पच्चीस बरीस क जवान लइका आक्सीजन बिना तड़फड़ात चलि गइल। एम्बुलेंस वाला पाँच सौ के जगह पर आठ हजार केराया मंगलस। बेचारु केहुतरे रेक्सा पर लास लेके घाटे गइलन। ई त

भला हो बंगड़ क कि चंदा बटोर के अंतिम क्रिया करवलन। इनकर लइकी आ मेहरारूओ बेमारी के चपेट में आ गइल हईं। बंगड़ घरहीं पर उनहन लोगन के इलाज क जोगाड़ कइले हउवन। महादेव किरिपा करें दुखियन पर।” खटपटिया गुरु क बात ओरात-ओरात दुखी साह काँपे आ सिसके लगलन। हाथ से चाह क केतली छूट के फर्श पर गिर के छनछनात रहल। बंगड़ दउड़ के उनके अँकवार में भरि लिहलन। पिकू बंगड़ क त पहिलहीं से मुरीद रहलन बाकिर अब उनके प्रति गरब-गुमान से भर उठलन।

दउड़ के उनके अँकवार में भरि लिहलन। पिकू बंगड़ क त पहिलहीं से मुरीद रहलन बाकिर अब उनके प्रति गरब-गुमान से भर उठलन।

“बंगड़ भइया! हम जानत रहलीं ह कि तू बाबा बउरहवा क भेजल दूत हउवा। तोहरे नियन लोगन के रहते ई काशी कब्बो मुरदन क गाँव ना होई। बस भइया अब जवने राह पर तू तवने पर हम। तू उहर देखावत चला आ हम चलत चलीं। बस हमरे पान-गुटका क जोगाड़ क दिहा। एह महापात्र (पेट पर हाथ फेरत) के भरे बदे कुछ खरच-बरच क दिहा। मोबाइल रिचार्ज करा दिहा आ फटफटिया में पेट्रोल-पानी खातिर सौ दू सौ दे दिहा...।”

बंगड़ के अपने ओर क्रोध से घुइरत देख के पिकू अटक गइलन। बंगड़ उनके कान के लौ के चुटकी में भरले कितकिटात रहलन– “ससुर तू सागिर्दी करे चलल हउवे कि आपदा में अवसर तलासे बे ...आँय।”

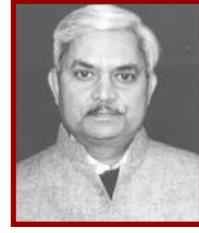
पिकू बंगड़ के चंगुल से छूटे के भरपूर कोशिश में रहलन। बंगड़ आ पिकू के एह चकल्लस से कुछ देर खातिर ही सही अड़ी चहक उठल। दुखी साह के मुरझाइल मुँह पर भी महीन मुस्कान देखाए लगल रहल।

□□

○ वाराणसी (उ.प्र.)

गजल

शिव कुमार पराग



भिनुसारे के बा कुल्हि लच्छन, राति कटी
अउँजाई मति, पोढ़ करीं मन, राति कटी ।

भित्तर से बहरे ले, जगरम चाहत बा
सोचि-समझि आ बदलीं जेहन, राति कटी ।

शोषित, पीड़ित, दलित, गरीब, चलीं मिलिके
फूकीं तुरुही, बाजे बाजन, राति कटी ।

अरराके गढ़ ढहि जइहें, देरी नइखे
सुस्ताईं जनि, दउरीं दन-दन, राति कटी ।

काहें रउवां थथमल बानीं, बढ़त चलीं
आई जी, जनता के शासन, राति कटी ।

आँखि मूँदि के केहू के मति पतिआई
भला-बुरा पर होखे चिंतन, राति कटी ।

कबले करब निहोरा, कबले गोड़ धरबि
आँखि खुली कब, लागी चटकन, राति कटी ।

परिवर्तन के फसिल अगर चाहत होखीं
अगिनबीज के डालीं बेहन, राति कटी ।

रउरे जाँगर पर सब राज करत बाटे
रउरे चहले हिली सिंगासन, राति कटी ।

□□

○ वाराणसी (उ.प्र.)

गीत



सत्य प्रकाश शुक्ल

○ भठहीं शुक्ल, कुशीनगर

मुखियई के मचि गइल हल्ला,
लागल शिकारी चाल में ।
लेके दउरल चीखना चखना,
माछ फँसावे जाल में ।।

पांच बरिस जे बाति ना पूछल,
नियराइल तऽ आइल बा ।
उ जालि लोग बूझि गइल तऽ,
नाया जालि बुनाइल बा ।।

कउआ भी अब बोले लागल,
मिठकी कोयल के बोली ।
सियरा भी अब रोवाँ झारि के,
पेन्हले बा साड़ी चोली ।।

रोवे बिलरिया किरिया खाले,
मुसवन की लगे जाके ।
लोरे झोर भइल बा पपनी,
छोहे छाह छाती फाटे ।।

हाथ जोरेले पाँव पड़ेले
पाँवे पाँव लोटा जाले ।
उठेले त हाथ दाबि के
बोतल मासु थमा जाले ।।

जवन सेठ जेतने बा लूटले,
फेरु लूटे ऊ आवता ।
दूसर के भी जगल जवानी,
लूटे खातिर धावता ।।

बस चुनाव ले सभे बा आपन,
जहिया वोट डरा जाई ।
जइसे ही ई मोहर लगा दी,
मछरी रेति हता जाई ।।

सोचि समुझि के मोहर लगइह,
पइसा पर जो बिका जइबऽ ।
अबहीं का तू रोअले बाड़ै,
पांच बरिस फेरु रोइबऽ ।।

□□

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक

'हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज'

द्वारा वर्ष 2020 के लिए पुरस्कृत



भिखारी ठाकुर
भोजपुरी सम्मान
एक लाख रुपये



जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

सर्वभाषा ट्रस्ट की ओर से *हार्दिक बधाई*



Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

सर्वोपयोगी वास्तुवास्तु कंसाप

FREEHOLD PLOTS

2 BHK VILLA

FREE HOLD PLOTS

4.9

16.99

VILLAS

FARM HOUSE

लाख से शुरू

लाख से शुरू

बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

www.sarvbhashatrust.com | sbhashatrust@gmail.com | +91-8178695606

CompuNet Solution
CNS
Network Services

Service

AMC

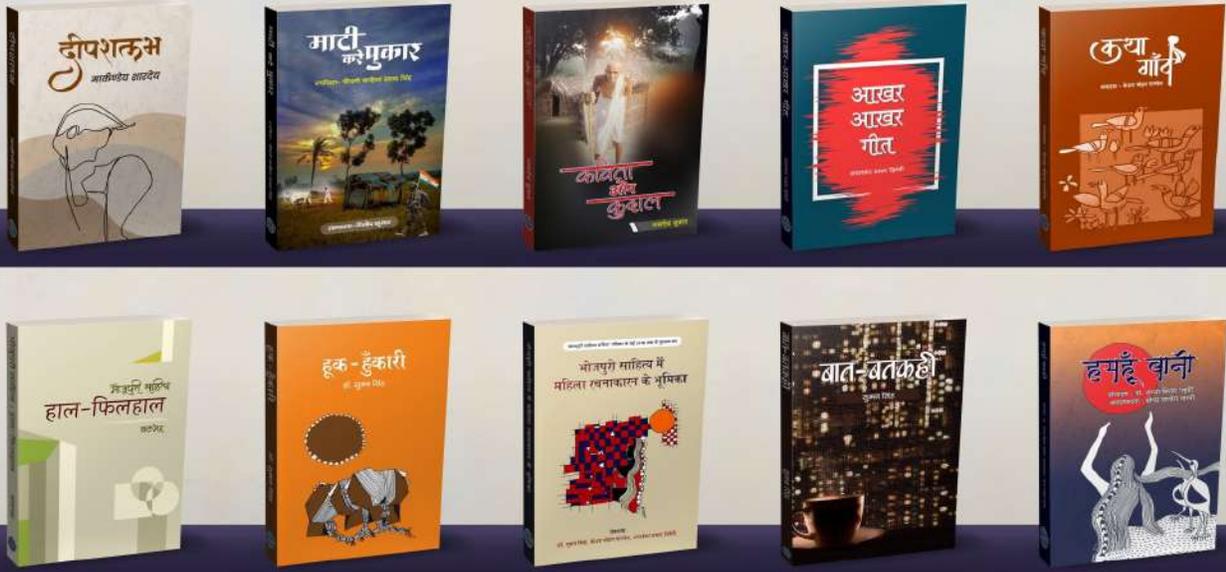


Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता / 47 / मई - 2021



सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब



किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606



भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600

चार बरिस : 2100

आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या - 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्यता ले सकेनी ।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी ।